Language L.08

HINDI

مركز المعلومات الإسلامي
Islamic Information Center
للتعريف بالإسلام

Version Date: 2025

Part of the

ISLAMIC e-LIBRARY

Learn more about Islam with our informative and educational materials, translated to over 50+ languages

@islamicicdxb

CONTENTS

इस्लाम का परिचय

मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का परिचय ।

ईश्वर (माबूद) का अर्थ इस्लाम में

कुर्आन

जीवन का उद्देश्य क्या है?

इस्लाम के बारे में गलतफहमियाँ

इस्लाम में महिलाओं के अधिकार

इस्लाम के पाँच स्तंभ हैं।

इस्लाम धर्म क्या है ?

कुर्आन के वैज्ञानिक चमत्कार

इस्लाम में मौत और उसके बाद का जीवन

इस्लाम का परिचय

HINDI (01/11) نبذة عن الإسلام FREE COPY

एक व्यावहारिक और संतुलित जीवनशैली

ईश्वर के साथ एक घनिष्ठ और सीधा रिश्ता

ईश्वर की एक सही और स्पष्ट समझ

एक ऐसा संदेश जो हर समय और हर जगह मान्य हो

Dar Al Ber Society www.daralber.ae

الإمارات THE EMIRATES

Your Path To Peace..

مركز المعلومات الإسلامي
Islamic Information Center
للتعريف بالإسلام

تصريح رقم: (2017/139)

دائرة الشؤون الإسلامية والعمل الخيري
Islamic Affairs & Charitable Activities Department

www.islamicic.com

CONTENTS

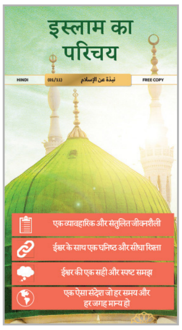

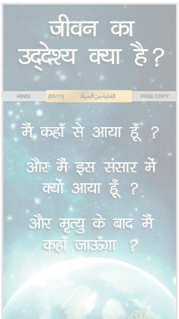

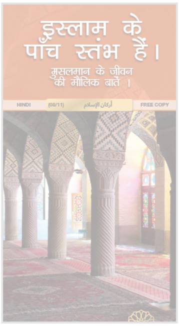

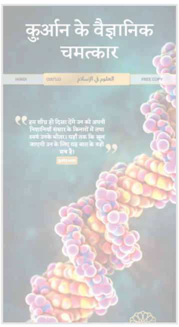

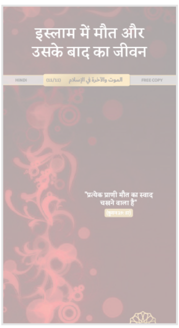

इस्लाम क्या है?

इस्लाम का अर्थ है एक सच्चे ईश्वर (अरबी में "अल्लाह") पर विश्वास करना और केवल उसी की पूजा करना, तथा पैगंबर मुहम्मद (उन पर शांति हो) को उनके अंतिम दूत के रूप में मानना।

लगभग 4 में से 1 व्यक्ति (23%) मुसलमान है—2 अरब से ज़्यादा मुसलमान।

इस्लाम के अनुयायियों को मुसलमान कहा जाता है, और वे किसी भी जातीय या जातीय पृष्ठभूमि से आ सकते हैं।

आस्था और विश्वास:

ईश्वर हमें अपनी निशानियों के ज़रिए उस पर विश्वास करने के लिए बुलाता है, और इस ज्ञान को अपनी ज़िम्मेदारी का हिस्सा बनाता है। यह इस जीवन की परीक्षा का एक हिस्सा है। सही दिशा के बिना, कोई भी जानकारी किसी व्यक्ति को आस्तिक नहीं बना सकती।

✓	✗
वस्तुनिष्ठता और खुला मन	विश्वास न करने की पूर्वकल्पित बाधाएँ/गलत धारणाएँ
विनम्रता और ईमानदारी	अभिमान और अहंकार
अपने उद्देश्य के बारे में चिंतन	केवल भौतिक संसार पर ध्यान केंद्रित करना
ईश्वर के संकेतों के प्रति ग्रहणशील होना	हर चीज़ को व्यर्थ समझना।

पहला कारण: ब्रह्मांड की शुरुआत

ईश्वर में विश्वास करने का पहला कारण ब्रह्मांड की उत्पत्ति पर विचार करने से संबंधित है।

ब्रह्मांड कैसे अस्तित्व में आया?

- ✗ क्या यह शून्य से आया? कुछ भी शून्य से नहीं आता। इसलिए, बिल्कुल नहीं।
- ✗ क्या इसने खुद को बनाया? नहीं, यह अतार्किक है। यह ऐसा है जैसे कहें कि एक माँ ने खुद को जन्म दिया।
- ✗ क्या यह हमेशा से अस्तित्व में था? नहीं, आधुनिक विज्ञान इस निष्कर्ष पर पहुँचा है कि ब्रह्मांड शाश्वत नहीं है और इसकी कोई शुरुआत थी।
- ✓ क्या इसे बनाया गया था? हाँ। मुसलमानों का मानना है कि ब्रह्मांड के बाहर किसी चीज़ ने इसे बनाया है— और वह सृष्टिकर्ता ईश्वर है।

लेकिन भगवान को किसने बनाया?

ईश्वर की रचना नहीं हुई। ब्रह्मांड और बाकी सृष्टि के विपरीत, ईश्वर प्रथम है, जिसके पहले कुछ भी नहीं था, और अंतिम है, जिसके बाद कुछ भी नहीं है।

CONTENTS

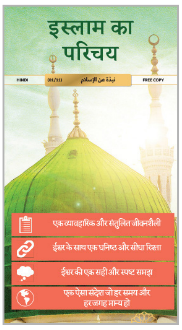

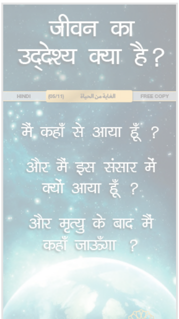

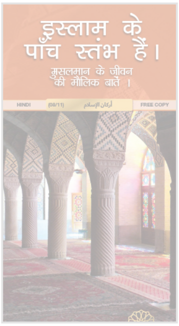

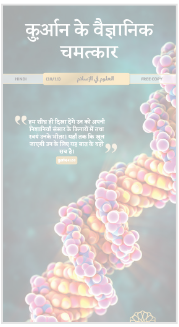

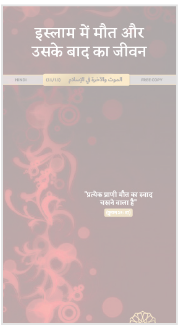

दूसरा कारण: ब्रह्मांड की सटीकता

ईश्वर में विश्वास करने का एक और सरल कारण निम्नलिखित तर्क का उपयोग करके ब्रह्मांड के क्रम पर विचार करना है:

1. कोई भी व्यवस्थित चीज़ ज्ञान के अस्तित्व की ओर इशारा करती है।
2. हमारा सौरमंडल अत्यंत व्यवस्थित है, जिसमें जटिल प्रणालियाँ, नियम और व्यवस्था के पैटर्न हैं।
3. हमारे ब्रह्मांड की सटीकता सृष्टिकर्ता के ज्ञान की ओर इशारा करती है!

ब्रह्मांड की कई विशेषताएँ स्पष्ट रूप से दर्शाती हैं कि इसे जीवन के लिए विशेष रूप से डिज़ाइन किया गया है। अगर ये माप वर्तमान से थोड़े भी भिन्न होते, तो जीवन संभव नहीं होता। उदाहरणों में शामिल हैं:

» ओज़ोन परत

» पृथ्वी की पपड़ी की मोटाई

» हवा में ऑक्सीजन का प्रतिशत

» सूर्य से दूरी

» सूर्य, पृथ्वी और चंद्रमा का सापेक्ष आकार

क्या इतना विशाल और जटिल ब्रह्मांड ईश्वरीय कृपा के बिना, संयोगवश अस्तित्व में आ सकता था? यह ध्यान देने योग्य है कि इस्लाम वैज्ञानिक खोज और चिंतन को प्रोत्साहित करता है। विज्ञान की भूमिका हमें ईश्वर द्वारा अपनी सृष्टि में रखे गए अनेक स्पष्ट संकेतों को समझने और उसकी शक्ति और बुद्धि की सराहना करने में मदद करती है।

तीसरा कारण: रहस्योद्घाटन - क़ुर्आन

क़ुर्आन ईश्वर के अस्तित्व का एक सशक्त प्रमाण है, जो अपनी शैली, ज्ञान, मार्गदर्शन, वाक्पटुता और पाठक को आकर्षित करने के अनूठे तरीके में अद्वितीय है।

» कोई त्रुटि या विरोधाभास नहीं।

» ईश्वर का स्पष्ट और सटीक वर्णन।

» अरबी भाषा की सुंदरता का शिखर है।

» यह पैगम्बर मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) पर अवतरित हुआ, जो अनपढ़ थे।

» संरक्षित - 1400 वर्षों से अधिक समय से कोई परिवर्तन नहीं

» मानव व्यवहार पर गहन अंतर्दृष्टि

» लाखों लोगों द्वारा कंठस्थ

» उस समय के लोगों के लिए अज्ञात वैज्ञानिक तथ्य शामिल हैं।

> "और यक़ीन करने वालों के लिए तो धरती में बहुत सी निशानियाँ हैं। और खुद तुम्हारे अस्तित्व (वजूद) में भी, तो क्या तुम नहीं देखते हो।"
>
> क़ुर्आन 51 :20-21

CONTENTS

ईश्वर कौन है?

इस्लाम की सबसे महत्वपूर्ण सुन्दरता यह है कि यह बिना किसी समझौते के ईश्वर की पूर्ण पूर्णता, महानता और एकत्व में विश्वास करता है।

» ईश्वर एक और अद्वितीय है, और उसका कोई समान, साझेदार या संतान नहीं है।

» सर्वशक्तिमान ईश्वर सभी प्रकार की पूजा के हकदार है - प्रत्यक्ष और अनन्य रूप से (बिना किसी मध्यस्थ के)।

» परमेश्वर पूर्ण है और उसमें कोई दोष या कमज़ोरी नहीं है।

» परम दयालु, परम कृपालु परमेश्वर जानता है कि हम परिपूर्ण नहीं हैं और हम गलतियाँ नहीं करते, लेकिन महत्वपूर्ण बात यह है कि हम हमेशा अपनी गलतियों को स्वीकार करें और ईमानदारी से क्षमा मांगें।

» ईश्वर अपनी सृष्टि में निवास नहीं करता, न ही अन्य लोग उसके दिव्य गुणों में भागीदार होते हैं।

इस्लाम में ईश्वर की अवधारणा को समझने का प्रयास करते समय, ईसा मसीह के स्थान पर चर्चा करना महत्वपूर्ण है, क्योंकि उनके स्वरूप के बारे में भ्रम और सामान्य दावे मौजूद हैं।

इस्लाम में हम ईसा को एक पैगम्बर और ईश्वर का एक महान दूत मानते हैं, लेकिन मुसलमान उनकी पूजा नहीं करते। क्यों कि इबादत केवल परमेश्वर के लिए है, जिसने यीशु को और जो कुछ भी अस्तित्व में है उन सब को पैदा किया है।

इस लिए, यह विश्वास कि ईसा मसीह ईश्वर हैं, ईश्वर के पुत्र हैं, या त्रिदेव का हिस्सा हैं, स्पष्ट रूप से इस्लाम में ईश्वर की स्पष्ट शिक्षाओं के विपरीत है।

यदि यीशु परमेश्वर हैं, तो वह किससे प्रार्थना कर रहे थे?

ईसाई धर्म की शिक्षाओं में ऐसे कई उदाहरण हैं जहाँ यीशु ऐसे बोलते और व्यवहार करते थे मानो ईश्वर उनसे अलग कोई सत्ता (या शरीर) हो। उदाहरण के लिए, यीशु ईश्वर से प्रार्थना करते हैं।

परमेश्वर पूर्ण और अपूर्ण दोनों कैसे हो सकता है?

यीशु का जन्म हुआ, उन्होंने खाया, सोया, और उनका ज्ञान सीमित था - वे सभी गुण जो ईश्वर के अनुरूप नहीं हैं। ईश्वर में पूर्णता के गुण हैं, जबकि मनुष्य में इसके विपरीत है।

"परमेश्वर का पुत्र" शब्द का वास्तव में क्या अर्थ है?

हम पाते हैं कि "परमेश्वर का पुत्र" शब्द का प्रयोग पुरानी बाइबल भाषाओं में प्रतीकात्मक रूप से किसी ऐसे व्यक्ति के लिए किया जाता है जो कई लोगों के लिए "अच्छा" है - और यह सिर्फ़ यीशु तक ही सीमित नहीं है। परमेश्वर का कोई भौतिक, वास्तविक पुत्र नहीं है।

यदि ईश्वर कुछ भी करने में सक्षम है, तो वह मनुष्य क्यों नहीं बन सकता?

परमेश्वर सदैव पूर्णता के गुणों को सुरक्षित रखता है और ऐसा कुछ नहीं करता जिससे उन पूर्णता को हानि पहुँचे। परिभाषा के अनुसार, 'ईश्वर' अदिव्य कार्य नहीं करता। इसलिए, यदि ईश्वर मनुष्य बन जाए और मानवीय गुण धारण कर ले, तो वह अनिवार्यतः ईश्वर नहीं रहेगा।

CONTENTS

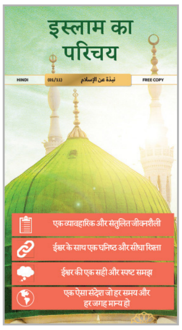

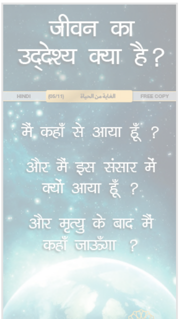

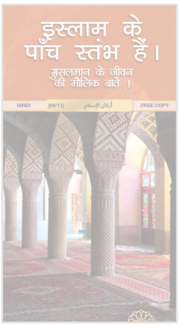

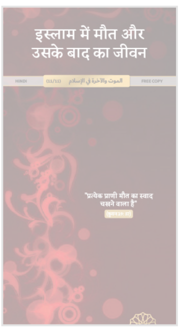

आदम, नूह, अब्राहम, मूसा, ईसा, मुहम्मद और अन्य कई नबियों और रसूलों ने—उन सभी पर शांति हो—एक ईश्वर की अवधारणा पर ज़ोर दिया। उन्होंने झूठे देवताओं और मान्यताओं को नकारा, ईश्वर की आराधना कैसे करें, इसकी व्याख्या की और धार्मिकता और अच्छे चरित्र के उदाहरण प्रस्तुत किए। उन्होंने आज्ञाकारिता के प्रतिफल (स्वर्ग) का वर्णन किया और अवज्ञा की सज़ा (नरक) की चेतावनी दी।

ईश्वर ने इतिहास में हर राष्ट्र में एक ही महान संदेश के साथ पैगम्बर भेजे हैं—एक ईश्वर की उपासना करो। हालाँकि मुसलमान सभी पैगम्बरों से प्रेम और सम्मान करते हैं, लेकिन वे उनकी पूजा नहीं करते या उन्हें ईश्वरत्व नहीं देते, क्योंकि ईश्वरत्व केवल ईश्वर का है।

जीवन का उद्देश्य

बुद्धिमान परमेश्वर ने हमें लक्ष्यहीन भटकने या सिर्फ़ अपनी मूल प्रवृत्तियों और इच्छाओं को पूरा करने के लिए नहीं बनाया है। लेकिन हमारा लक्ष्य एक उच्चतर है - ईश्वर पर विश्वास करना और केवल उसकी इबादत करना, तथा उसके नियमों के अनुसार जीवन जीना। यह मार्गदर्शन सभी पहलुओं में सुखी और सफल जीवन का कारण है।

परमेश्वर ने अपनी असीम बुद्धि से ही हमें बनाया है और हमें उसे जानने, अपने जीवन का अनुभव करने, और अपने स्वयं के चुनाव करने का अवसर दिया है।

इस्लाम एक संपूर्ण जीवन-पद्धति है, जो मुसलमानों को संतुलित, विनम्र और समाज में योगदान देने वाले सदस्य बनना सिखाती है। इस्लाम में इबादत की अवधारणा में केवल ईश्वर से प्रार्थना और प्रार्थना ही शामिल नहीं है। बल्कि, यह एक व्यापक परिभाषा है जिसमें ईश्वर को प्रसन्न करने वाला कोई भी कार्य शामिल है।

उदाहरणों में शामिल हैं:

- हलाल जीविका कमाएँ
- अन्याय का विरोध करना
- अनाथों की देखभाल करना
- पर्यावरण की रक्षा करना
- धैर्य और विनम्रता
- समुदाय की सेवा करना
- माता-पिता का सम्मान करना
- न्याय के लिए खड़ा होना
- पड़ोसियों के प्रति दयालु होना
- ईश्वर का भय मानना
- अपने परिवार का भरण-पोषण करना
- ईमानदारी

पूजा-अर्चना के लिए ईश्वर को प्रसन्न करने का सच्चा इरादा आवश्यक है और इसे इस्लामी दिशानिर्देशों के अनुसार सही ढंग से किया जाना चाहिए।

CONTENTS

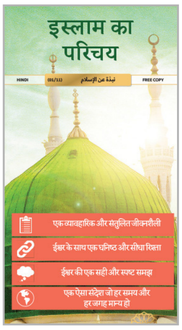

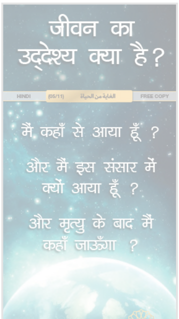

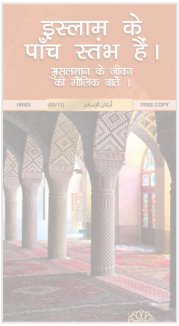

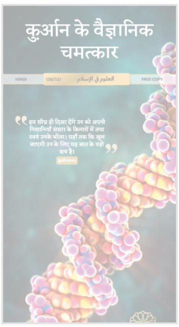

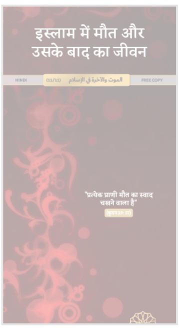

इस्लाम महिलाओं के बारे में क्या कहता है?

इस्लाम में महिलाओं को सर्वोच्च सम्मान प्राप्त है। उसके साथ प्यार, आदर और सम्मान से व्यवहार किया जाना चाहिए। वे पुरुषों की बहनें हैं और इस वास्तविकता को अन्याय या उत्पीड़न से नहीं बदला जा सकता।

आतंकवाद:

इस्लाम धर्म की परवाह किए बिना निर्दोष लोगों को निशाना बनाने की मनाही करता है और उसे अपराध मानता है। इस्लाम में लड़ाई केवल नेक और वैध उद्देश्यों के लिए ही जायज़ है ताकि समाज की रक्षा की जा सके, अन्याय को फैलने से रोका जा सके और न्याय को बढ़ावा दिया जा सके।

हलाल खाद्य पदार्थ:

हलाल खाद्य पदार्थ वे हैं जिन्हें मुसलमानों को खाने की अनुमति है। मांस और मुर्गी का वध मानवीय तरीके से किया जाना चाहिए, जिससे पीड़ा कम से कम हो। और वध के दौरान परमेश्वर का नाम अवश्य लिया जाना चाहिए।

विकास:

परमेश्वर ने प्रथम मानव, आदम को उसके अंतिम रूप में बनाया - उन्नत वानरों से धीरे-धीरे विकसित होने के विपरीत विज्ञान के माध्यम से इसकी सीधे पुष्टि या खंडन नहीं किया जा सकता क्योंकि यह एक अनोखी ऐतिहासिक घटना (चमत्कार) थी। इसलिए, यह प्रायोगिक विज्ञान अनुसंधान के दायरे में नहीं आता है।

HOTLINE
+971 56 204 2045
islamicicdxb
islamicic.com info@islamicic.com +971 4 355 5223
DOWNLOAD HINDI FLYERS
www.iicdxb.com/hindi

CONTENTS

इस्लाम का परिचय

मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का परिचय ।

ईश्वर (माबूद) का अर्थ इस्लाम में

कुर्आन

जीवन का उद्देश्य क्या है?

इस्लाम के बारे में गलतफहमियाँ

इस्लाम में महिलाओं के अधिकार

इस्लाम के पाँच स्तंभ हैं।

इस्लाम धर्म क्या है ?

कुर्आन के वैज्ञानिक चमत्कार

इस्लाम में मौत और उसके बाद का जीवन

मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का परिचय ।

HINDI (02/11) النبي محمد عليه الصلاة والسلام FREE COPY

आप इस व्यक्ति के बारे में अवश्य जानिए ।

आप पैगाम्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पवित्र जीवन के महत्तवपूर्ण बातों को जानिए ।

جمعية دار البر
Dar Al Ber Society
www.daralber.ae

الإمارات
THE EMIRATES

Your Path To Peace..

مركز المعلومات الإسلامي
Islamic Information Center
للتعريف بالإسلام

تصريح رقم:
(2017/139)

دائرة الشؤون الإسلامية والعمل الخيري
Islamic Affairs & Charitable Activities Department

www.islamicic.com

CONTENTS

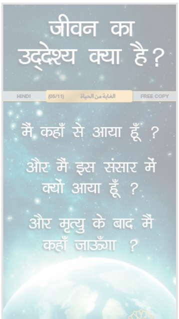

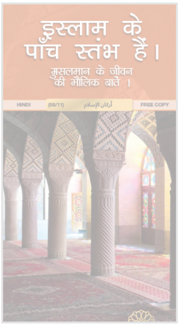

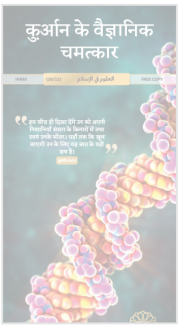

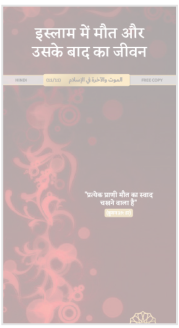

मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कौन हैं ?

मुसलमान इस बात पर ईमान रखते हैं कि मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अवतारों के उस लम्बे क्रम की अंतिम और सब से महान कड़ी हैं जिन को अल्लाह तआला (ईश्वर) ने इस लिए भेजा कि आप लोगों को केवल एक अल्लाह (ईश्वर) की पूजा के लिए बुलाएँ और यह क्रम आदम अलैहिस्सलाम से प्रारंभ होकर नूह, इब्राहीम, इसमाईल, इसहाक, याकूब, दाऊद और सुलैमान अलैहिस्सलाम से होते हुए आप की पवित्र व्यक्तित्व पर समाप्त हो जाता है ।

> निश्चित रूप से तुम्हारे लिए रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम में सर्वश्रेष्ठ आदर्श मौजूद है, हर उस व्यक्ति के लिए जो अल्लाह तआला से मिलने और प्रलय (क़यामत) के दिन पर विश्वास (ईमान) रखता है और अपने ईश्वर को अधिक से अधिक याद करता है ।
> (अल-अहज़ाब 33:21)

और मुसलमान उस अपरिवर्तित तौरात पर भी आस्था रखते हैं जो मूसा अलैहिस्सलाम पर अवतरित हुई और अपरिवर्तित इंजील पर भी मुसलमान आस्था रखते हैं जो ईसा अलैहिस्सलाम पर अवतरित हुई ।

और मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर कुर्आन उतारा गया ताकि लोगों से आप वर्णन कर दें जो उन की ओर उतारा गया है ताकि वह लोग संयम धारण कर सके ।

उम्मुलमोमेनीन आईशा रजीअल्लाहुअन्हा से पूछा गया कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चरित्र कैसे थे ? तो आप ने उत्तर दिया कि आपका चरित्र कुर्आन था । अर्थात आप कुर्आन की शिक्षाओं को अपनी दिन-रात के जीवन में व्यवहारिक रूप से उसका पालन करते थे ।

अगले पृष्ठ पर हम इस बात का उल्लेख करेंगे कि किस तरह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कुर्आन की शिक्षा को व्यवहारिक रूप से पालन करते थे ।

दयावान अवतार (रसूल)

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लोगों को केवल नमाज़, रोज़ा और ज़कात (दानपुण्य) ही की निमंत्रण नहीं देते थे बल्कि उन्हें यह भी सिखाते थे कि लोगों के साथ व्यवहार करते समय मनुष्य का ईमान स्पष्ट होना चाहिए ।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वर्णन किया : " कि तुम में सर्वश्रेष्ठ मनुष्य वह है जिस के चरित्र अच्छे हों " ।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अनगिनत आदेश इस बारे में मौजूद हैं कि ईमान का कर्म से गहरा और मज़बूत संबंध है ।

> " और हम ने आप को पूरी दुनियाँ वालों के लिए दयावान बना कर ही भेजा है " ।
> (अल-अम्बिया 212222222107)

उदाहरण के लिए रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह आदेश : " कि जो मनुष्य अल्लाह (ईश्वर) और कयामत के दिन पर विश्वास रखता हो तो उस को चाहिए कि अपने पड़ोसी को कष्ट न दे, और जो अल्लाह और कयामत के दिन पर विश्वास रखता हो तो उसे अपने अतिथियों का सम्मान करना चाहिए, और जो मनुष्य अल्लाह और कयामत के दिन पर विश्वास रखता हो तो उस को चाहिए कि अच्छी बात कहे वरना शांत रहे" ।

CONTENTS

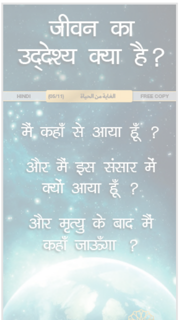

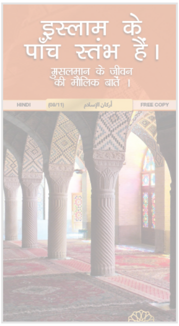

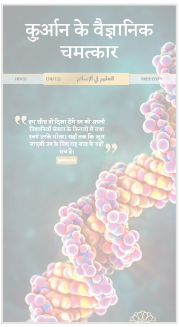

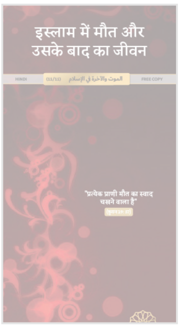

अंतिम रसूल मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मनुष्य को आपस में दया करना और एक दूसरे का आदर करना सिखाया है । मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वर्णन किया : " जो दया नहीं करता उस पर भी दया नहीं किया जाता" ।

और एक दूसरे कथन में है कि कुछ मित्रों ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहा कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दुआ कर दें कि अल्लाह तआला अधर्मियों (मुश्रिकों) पर अपना प्रकोप भेज दे, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वर्णन किया : " मैं अभिशाप करने वाला बना कर नहीं भेजा गया हूँ बल्कि मुझे तो दयालु बना कर भेजा गया है " ।

माफी (क्षमा)

मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लोगों में सब से अधिक क्षमा करने वाले (क्षमाशील) और सब से पवित्र हृदय वाले थे, और मनुष्य आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जितना अधिक कष्ट देता आपका धैर्य उतना ही बढ़ता जाता ।

मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सब से अधिक माफ करने वाले (क्षमाशील) थे विशेषतः उस समय जब आप ही की बात चलती और गर्दनें आपके सामने झुकी हुई होतीं ।

अल्लाह तआला का आदेश है : " बल्कि क्षमा कर देना चाहिए, क्या तुम नहीं चाहते कि अल्लाह तआला (ईश्वर) तुम्हारे दोष को क्षमा कर दे" ।
(अल-नूर 24:22)

मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमेशा क्षमा से काम लेते, कभी भी किसी के साथ अत्याचार व दुर्व्यवहार नहीं की और न ही आप किसी के साथ अत्याचार किया, आप क्षमा में श्रेष्ठ आदर्श थे और अल्लाह के आदेश का हमेशा पालन करते थे ।

" आप क्षमा को व्यवहार में लाएँ अच्छे कार्य की शिक्षा दें और मूर्खों से एक किनारा हो जाएँ" । (सुरतुल–आराफ : 199)

समानता

आने वाली हदीसों में अल्लाह के अवतार सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मानवता को इस बात की शिक्षा दे रहे हैं कि किस तरह सभी मनुष्य अल्लाह (ईश्वर) की दृष्टि में समान हैं ।

मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वर्णन किया : "निःसंदेह तुम्हारे पिता आदम अलैहिस्सलाम हैं और आदम मिट्टी से बने हैं, किसी अरबी को किसी अजमी (गैर अरबी) पर प्राथमिकता और वरीयता नहीं और न ही किसी काले को गोरे पर,
हाँ मगर संयम (तकवा) के द्वारा" ।

और मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह भी वर्णन किया है : "कि अल्लाह तआला तुम्हारे रूपों और तुम्हारे संपत्ति को नहीं देखता, बल्कि वह तुम्हारे दिलों और कर्मों को देखता है " ।

" अल्लाह के निकट तुम सब में सब से अधिक सम्मानित व्यक्ति वह है जो सब से अधिक डरने वाला है" ।
(सुरतुल–हुजरात 49:13)

एक कथन में है कि नबी सलल्लाहु अलैहि व सल्लम के एक मित्र ने दूसरे मित्र को बुरे उपाधी से यह कह कर बुलाया : "ऐ काले–कलूटे के बेटे ! तो नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस बात पर क्रुद्ध हो गए और आपने उस मित्र से कहा : " कि तुमने इस की माँ को गाली दी है, और तुम ऐसे मनुष्य हो जिसमें असभ्यता अभी भी बाकी है" ।

CONTENTS

दया और माफी

मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अच्छी आदत यह थी कि बुराई का बदला बुराई से नहीं देते थे बल्कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दया और माफी से काम लेते उन सब के साथ जिसने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ जुल्म एवं अत्याचार किया ।

इस्लामी किताबों में बहुत से ऐसे अवसर मौजूद हैं कि मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन लोगों से प्रतिशोध लेने की शक्ति रखते थे, जिन लोगों ने आप को कष्ट पहुँचाई थी लेकिन जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अवसर मिला तो आप ने क्षमा कर दिया ।

" नेकी और बुराई बराबर नहीं होती, बुराई को भलाई से बचाव करो फिर वही जिस के और तुम्हारे बीच दुश्मनी है ऐसा हो जाएगा जैसे दिली दोस्त" ।
(सुरह - फुस्सेलत 41:34)

मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लोगों के दुख एवं कष्ट के समय धैर्य रखने की शिक्षा देते थे । आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक मित्र को उपदेश देते हुए कहा : " पहलवान वह नहीं जो शत्रु पर विजय पाए, बल्कि पहलवान वह है जो क्रोध के समय अपने–आप पर नियंत्रण रखे" ।

धैर्य रखने और क्षमा से काम लेने का बिल्कुल यह अर्थ नहीं कि स्वयं पर आक्रमण के समय अपनी रक्षा न करो क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वर्णन किया : " तुम शत्रु से मुटभेड़ की इच्छा न करो बल्कि अल्लाह से सुरक्षा माँगो, लेकिन जब संघर्ष हो तो डटे रहो " ।

मृदुलता (नरमी)

हज़रत अनस बिन मालिक रजिअल्लाहु अनहो जिन्होंने 10 साल तक आप की सेवा की वह बयान करते हैं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमेशा उनके साथ नम्रता के साथ पेश आते हैं आप ने कभी भी किसी काम के लिए यह नहीं कहा कि तुम ने यह काम क्यों किया और न ही कभी आप ने पूछा कि तुम ने यह काम क्यों नहीं किया और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सब से अधिक मोहब्बत करने वाले थे ।

और एक अवसर पर किसी ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शान (प्रतिष्ठा) में अपशब्द का प्रयोग किए तो हज़रत आईशा रजिअल्लाहु अनहा ने उस का कठोर उत्तर दिया ।

उस पर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत आईशा को यह कहते हुए उपदेश दिया : " अल्लाह (ईश्वर) दयावान है और वह हर काम में नम्रता को पसंद करता है " ।

"अल्लाह तआला की दया के कारण आप उन पर कोमल बन गए हैं और यदि आप बुरी ज़बान और कठोर हृदय होते तो सब आप के पास से छट जाते" ।
(सुरह आल–इमरान 3:159)

और मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह भी वर्णन किया : "नम्रता जिस वस्तु में भी हो उसको सँवार देती है और जिस वस्तु से भी नम्रता निकाल ली जाए तो उसको दोषपूर्ण बना देती है" ।

CONTENTS

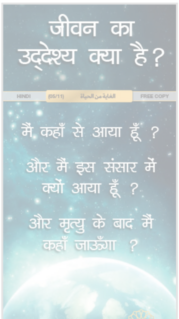

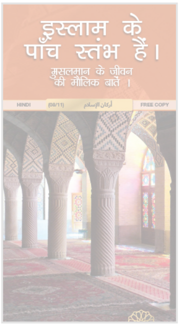

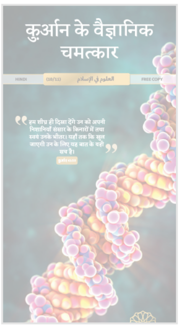

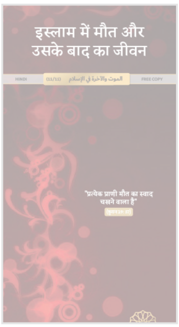

विनम्रता (खाकसारी)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमेशा अपनी सम्मान में लोगों को खड़ा होने से मना करते और आप वहीं बैठ जाते जहाँ सभा में आप को जगह मिलती और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कभी ऐसा कपड़ा नहीं पहना जो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को आप के सहाबा–ए–केराम (मित्र) से भिन्न कर सके । गरीबों और बूढ़ों के साथ मिलना–जुलना, उठना–बैठना, विधवाओं की सहायता करना आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अच्छी आदतें थीं । और जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लोगों के बीच होते उस समय आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पहचानना कठिन होता ।

"रहमान (ईश्वर) के सच्चे भक्त वह हैं जो धरती पर दीनता के साथ चलते हैं और जब अनपढ़ (अशिक्षित) लोग उन से बातें करने लगते हैं तो वह कह देते हैं कि सलाम है" ।
(सुरह अल–फुरकान 25:63)

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाब–ए– केराम (मित्रों) को संबोधित करते हुए वर्णन किया : " अल्लाह ने हमारी तरफ गुप्त वाणी भेजी है कि तुम आपस में एक दूसरे के साथ विनम्रता के साथ व्यवहार करो ताकि कोई किसी पर गर्व न करे और कोई किसी पर अत्याचार न करे " ।

अपनी पत्नियों के साथ अच्छा व्यवहार करो ।
(सुरतुन्निसा 4:19)

और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने लोगों को आदेश दिया कि वे उनका आदर हद से ज़्यादा न करें जिसका विशेष कारण यह थी कि कहीं अल्लाह के अतिरिक्त आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पूजा न होने लगे । आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वर्णन किया :

"कि तुम लोग मुझे इस तरह से न बढ़ाओ जैसा कि ईसाईयों ने ईसा अलैहिस्सलाम को बढाया, मैं अल्लाह का भक्त हूँ तो तुम मुझे अल्लाह का दास और उसका अवातर ही कहो "।

आदर्श पति

उम्मुलमोमेनीन हज़रत आईशा सिद्दिक़ा रजिअल्लाहु अनहा मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सब से प्यारी पत्नी वर्णन करती हैं "कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने घर वालों की सेवा में लगे रहते थे आप अपना वस्त्र स्वयं सिलते, अपने जूते की मरम्मत स्वयं करते और घर के वह सारे काम करते जो तुम में का एक साधारण मनुष्य करता है" ।

"और निः संदेह आप बहुत बड़े अच्छे स्वभाव (अखलाक़) पर हैं" ।
(सूरतुल– कलम 68:4)

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम केवल अपने घर वालों के साथ ही सद व्यवहार नहीं करते बल्कि अपने मित्रों को भी उनका अनुसरण करने के लिए प्रेरित करते, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वर्णन किया : "कि सब से संपूर्ण ईमान वाला वह है जो सब से अच्छे चरित्र वाला हो और अपने और पत्नी बच्चों के साथ नम्र व्यवहार रखने वाला हो " ।

CONTENTS

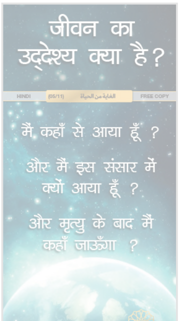

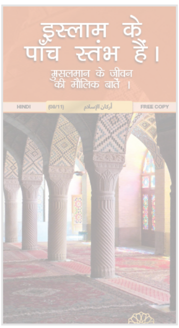

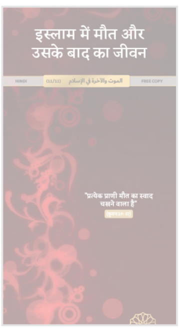

सर्वश्रेष्ठ आदर्श

> "और निःसंदेह तू बहुत बड़े अच्छे आचरण पर है" ।
> (सूरतुल– कलम 68:4)

जो कुछ ऊपर वर्णन किया गया वह मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जीवन की एक झलक थी । कुछ लोग आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इन बातों से जो आप की नरमी और दया व नम्रता पर तर्क वितर्क करते हैं हैरान रह जाएँगे, उन कल्पनाओं के कारण जो उनके मस्तिष्क में इस्लाम के बारे में लगातार उलट–फेर और संचार के माध्यम के द्वारा बैठ गई हैं ।

इस स्थान पर यह बात उल्लेखनीय है कि अगर हम इस्लाम के बारे में जानना चाहते हैं तो हमें प्रत्यक्ष रूप से उसके मूल स्रोत अर्थात कुर्आन एवं मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नियम पद्धित की तरफ लौटना चाहिए । और यह बात न्याय के विपरित है कि कुछ मुसलमानों के कर्म को देख कर कोई आदमी इस्लाम के बारे में राय दे ।

गैर मुस्लिमों की राय मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बारे में ।

महात्मा गाँधी जो हिन्दुस्तान की आज़ादी के राजनीतिक नेता और आध्यात्मिक गुरू (रूहानी पेशवा) हैं। उन्होंने कहा कि : "रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सादगी, वादों की सच्चाई, आप का अपने साथियों के लिए निःस्वार्थ एवं समर्पण का भाव, और आप का अपने ईश्वर पर पूर्ण विश्वास, यही वह गुण थे जिस ने आप की उद्देश्य को सरल बना दिया और कठिनाईयों को हटा दिया न कि तलवार ने" ।

ब्रिटिश साहित्यकार " जार्ज बर्नाड शा" ने पूरी स्पष्टता के साथ कहा कि : "आज दुनियाँ को मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जैसे मनुष्य की अत्यंत आवश्यक्ता है जो उन की कष्टों को समाप्त कर सके । मध्यकालीन धार्मिक गुरूओं ने अज्ञानता और पूर्वाग्रह के कारण मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के धर्म के स्वरूप को बिगाड़ने का प्रयास किया जिस को वह यहुदियों का शत्रु समझते थे, लेकिन जब मैंने उस महान मनुष्य की जीवन का अध्ययन किया तो मुझ को बहुत आश्चर्य हुआ और मैं इस नतीजे पर पहुँचा कि वह यहूदियों का शत्रु नहीं थे, बल्कि ज़रूरी लगता है कि मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म को मानवता (इंसानियत) की कठिनाई के दलदल से छुटकारा दिलाने वाला कहा जाए ।

मेरे ज्ञान की सीमा तक अगर उन्हें दुनियाँ की शासन सौंप दी जाती तो हम मनुष्यों की कठिनाइयों को इतने अच्छे ढंग से समाधान कर देते जो शांति व सुरक्षा की गारंटी होता और जिस की तरफ मनुष्य दौड़ा चला आता । अगर यूरोप के दुनिया की शासन मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरह कोई मनुष्य संभाल लेता तो उन्हें सभी बीमारियों से छुटकारा दिला देता ।

और यह आवश्यक है कि मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को वह सुधारक कहा जाए जिस ने लोगों को कठिनाइयों से मुक्त कर दिया ।

HOTLINE
+971 56 204 2045
islamicicdxb
islamicic.com
info@islamicic.com
+971 4 355 5223
DOWNLOAD HINDI FLYERS
www.iicdxb.com/hindi

CONTENTS

इस्लाम का परिचय

मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का परिचय ।

ईश्वर (माबूद) का अर्थ इस्लाम में

कुर्आन

जीवन का उद्देश्य क्या है?

इस्लाम के बारे में गलतफहमियाँ

इस्लाम में महिलाओं के अधिकार

इस्लाम के पाँच स्तंभ हैं।

इस्लाम धर्म क्या है ?

कुर्आन के वैज्ञानिक चमत्कार

इस्लाम में मौत और उसके बाद का जीवन

ईश्वर (माबूद) का अर्थ इस्लाम में

HINDI (03/11) مفهوم الإله في الإسلام FREE COPY

ईश्वर जो हमें जन्म देने वाला है उस से बड़ा कोई सृष्टिकर्ता नहीं है ।

Dar Al Ber Society
www.daralber.ae
الإمارات THE EMIRATES
Your Path To Peace..
مركز المعلومات الإسلامي
Islamic Information Center
للتعريف بالإسلام
تصريح رقم: (2017/139)
دائرة الشؤون الإسلامية والعمل الخيري
Islamic Affairs & Charitable Activities Department
www.islamicic.com

CONTENTS

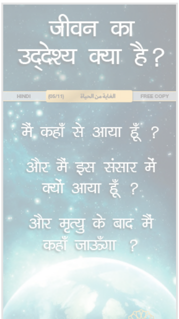

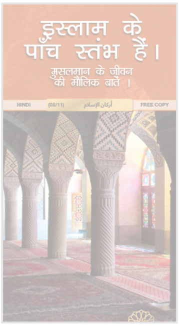

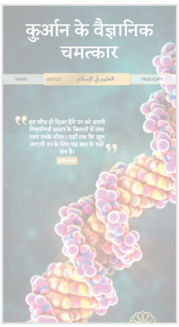

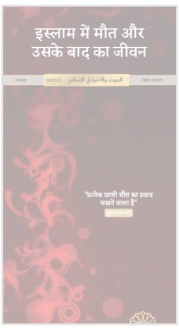

क्या कोई ईश्वर (माबूद) है ?

इस संसार के ईश्वर (माबूद) के अस्तित्व पर बहुत से विवेकपूर्ण उदाहरण उपस्थित हैं, जिन में से तीन उदाहरण हम यहाँ पर वर्णन करेंगे।

1– संसार का सिद्धांत (सिसटम)

आप कल्पना करें कि आप समुद्र के एक लम्बे तट पर चल रहे हों, और अचानक रेत में आप को एक घड़ी मिलती है, उस समय आप के मन में यह बात बिल्कुल नहीं आएगी कि यह घड़ी रेत में अपने–आप आ गई है, और उसके सभी छोटे से छोटे भाग जो कि आपस में एक दूसरे से मिले हुए हैं वह धरती के अन्दर उपस्थित वस्तुओं से अपने–आप बन गए हैं, इस घड़ी का कोई ना कोई तो बनाने वाला और अस्तित्व में लाने वाला अवश्य होगा । फिर इस घड़ी को बनाने और अस्तित्व में लाने का कोई ना कोई उद्देश्य भी होगा । और वह उद्देश्य है सही समय को बताना, इस से यह बात भी अनिवार्य है कि इसका बनाने वाला बड़ा जानकार होगा । और किसी प्राकृतिक संयोग के लिए यह बात बिल्कुल संभव नहीं कि वह कोई ऐसी घड़ी अस्तित्व में ला सके जो इस प्रकार सही ढंग से काम कर सके ।

और अगर हम पृथ्वी ग्रह पर दृष्टि डालें तो सूरज के चारों ओर चक्कर लगाने का सिद्धांत भी बहुत ही अच्छे ढंग से प्रबंधन किया गया है, जिसने वैज्ञानिकों को इस योग्य बनाया कि वह सूरज के निकलने एवं डूबने के समय के बारे में निर्धारण कर सकें, तो जिस प्रकार निश्चित रूप से घड़ी के लिए कोई ना कोई बनाने वाला और उसके समय को निर्धारित करने वाला होगा, उसी प्रकार धरती का भी कोई ना कोई बड़ा ही जानकार बनाने वाला है, जिस ने बड़े ही सूक्ष्मतापूर्वक सूरज के चारों ओर चक्कर लगाने का समय निश्चित किया है । क्या यह संभव है कि यह सारा सिद्धांत स्वतः अस्तित्व (वजूद) में आ जाए ?

इसी प्रकार जब हम अपनी सृष्टि पर और पूरे ब्रहमांड के सिद्धांत और सिस्टम पर दृष्टि डालते हैं, तो क्या यह बात बुद्धि के बिल्कुल अनुसार नहीं है कि इस ब्रहमांड के सिद्धांत को कोई ना कोई चलाने वाला है? और उस व्यवस्थापक का श्रेष्ठ वर्णन एक ही ईश्वर है जिसने इस ब्रहमांड को उत्पन्न और प्रबंधन किया ?

2– ब्रहमांड का अस्तित्व (वजूद)

आधुनिक ज्ञान इस नतीजे पर पहुँच चुका है कि इस संसार का एक प्रारंभिक बिंदु है और इसी कारण वह आधुनिक खोज है कि दुनिया फैलती जा रही है, और जब समय पीछे की तरफ पलटेगा तो फिर संसार उसी बिंदु की तरफ वापस चली जाएगी जहाँ से उसका आरंभ हुआ था । और संसार को अस्तित्व (वजूद) में आने के तीन कारण हो सकते हैं ।

1– संसार शून्य से अस्तित्व में आया है ।

2– संसार स्वतः अस्तित्व में आया है ।

3– इस संसार का सृष्टिकर्ता कोई है ।

> एक आसान सी बात हमें यह बतलाती है कि किसी भी वस्तु के लिए यह संभव नहीं है कि वह अस्तित्व में आने से पहले कुछ कर सके

मनुष्य के अनुभव से यह बात ज्ञात होता है कि वह प्रत्येक वस्तु जिस का आरंभ हो वह स्वतः (अपने–आप) अस्तित्व में नहीं आ सकता ।

दूसरे कारण का व्याख्या, एक आसान सी बात हमें यह बतलाती है कि किसी भी वस्तु के लिए यह संभव नहीं है कि वह अस्तित्व में आने से पहले कुछ कर सके, और जब यह बात प्रमाणित हो गया तो इस से तीसरे कारण का व्याख्या स्वतः हो जाता है कि जो कि बुद्धि के बिल्कुल अनुकूल है कि एक ईश्वर (माबूद) है जो सृष्टि करने की क्षमता रखता है, जो ज्ञान और विवेक से परिपूर्ण है, उसी ने इस संसार को अस्तित्व में लाया है और प्रबंधन किया है ।

CONTENTS

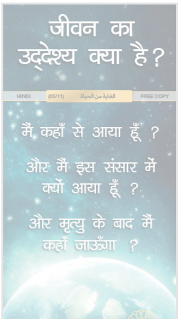

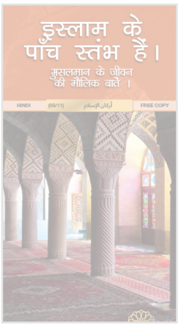

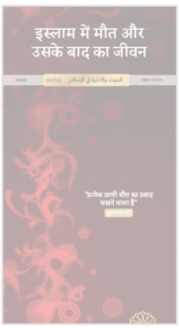

कुछ लोग यह प्रश्न करते हैं कि अल्लाह को किसने पैदा किया ?

तो उन्हें यह बात मालूम होनी चाहिए कि पैदा करने वाला ईश्वर (सृष्टिकर्ता) अपनी सृष्टि से अलग होगा, अगर वह सृष्टि की तरह होगा तो ज़रूरी है कि वह किसी पैदा करने वाले दूसरे ईश्वर सृष्टिकर्ता का मोहताज होगा । और इस से पैदा करने वाले सृष्टिकर्ताओं का ना खत्म होने वाला सिलसिला शुरू हो जाएगा जो कठिन है । तो पैदा करने वाला सृष्टिकर्ता इस संसार, समय और जगह की सीमा से बाहर है, वह हमेशा से है जिसका कोई आरंभ नहीं और वह हमेशा रहेगा जिसकी कोई अंत नहीं, तो पैदा करने वाले सृष्टिकर्ता (खालिक़) के बारे में प्रश्न करना ना समझी और अविवेकशील है ।

3- अल्लाह के तरफ से अवतरित होने वाली गुप्त वाणी (वही)

और भी बहुत से स्पष्ट उदाहरण हैं कि इस्लाम की किताब कुर्आन–मजीद है जो अल्लाह तआला के शब्द हैं । इस बात को प्रमाणित करने के लिए कुछ उदाहरण नीचे दिए जा रहे हैं जो इस बात को शक्ति प्रदान करता है ।

> जब अल्लाह तआला ने लोगों की मार्गदर्शन (रहनुमाई) के लिए किताब भेजी तो यह ज़रूरी हुआ कि इसके अन्दर अल्लाह के अस्तित्व (वजूद) पर स्पष्ट तर्क भी मौजूद हो ।

• कुर्आन–करीम (1400) साल पहले अवतरित हुआ इसके अतिरिक्त इसमें बहुत सी ऐसी वैज्ञानिक तथ्य उपस्थित हैं जो कि उस समय के लोगों को मालूम नहीं था जिनका प्रकटन

बाद में विज्ञान के द्वारा हुआ, और उसके कुछ उदाहरण यह हैं :

• पूरे ब्रहमांड (कायनात) में प्रत्येक जीवित वस्तु का मूल (असल) पानी है । (कुर्आन–करीम – सुरतुलअम्बिया, आयत न0 : 30) दुनिया फैल रही हैं । (कुर्आन–करीम – सुरतुज्ज़ारियात, आयत न0 : 47) सूरज और चाँद के लिए स्थायी रूप से अपनी–अपनी कक्षा (मदार) हैं जिस में वह परिक्रमा करते रहते हैं । (कुर्आन–करीम – सुरतुलअम्बिया, आयत न0 : 33)

• कुर्आन–करीम में बहुत सी ऐसी ऐतिहासिक तथ्य मौजूद हैं जिस से उस दौर के लोग अनभिज्ञ थे, और बाद के दौर ने उस सच्चाई को साबित कर दिया ।

• कुर्आन–करीम हर तरह की गलतियों और विरोधाभाषी शिक्षाओं से पवित्र है ।

• कुर्आन–करीम का एक–एक शब्द इस के अवतरित होने से लेकर अब तक अपनी मूल अरबी भाषा में सुरक्षित है, जब कि दूसरी किताबें अपनी मूल रूप में मौजूद नहीं हैं ।

• कुर्आन–करीम एक ऐसे साफ–सुथरा और स्पष्ट वैश्विक संदेश पर आधारित है जो कि अल्लाह ताआला से संबंधित शुद्ध चिंतन एवं विश्वास को संबोधित करता है ।

कुर्आन–करीम मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर अवतरित किया गया जो कि अनपढ़ थे, इस के बावजूद कुर्आन–करीम अरबी भाषा की अद्वितीय (बेमिसाल) रूप में है, और वह समस्त संसार में वाग्मिता और शाब्दिक सुंदरता में प्रसिद्ध है ।

> कुर्आन–मजीद की विशिष्टता और उस की वाग्मिता और उसके सर्वश्रेष्ठ का सबसे बड़ा उदाहरण यह है कि यह अल्लाह की तरफ से एक चमत्कार (मुअजेज़ा) है ।

ईश्वर (माबूद) कौन है ?

''अल्लाह'' विशेष नाम है एक वास्तविक माबूद (ईश्वर) का, और किसी भी दूसरी चीज़ को उसे अल्लाह का नाम दे कर उसे पुकारना ठीक नहीं है ।

और सही अर्थ में शब्द ''अल्लाह'' का द्विवचन और बहुवचन नहीं होता, अँग्रेज़ी भाषा के खिलाफ, इस में इलाह को (God) कहा जाता है जो द्विवचन और बहुवचन दोनों बन सकता है । (जैसे Gods या Goddess) लेकिन इस्लाम में शब्द ''अल्लाह'' ही एक ऐसा शब्द है जिसका द्विवचन और बहुवचन नहीं होता जो अल्लाह के अकेले होने का बल देता है ।

और इस्लाम का सबसे सुंदर पहलू यह है कि इस में प्रत्येक प्रकार की विशिष्टता, महानता और एकता अल्लाह ताआला ही के लिए है । और यह बात उन इस्लामी

CONTENTS

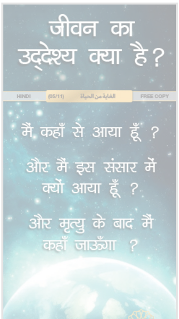

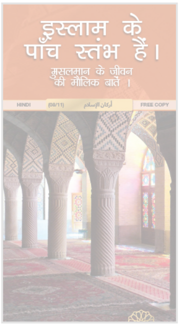

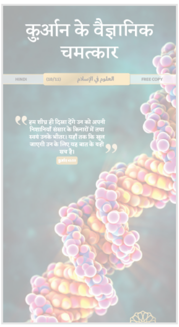

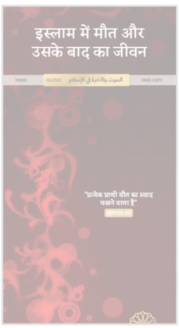

शिक्षाओं में बिल्कुल स्पष्ट रूप से नज़र आती है जो अल्लाह रब्बुल–इज्ज़त के विशेषताओं और उसके नामों से संबंधित हैं ।

अल्लाह रब्बुलइज्ज़त (ईश्वर) अकेला है ।

• ईश्वर का न तो कोई साझेदार है और ना ही कोई उसके जैसा है ।

• ईश्वर का ना तो कोई माँ है ना बाप ना तो कोई उसका बेटा है और ना बेटी और ना पत्नी ।

• सिर्फ अल्लाह ताआला (ईश्वर) ही उपासाना के लायक है ।

• अगर इस ब्रहमांड (कायनात) में एक अल्लाह (ईश्वर) से अधिक माबूद होते, तो इस ब्रहमांड (कायनात) के व्यवस्था को चलाने की शक्ति एक दूसरे के हाथों में बदलती रहती, क्योंकि निश्चित रूप से इस दशा में माबूदों के बीच में टकराव होती रहती ।

> तुम लोगों का ईश्वर (माबूद) एक ही ईश्वर (माबूद) है, उस के अतिरिक्त कोई माबूद (ईश्वर) नहीं ''
> (अलबकरा: 163)

अल्लाह तआला (ईश्वर) ही सर्वशक्तिमान है ।

• सभी परिस्थितियों का अधिकार अल्लाह रब्बुल–इज्ज़त के ही हाथों में है, और वह प्रत्येक वस्तु पर सामर्थ्य रखने वाला है ।

• प्रत्येक वस्तु का नियंत्रण अल्लाह रब्बुल–इज्ज़त ही के हाथ में है, और उसी के हाथ में उन की मार्गदर्शन और जीविका की जिम्मादारी है ।

• अल्लाह–रब्बुलइज्ज़त (ईश्वर) को ना तो किसी आज्ञाकार की आज्ञाकारी कुछ लाभ पहुँचाती है और न ही किसी अवज्ञाकार की अवज्ञाकारी हानि का कारण बनता है ।

अल्लाह तआला (ईश्वर) की ज़ात सर्वोच्च शक्तिमान ।

• अल्लाह तआला (ईश्वर) से ऊपर किसी वस्तु का होना असंभव है, संभव तो दूर की बात उसके बराबर भी नहीं हो सकती ।

• अल्लाह तआला (ईश्वर) की विशेषताएँ उसकी सृष्टि (मखलूकात) की विशेषताओं से बिलकुल भिन्न है ।

• अल्लह तआला (ईश्वर) किसी भी व्यक्ति या किसी भी वस्तु का रूप धारण नहीं करता ।

• अल्लाह तआला (ईश्वर) की सभी विशेषताएँ पूर्ण हैं । मानवीय विनम्रता की सीमाएँ इस पर फिट नहीं होते । इस के विपरित जैसा कि कुछ धर्मों के लोग दावा करते हैं ।

अल्लाह तआला (ईश्वर) न्याय करने वाला दया करने वाला है ।

• अल्लाह तआला (ईश्वर) को गुनाहों की माफी के लिए अपने–आप को कुर्बान करने की ज़रूरत नहीं है । क्योंकि कोई भी आदमी ऐसे गुनाहों के साथ पैदा नहीं होता जिसे उसके हाथों ने नहीं किया हो ।

• अल्लाह तआला (ईश्वर) मनुष्यों के केवल कर्मों का हिसाब लेगा । और प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्मों का उत्तरदायी होगा ।

• मनुष्य अल्लाह (ईश्वर) की प्रसन्नता उस पर ईमान रख कर और अच्छे कर्म के माध्यम से प्राप्त कर सकता है, ना कि लिंग, सामाजिक योग्यता और धन संपति के माध्यम से ।

ईसा अलैहिस्सलाम की वास्तविक्ता (हकी़क़त) ।

इस्लाम धर्म में इश्वर के अर्थ की व्याख्या के लिए ईसा (अलैहिस्सलाम) की वास्तविकता को प्रकट करना अति महत्तवपूर्ण एवं आवश्यक है, यह इस कारण से क्योंकि इस के बारे में बहुत से संदेह और भ्रांतियाँ (परोपगंडे) बड़े पैमाने पर

CONTENTS

फैले हुए हैं ।

कुछ ईसाईयों का यह दावा है कि '' ईसा अलैहिस्सलाम ही ईश्वर हैं'' या वह तीन के तीसरे हैं, और यह कि पृथ्वी पर वह ईश्वर का रूप धारण किए हुए हैं । और यह भी विश्वास पाया जाता है कि वह मनुष्य के रूप में ईश्वर (अल्लाह) हैं ।

परन्तु जब हम ईसाईयों की किताब ''पवित्र ग्रंथ'' पर दृष्टि डालते हैं तो यह पता चलता है कि ईसा (अलैहिस्सलाम) पैदा हुए, वह खाते–पीते, सोते और नमाज़ें भी पढ़ते थे, और उनके पास कोई ऐसा ज्ञान भी नहीं था जो कि सभी प्रकार के ज्ञान को घेरे हुए हों ।

और ये विशेषताएँ अल्लाह (ईश्वर) के योग्य नहीं हैं ।

अल्लाह (ईश्वर) की सभी विशेषताएँ पूर्ण हैं जबकि मनुष्य की सभी विशेषताएँ अपूर्ण हैं, तो मनुष्य की एक ही समय में दो योग्यताएँ कैसे हो सकती हैं एक पूजक दूसरा ईश्वर, यह बात बुद्धि के विपरित है ।

> इस्लाम धर्म में माबूद के अर्थ की व्याख्या के लिए ईसा (अलैहिस्सलाम) की वास्तविकता को प्रकट करना अति महत्तवपूर्ण एवं आवश्यक है, यह इस कारण से क्योंकि इस के बारे में बहुत से संदेह और परोपगंडे बड़े पैमाने पर फैले हुए हैं ।

इसके अतिरिक्त कुछ लोग प्रश्न करते हैं कि ''जब अल्लाह तआला प्रत्येक वस्तु पर शक्तिवान है तो वह मनुष्य क्यों नहीं हो सकता'' ?

उपरोक्त विशेषताओं के प्रकाश में वास्तविक उपासक (ईश्वर) वह काम नहीं करता है जो ईश्वर न होने का तर्क प्रस्तुत करे ।

इसी कारण से वास्तविक ईश्वर मनुष्य नहीं हो सकता । और जो मानवीय विशेषताएँ रखता हो वह कभी ईश्वर नहीं हो सकता ।

इसके अतिरिक्त ईसाईयों की पवित्र ग्रंथों में असंख्य ऐसी आयात हैं जिस में ईसा (अलैहिस्सलाम) अल्लाह (ईश्वर) के भक्तों जैसी बातें और उन्हीं जैसे काम करते हैं और यह कि अल्लाह तआला (ईश्वर) उनसे अलग और भिन्न है । उदाहरण के लिए इंजील यूहन्ना 40/8 में है : ''लेकिन अब तुम चाहते हो कि मुझे कत्ल कर दो, और मैं मनुष्य हूँ जिसने तुम से उस अधिकार को बयान किया जिसको उसने अल्लाह से सुना'' ।

''कुछ ईसाईयों का दावा है कि ईसा (अलैहिस्सलाम) अल्लाह के बेटे हैं'' । उचित समझ में आता है कि हम अपने–आप से प्रश्न करें कि स्पष्ट रूप से इस का क्या अर्थ है ?

निश्चित रूप से अल्लाह (ईश्वर) की प्रतिष्ठा उस से बहुत उच्च है कि उसका कोई बेटा हो । ठीक इस के विपरित तौरात के प्राचीनतम भाषा में साहित्य के रूप में ''इब्नुल्लाह'' सज्जन भक्तों के लिए प्रयोग होता था ।

भूतकाल की बहुत सी श्लोकों में बहुत से सज्जन व्यक्ति, उदाहरण : दाऊद, सुलैमान और इसराईल अलैहेमुस्सलाम के बारे में भी यह शब्द प्रयोग किया गया है, ऐसा नहीं है कि यह शब्द केवल ईसा (अलैहिस्सलाम) के लिए प्रयोग किया गया है ।

इसका एक उदाहरण : अल्लाह (ईश्वर) कि यह बात है कि ''इसराईल मेरा पहला बेटा है'' । सफरुल खुरूज : 04/22

कुर्आन में अल्लाह तआला (ईश्वर) ने फरमाया : '' अल्लाह तआला (ईश्वर) के लिए शोभनीय नहीं है कि वह अपने लिए संतान बनाए, उसकी ज़ात तो पाक है'' ।

इस्लामी मान्यता ईसा (अलैहिस्सलाम) की वास्तविक्ता को वर्णन करता है कि वह कौन थे ?

बल्कि अल्लाह के बारे में उचित और सही मान्यता रखना कि अल्लाह तआला (ईश्वर) की ज़ात पाक है, वह गौरवशाली है, और वह हर दोष से पवित्र है और वह तनहा और अकेला है ।

हज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम) एक प्रिय रसूल थे । अल्लाह तआला (ईश्वर) ने उन्हें इसलिए भेजा कि वह लोगों को एक अल्लाह (ईश्वर) की पूजा की ओर बुलाएँ।

> कुर्आन मे अल्लाह तआला (ईश्वर) ने फरमाया : '' अल्लाह तआला (ईश्वर) के लिए शोभनीय नहीं है कि वह अपने लिए संतान बनाए, उसकी ज़ात तो पाक है'' ।
> सूरतु मरियम 35

CONTENTS

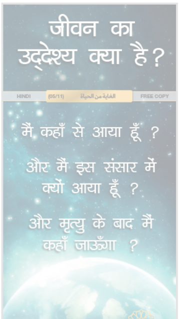

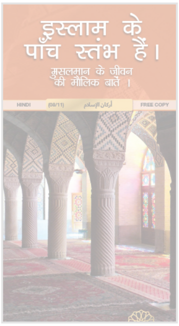

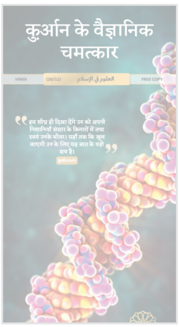

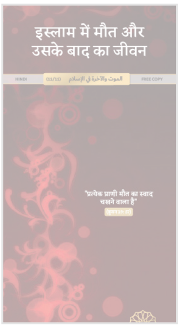

अल्लाह (ईश्वर) एक है वही पूज्य है ।

कुर्आन में अल्लाह (ईश्वर) का कथन है : " और अल्लाह (ईश्वर) की पूजा (इबादत) करो और उसके साथ किसी को साझेदार (शरीक) ना बनाओ " | सुरतुन निसा : 36

इस्लाम की शिक्षा इस ओर विशेष बल देता है कि हम सभी कामों को अल्लाह के लिए ही करें और उसके अतिरिक्त कोई भी पूजा (इबादत) का हक नहीं रखता ।

ना मूर्ति, कब्र, चाँद, ना सूरज, ना कोई जानवर, ना ही नबी, न वली, ना फरिश्ते, ना ही धार्मिक संत । यह सभी सृष्टि (मखलूक) हैं, बंदिशो में घिरे हुए हैं, उनके अंदर त्रुटि पाई जाती है और यह सभी अपूर्ण हैं जबकि अल्लाह तआला की ज़ात संपूर्ण है ।

अल्लाह तआला की (पूजा) इबादत डाइरेक्ट और बिना किसी साधन (वसीला, सिफारिश) के की जाती है ।

अल्लाह तआला को ना तो किसी शरीक (साझी) की ज़रूरत है और ना ही माध्यम की ।

अल्लाह (ईश्वर) और संसार के सभी मनुष्यों के बीच डाईरेक्ट रास्ता खुला हुआ वह हर उस आदमी की सुनता है जो उसकी प्रशंसा करता है, उसको पुकारता और उस से आशाएँ रखता है ।

और अल्लाह (ईश्वर) की इबादत (पूजा) साधनों (माध्यमों) और सिफरिशों के ज़रिया (उदाहरण : मूर्ति, प्रतिमाओं और इस के अतिरिक्त दूसरे सभी साधन) तौहीद की इमारत की बुनियादों को ढेर कर देते हैं । सिर्फ अकेले अल्लाह ही इबादत (पूजा) के योग्य है उसके अतिरिक्त कोई इस का अधिकार नहीं रखता ।

सभी नबियों ने अल्लाह की पूजा (इबादत) की तरफ बुलाया ।

अल्लाह तआला (ईश्वर) का कुर्आन मजीद में कथन है : " हम ने प्रत्येक समुदाय में रसूल भेजा कि अल्लाह की इबादत करो और झूठे इश्वरों से बचो " सुरह नहल : 36

मुसलमान उन सभी नबियों पर ईमान रखते हैं जिनको अल्लाह ने भेजा । उदाहरण : आदम, नूह, इब्राहीम, मूसा, ईसा, और मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम्म ।

अल्लाह (ईश्वर) ने सभी रसूलों को एक ही संदेश दे कर भेजा और वह संदेश यह था कि " अल्लाह (ईश्वर) की पूजा (इबादत) करो, उसके अतिरिक्त तुम्हारा कोई माबूद (ईश्वर) नहीं है ।

जीवन का उद्देश्य यह है कि हम अल्लाह की पूजा (इबादत) करें ।

संसार में हमारे अस्तित्व का सबसे महत्तवपूर्ण उद्देश्य यह है कि हम अल्लाह (ईश्वर) की पूजा (इबादत) करें, और हम इस बात को स्वीकार करें कि केवल अल्लाह ही पालनहार और केवल वही उपासना (पूजा) के योग्य हैं और हम सब केवल उसी की प्रसन्नता के इच्छुक हैं ।

और इस्लाम में पूजा (इबादत) केवल नमाज़, रोज़ा का नाम नहीं है बल्कि पूजा (इबादत) हर उस कर्म को कहते हैं जिस को अल्लाह (ईश्वर) पसन्द करे और उस से प्रसन्न हो, जैसे कि अच्छा आचरण से सुसज्जित होना, अच्छे काम करना, धैर्य करना और फकीरों, निर्धनों एवं असहाय लोगों के साथ अच्छा व्यवहार करना यह सब पूजा (इबादत) है ।

और आखरी बात : इस्लाम की बुनियाद यह है कि अल्लाह (ईश्वर) को एक जानने में आस्था रखा जाए । उसके सृष्टिकर्ता और रब होने का विश्वास रखा जाए जिस के सभी गुण और विशेषताएँ पूर्ण हैं और केवल वही अकेला इबादत (पूजा) के योग्य है, इसी में हमारी लोक–परलोक की सफलता छुपी हुई है ।

CONTENTS

इस्लाम का परिचय

मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का परिचय ।

ईश्वर (माबूद) का अर्थ इस्लाम में

कुर्आन

जीवन का उद्देश्य क्या है?

इस्लाम के बारे में गलतफहमियाँ

इस्लाम में महिलाओं के अधिकार

इस्लाम के पाँच स्तंभ हैं।

इस्लाम धर्म क्या है ?

कुर्आन के वैज्ञानिक चमत्कार

इस्लाम में मौत और उसके बाद का जीवन

कुर्आन

HINDI | (04/11) | القرآن | FREE COPY

मानवता के लिए अंतिम रहस्योद्घाटन

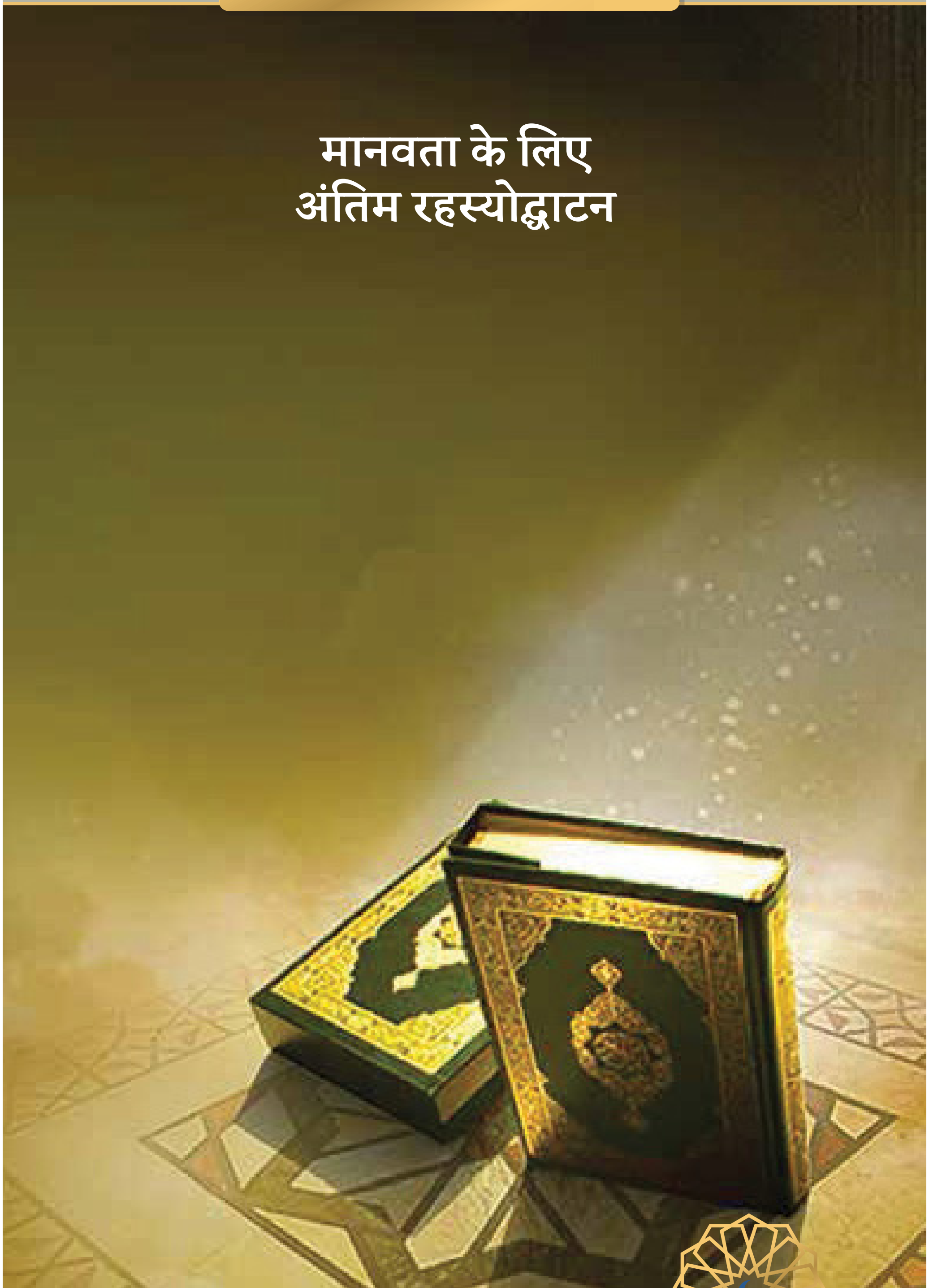

Dar Al Ber Society
www.daralber.ae

الإمارات
THE EMIRATES

Your Path To Peace..

مركز المعلومات الإسلامي
Islamic Information Center
للتعريف بالإسلام

تصريح رقم: (2017/139)
دائرة الشؤون الإسلامية والعمل الخيري
Islamic Affairs & Charitable Activities Department

www.islamicic.com

CONTENTS

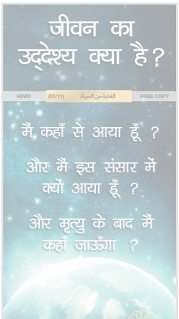

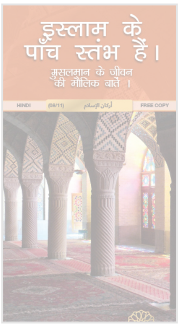

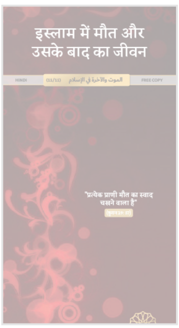

कुर्आन क्या है?

कुरान संक्षेप में:

कुर्आन अल्लाह ताला का शब्द है जो पैगंबर मोहम्मद (उन पर शांति हो) पर जिब्राइल फरिश्ता के माध्यम से नाजिल किया गया।

"इस पुस्तक का अवतरित होना अल्लाह अति प्रभावशाली तत्वज्ञ की ओर से है"

(कुर्आन 39:1)

मानव जाति का मार्गदर्शन

कुर्आन संक्षेप में: "सब मानव के लिए मार्गदर्शन है"

(कुर्आन 2:185)

कुर्आन मानवता के लिए मार्गदर्शन का सर्वोच्च स्रोत है, यह इंसान को सही और गलत के बीच भेद करने में सक्षम बनाता है, और इसके बिना इंसान निश्चित रूप से भटकाव के जाल में नष्ट हो जाएगा।

अंतिम रहस्योद्घाटन

कुर्आन अल्लाह ताला द्वारा प्रकट किया गया अंतिम धर्मग्रंथ है, जो पिछले धर्मग्रंथों के कुछ हिस्सों में बची हुई थोड़ी सी सच्चाई की पुष्टि करता है और ऐसे धर्मग्रंथों के वर्तमान संस्करणों में आई मनगढ़ंत बातों और परिवर्धन का खंडन और सुधार करता है।

"ऐ अहले किताब! उस (कुर्आन) पर ईमान लाओ जिसे हम ने उन का प्रमणकारी बना कर उतारा है जो (पुस्तकें) तुम्हारे साथ हैं"

(कुर्आन 4: 47)

कुर्आन कैसे उतरा?

कुर्आन करीम नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर नाज़िल हुआ, और यह केवल उसी भाषा में सुरक्षित है जिसमें इसे नाज़िल किया गया - अरबी। फिर भी, इसके अर्थों का अनुवाद कई भाषाओं में उपलब्ध है।

कुर्आन एक बार में ही नहीं उतरा, बल्कि यह 23 वर्षों की अवधि तक जारी रहा।

इस लिए, यह आवश्यक है कि हम उन परिस्थितियों को जानें जिनमें यह आयतें उतरीं, ताकि हम कुरान को सही तरीके से समझ सकें, अन्यथा इसकी शिक्षाओं की गलत व्याख्या हो सकती है।

CONTENTS

मैं कैसे जानूं कि यह क़ुर्आन अल्लाह की ओर से है?

संरक्षण

क़ुर्आन एकमात्र पवित्र धार्मिक पाठ है जो लंबे समय से प्रचलित है, फिर भी यह अपने अवतरण के दिन की तरह शुद्ध बना हुआ है। इसमें कुछ भी नहीं जोड़ा गया है, कुछ भी नहीं हटाया गया है, और इसे 1400 से अधिक वर्षों पहले के अपने अवतरण के बाद से संशोधित नहीं किया गया है।

अल्लाह ताआला कहता है: वास्तव में हम ने ही यह शिक्षा (क़ुर्आन) उतारी है, और हम ही उस के रक्षक हैं।

(क़ुर्आन 15:9)

क़ुर्आन की हिफ़ाज़त केवल इसकी किताबों में लिखित होने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह पुरुषों, महिलाओं और बच्चों के दिलों में भी सुरक्षित है। आज क़ुर्आने करीम को पूरी तरह से, शुरू से अंत तक, दुनिया भर में लाखों लोगों की ज़बानों पर याद है।

वैज्ञानिक चमत्कार

क़ुर्आन आधुनिक विज्ञान का खंडन नहीं करता बल्कि उसकी वास्तविकताओं का समर्थन करता है। क़ुर्आन के बारे में सबसे उल्लेखनीय पहलुओं में से एक यह है कि इसमें कई छंद शामिल हैं जो भ्रूण विज्ञान, मौसम विज्ञान, खगोल विज्ञान, भूविज्ञान और समुद्र विज्ञान जैसे विभिन्न क्षेत्रों में प्राकृतिक घटनाओं का सटीक वर्णन करते हैं। वैज्ञानिकों ने 7वीं शताब्दी की एक किताब के विवरण को अविश्वसनीय रूप से सटीक पाया है।

अल्लाह ताआला कहता है: "हम शीघ्र ही दिखा देंगे उन को अपनी निशानियाँ संसार के किनारों में तथा स्वयं उनके भीतर। यहां तक कि खुल जाएगी उनके लिए यह बात की यही सच है"।

(क़ुर्आन 41:53)

वास्तव में, क़ुर्आन में वर्णित कई वैज्ञानिक चमत्कार तकनीकी उपकरणों की आधुनिक प्रगति के माध्यम से हाल ही में खोजे गए हैं।

यह ध्यान में रखें:

- क़ुर्आने करीम मानव भ्रूण के विकास के चरणों का विस्तृत वर्णन करता है, और ये विवरण हाल तक वैज्ञानिक समुदाय के लिए अज्ञात थे।
- आधुनिक विज्ञान ने यह साबित किया है कि समुद्रों के बीच जल अवरोध हैं, जिस से उनके पानी मिलते हैं लेकिन पूरी तरह से मिश्रित नहीं होते, और प्रत्येक का तापमान, घनत्व और लवणता बरकरार रहता है।

यह अल्लाह की आयतें क़ुर्आन में स्पष्ट रूप से 1400 से अधिक वर्षों से उल्लेखित हैं।

CONTENTS

विशिष्टता

जब से यह किताब उतरी है, तब से कोई भी एक सूरह ही क़ुर्आन की सुंदरता, प्रभावशीलता, अद्भुतता, ज्ञान और भविष्यवाणियों जैसी पूर्णताओं के साथ नहीं ला सका।

अल्लाह ताआला कहता है:

"और यदि तुम्हें उस (पुस्तक) के बारे में कुछ संदेह हो जो हम ने अपने बंदे पर उतारा है, तो उसके समान कोई एक सूरत ले आओ? और अपने समर्थकों को भी, जो अल्लाह के सिवा हों बुला लो, यदि तुम सच्चे हो।"

(क़ुर्आन 2:23)

जिन लोगों ने पैगंबर मुहम्मद (उन पर शांति हो) को अस्वीकार कर दिया, वे इस चुनौती में विफल रहे, भले ही वे क़ुर्आन की भाषा में बेहद कुशल थे। यह चुनौती आज भी अनुत्तरित है।

कोई विरोधाभास नहीं

जब लोग लिखते हैं, तो वे स्वाभाविक रूप से वर्तनी और व्याकरण संबंधी त्रुटियां, बयानों में विरोधाभास, कटौती या अनुमान में त्रुटियां और अन्य प्रकार की मानवीय त्रुटि करते हैं।

अल्लाह ताआला कहता है:

"तो क्या वह क़ुर्आन (के अर्थों) पर सोच विचार नहीं करते।? यदि वह अल्लाह के सेवा दूसरों की ओर से होता तो उसमें बहुत सी प्रतिकूल (बे मेल) बातें पाते?"

(क़ुर्आन 4:82)

क़ुर्आन में बिल्कुल भी कोई विरोधाभास नहीं है, चाहे जल चक्र, भ्रूणविज्ञान, भूविज्ञान, या ब्रह्मांड विज्ञान की वैज्ञानिक व्याख्या में, या ऐतिहासिक तथ्यों और घटनाओं, या भविष्यवाणियों में।

क्या मुहम्मद ने इसकी रचना नहीं की होगी?

पैगंबर मुहम्मद, (भगवान उन्हें आशीर्वाद दे और उन्हें शांति प्रदान करे)

इतिहास में उन्हें अनपढ़ के रूप में जाना जाता है, वह पढ़ना या लिखना नहीं जानते थे, और वह किसी भी क्षेत्र में शिक्षित नहीं थे, और यह मुमकिन नहीं है के इस सुंदर पुस्तक की वैज्ञानिक और ऐतिहासिक सटीकता की व्याख्या की जा सके। क़ुर्आन में उल्लिखित पिछले लोगों और सभ्यताओं के ऐतिहासिक विवरणों की सटीकता किसी भी इंसान के लिए उन्हें लिखने के लिए बहुत अधिक है।

अल्लाह ताआला कहता है:

"और यह कुरान ऐसा नहीं है कि अल्लाह के सिवा अपने मन से बना लिया जाए"

(क़ुर्आन 10:37)

CONTENTS

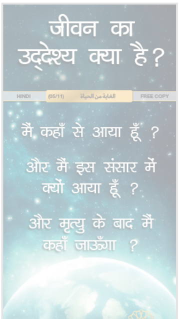

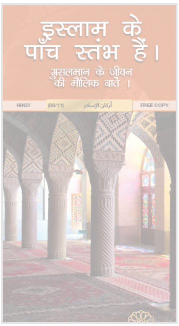

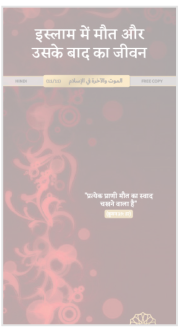

रहस्योद्घाटन का उद्देश्य

एक सच्चे ईश्वर में आपका विश्वास

अल्लाह ताआला कहता है: "और तुम्हारा पूज्य एक ही पूज्य है, उस अत्यन्त दयालु, दयावान के सिवा कोई पूज्य नहीं"

(क़ुर्आन 2:163)

पूरे क़ुर्आन में उल्लिखित सबसे महत्वपूर्ण विषय एक, सच्चे ईश्वर में विश्वास है। ईश्वर हमें बताता है कि उसका कोई भागीदार नहीं है, कोई पुत्र, कोई समान नहीं है और केवल उसके अलावा किसी को भी इबादत करने का अधिकार नहीं है। कोई भी चीज़ ईश्वर के समान नहीं है, और उसकी रचना की किसी भी चीज़ की तुलना उससे नहीं की जा सकती। क़ुर्आन मानवीय गुणों और मानवीय कमियों का श्रेय ईश्वर को देने की धारणा को भी खारिज करता है।

सभी झूठे देवताओं को अस्वीकार करना

अल्लाह ताला कहता है: "तथा अल्लाह की इबादत (वंदना) करो, और किसी चीज को उसका साझी ना बनाओ"

(क़ुर्आन 4:36)

चूँकि केवल अल्लाह ही इबादत का योग्य है, इसलिए तागूतों और झूठे देवताओं को अस्वीकार करना आवश्यक है। जैसा कि क़ुर्आन किसी भी व्यक्ति या चीज़ को अल्लाह के अलावा दिव्य गुणों का श्रेय देने की धारणा को भी खारिज करता है।

पिछले जमाने की गुजरी हुई कहानियाँ

क़ुर्आने करीम में कई कहानियाँ और उपयोगी पाठ हैं, जिनमें पिछले पैगंबरों की सच्ची कहानियाँ भी शामिल हैं, जैसे कि आदम, नूह, इब्राहीम, ईसा और मूसा उन सभी पर शांति हो। इन कहानियों के बारे में, अल्लाह कहता है:

"निःसंदेह उनकी कहानियों में, बुद्धिमानों के लिए बड़ी शिक्षा है"

(क़ुर्आन 12:111)

हमें क़यामत के दिन की याद दिलाने के लिए

यह प्रतिष्ठित पुस्तक (क़ुर्आन) हमें याद दिलाती है कि हर कोई मौत का स्वाद चखेगा और अपने सभी कार्यों और कथनों के लिए उसे जिम्मेदार ठहराया जाएगा:।

और हम रख देंगे न्याय का तराजू प्रलय के दिन, फिर नहीं अत्याचार किया जाएगा किसी पर कुछ भी

(क़ुर्आन 21:47)

इच्छित जीवनशैली को प्राप्त करना

और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि क़ुर्आन सिखाता है कि जीवन का उद्देश्य केवल अल्लाह की इबादत करना है, और व्यक्ति को अपनी जिंदगी उस जीवनशैली के अनुसार जीनी चाहिए जो अल्लाह को पसंद है।

इस्लाम में इबादत एक व्यापक शब्द है, जो सभी कार्यों और बातों को शामिल करता है जिन्हें अल्लाह पसंद करता है और जिनसे वह खुश होता है, चाहे वे बाहरी हों या आंतरिक।

इसलिए, एक मुसलमान जब अल्लाह के आदेशों का पालन करता है, तो वह अल्लाह की इबादत करता है और अपने जीवन में अपने उद्देश्य को प्राप्त करता है।

CONTENTS

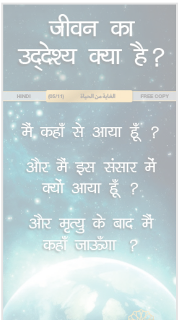

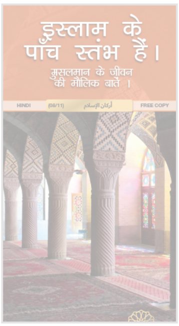

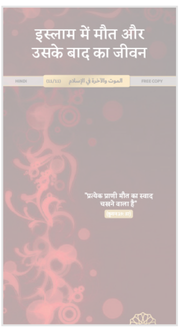

नीचे क़ुर्आन से इबादत के उदाहरण दिए गए हैं:

नमाज़

"ऐ ईमान वालो रुकूअ करो तथा सज़्दा करो, और अपने पालनहार की इबादत (वंदना) करो, और भलाई करो ताकि तुम सफल हो जाओ"। (क़ुर्आन 22:77)

दान देना:

"और दान करो। यह उत्तम है तुम्हारे लिए। और जो बचा लिया गया अपने मन की कंजूसी से तो वही सफल होने वाले हैं "।(क़ुर्आन 64:16)

ईमानदार होना:

"तथा सत्य को असत्य में ना मिलाओ और ना सत्य को जानते हुए छुपाओ"। (क़ुर्आन 2:42)

विनम्र होना:

"(ऐ नबी!) आप ईमान वालों से कहें कि अपनी आंखें नीची रखें और अपने गुप्तांगो की रक्षा करें। और इनाम वालियों से कहें कि अपनी आँखें नीची रखें और अपने गुप्तांगों की रक्षा करें"। (क़ुर्आन 24:30-31)

इस दिशा:

"और अल्लाह ही ने तुम्हें तुम्हारी माताओं के गर्भों से निकला, इस दशा में कि तुम कुछ नहीं जानते थे। और तुम्हारे कान और आँख तथा दिल बनाये, ताकि तुम (उस का) उपकार मानो"। (क़ुर्आन 16:78)

न्याय

"हे ईमान वालो! न्याय के साथ खड़े रहकर अल्लाह के लिये साक्षी (गवाह) बन जाओ। यद्यपि साक्ष्य (गवाही) तुम्हारे अपने अथवा माता-पिता और समीपवर्तीयों के विरुद्ध हो, यदि कोई धनी अथवा निर्धन हो तो अल्लाह ताला तुमसे अधिक उन दोनों का हितैषी है।"।(क़ुर्आन 4:135)

सब्र

"तथा आप सब्र से काम लें, क्योंकि अल्लाह सदाचारियों का प्रतिफल व्यर्थ नहीं करता"। (क़ुर्आन 12:11)

अच्छे काम करना:

"जो लोग ईमान लाए तथा सत्य, कर्म किए तो उनसे अल्लाह का वचन है कि उनके लिए क्षमा तथा बड़ा प्रतिफल है"। (क़ुर्आन: 5- 9)

निष्कर्ष

संक्षेप में, पवित्र क़ुर्आन मानव जाति को सिखाता है कि एक सच्चे ईश्वर की इबादत कैसे करें, जिससे जीवन में उनका वास्तविक उद्देश्य पूरा हो सके, और इस दुनिया और अगली दुनिया दोनों में सफलता प्राप्त हो सके।

अल्लाह ताला कहता है:

"वास्तव में हम ने ही अवतरित की है आप पर यह पुस्तक लोगों के लिए सत्य के साथ। तो जिस ने मार्गदर्शन प्राप्त कर लिया तो उस के अपने (लाभ के) लिए है। तथा जो कुपथ हो गया तो वह कुपथ होता है अपने ऊपर"

(क़ुर्आन: 39-41)

CONTENTS

इस्लाम का परिचय

मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का परिचय ।

ईश्वर (माबूद) का अर्थ इस्लाम में

कुर्आन

जीवन का उद्देश्य क्या है?

इस्लाम के बारे में गलतफहमियाँ

इस्लाम में महिलाओं के अधिकार

इस्लाम के पाँच स्तंभ हैं।

इस्लाम धर्म क्या है ?

कुर्आन के वैज्ञानिक चमत्कार

इस्लाम में मौत और उसके बाद का जीवन

जीवन का उद्देश्य क्या है?

HINDI (05/11) الغاية من الحياة FREE COPY

मैं कहाँ से आया हूँ ?

और मैं इस संसार में क्यों आया हूँ ?

और मृत्यु के बाद मैं कहाँ जाऊँगा ?

جمعية دار البر
Dar Al Ber Society
www.daralber.ae

الإمارات
THE EMIRATES

Your Path To Peace..

مركز المعلومات الإسلامي
Islamic Information Center
التعريف بالإسلام
www.islamicic.com

تصريح رقم:
(2017/139)

دائرة الشؤون الإسلامية والعمل الخيري
Islamic Affairs & Charitable Activities Department

CONTENTS

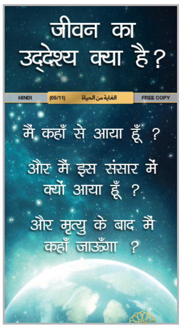

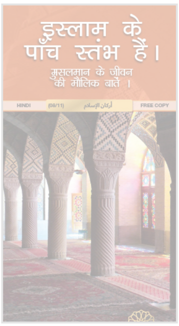

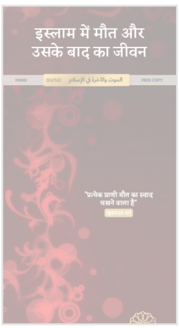

जीवन का उद्देश्य क्या है ?

जब हम जीवन के उद्देश्य के बारे में सोचते हैं तो सर्वप्रथम हमारे मस्तिष्क में यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि हम कहाँ से आए हैं ?

क्या इस संसार में हम यूँ ही अपने–आप अस्तित्व में आ गए हैं ?

या किसी महान विवेकशील सृष्टिकर्ता ने हम को पैदा किया है, हमें इस संसार में अपने अस्तित्व और जीवन के उद्देश्य को समझने के लिए सब से पहले आवश्यक है कि हम संसार के पैदा करने वाले को जाने और उस पैदा करने वाले को जानने और समझने के लिए बहुत सी संपूर्ण एवं उपयुक्त उदाहरण हैं । जिन में से तीन का वर्णन किया जा रहा है :

1. संसार की उत्पत्ति

संसार का वास्तविक अस्तित्व ही संसार के सृष्टिकर्ता की तरफ इशारा करती है कि उसका पैदा करने वाला कोई है ।

आप कल्पना करें कि आप जंगल में चल रहे हों और अचानक आप को एक घड़ी मिल जाती है जो कि शीशा, पलास्टिक और धातु से बनी हुई है ।

शीशा रेत से बना, पलास्टिक पेट्रोल से और धातु धरती के अन्दर से निकाला गया और यह सभी भाग जंगल में पाए जाते हैं, क्या आप इस बात को मानेंगे कि घड़ी अपने–आप बन गई है, कि सूर्य निकला, हवा चली, फिर तेल ऊपर आ गया और रेत और धातु के साथ मिल गया तो इस तरह लाखों वर्ष पूर्व घड़ी अपने–आप अस्तित्व में आ गई ।

मनुष्य का अनुभव हमें यह बताता है कि प्रत्येक वस्तु जिसका एक प्रारंभ है वह ऐसे ही बिना किसी कारण के किसी वस्तु के अस्तित्व में नहीं आ जाती और किसी भी वस्तु के लिए यह संभव नहीं है कि वह अपने–आप को अस्तित्व में ले आए ।

इसी कारण यह बात बुद्धि के अनुसार है कि इस संसार को एक ऐसे सृष्टिकर्ता ने पैदा किया है जो शक्तिशाली एवं विवेकशील है, क्योंकि उस ने इस संसार को अस्तित्व में लाया और उसके सिद्धांत को सुनिश्चित किया जो इस को बल प्रदान करता है ।

और हमारा यह विश्वास होना चाहिए कि पैदा करने वाला काल एवं स्थान की सीमा से परे है, क्योंकि काल एवं स्थान संसार के जन्म के साथ प्रारंभ हुए हैं ।

यह सभी विशेषताएँ अल्लाह तआला के संबंध में एक मूलभूत जानकारी उपलब्ध कराते हैं जो इस संसार का रचयिता है ।

और यह बात नई ज्ञान से बिलकुल मिलती–जुलती है कि संसार सीमित है और उसका प्रारंभ है ।

कुछ लोग प्रश्न कर सकते हैं कि अल्लाह (ईश्वर) को किस ने जन्म दिया ?

उसका उत्तर यह है कि वह अल्लाह (ईश्वर) जो पैदा करने वाला है अपनी सृष्टि से भिन्न है । अल्लाह की ज़ात हमेशा रहने वाली है और वह हमेशा से मौजूद है उसकी कोई प्रारंभ नहीं और फिर यह प्रश्न करना कि अल्लाह को किस ने पैदा किया यह बुद्धि के विपरित है ।

CONTENTS

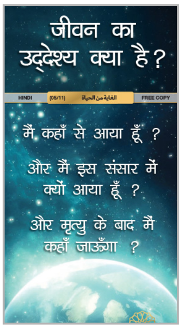

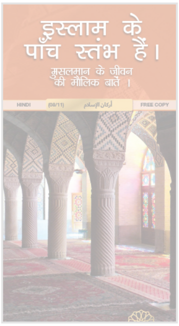

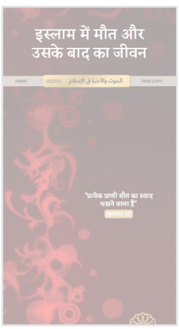

2. संसार की पूर्ण उत्पत्ति

दूसरा उदाहरण जो एक ज़बरदस्त ज्ञान रखने वाले पैदा करने वाले के अस्तित्व पर तर्क पेश करता है, वह है : संसार की जटिल व्यवस्था एवं सिध्दांत को व्यवस्थित करना है ।

इसी प्रकार संसार में ऐसी असंख्य उदाहरण मौजूद हैं जो स्पष्ट बतलाती हैं कि वह बिल्कुल मज़बूत और परिपक्व व्यवस्था है जो जीवन की सहायता के लिए आवश्यक है ।

उदाहरण स्वरूप : पृथ्वी और सूर्य के बीच की दूरी, पृथ्वी के परत की मोटाई, पृथ्वी के चक्कर लगाने की गति, वायुमंडल में आक्सीजन का अनुपात यहाँ तक कि पृथ्वी की तापमान इत्यादि । अगर इस वर्तमान व्यवस्था के अन्दर थोड़ा भी अंतर होता तो जीवन का पाया जाना असंभव होता ।

तो इस तरह घड़ी के लिए आवश्यक है कि इस का बनाने वाला जानकार हो ताकि सूक्ष्मता पूर्वक से समय का प्रबंधन कर सके, इसी तरह पृथ्वी का बनाने वाला भी जानकार और ज्ञान रखने वाला हो, ताकि सूर्य के चारों ओर पृथ्वी की परिक्रमा को बहुत ही सूक्ष्मता पूर्वक व्यवस्थित कर सके ।

बेशक आसमानों और ज़मीन के बनाने में और रात–दिन के हेर–फेर में यक़ीनन अक्ल वालों के लिए निशानियाँ हैं ।

क्या यह सब अपने–आप हो सकता है ?

और जब हम अपने शरीर के अन्दर के प्रणाली और सूक्ष्म सिद्धांत पर दृष्टि डालते हैं और संसार के कोना–कोना पर दृष्टि डालते हैं तो इस से यह पता चलता है कि इस प्रणाली को किसी ने बनाया है और इस प्रणाली के बनाने वाले की जो अच्छी व्याख्या है, अल्लाह का अस्तित्व जिस ने इस प्रणाली को संगठित किया ।

3. अल्लाह की ओर से गुप्तवाणी ।

और तीसरा उदाहरण जो अल्लाह के अस्तित्व पर तर्क प्रस्तुत करता है, वह सच्ची गुप्तवाणी है जिसे अल्लाह तआला (ईश्वर) ने मनुष्य की ओर अपने अस्तित्व पर प्रतीक स्वरूप भेजा है ।

और इस बात की बहुत से स्पष्ट उदाहरण हैं कि इस्लामी ग्रंथ कुर्आन है जो अल्लाह (ईश्वर) का कथन है । हम यहाँ पर कुछ उदाहरण देते हैं जो इस बात को बल प्रदान करती है ।

जब अल्लाह तआला ने लोगों के मार्गदर्शन के लिए किताब भेजा तो आवश्यक था कि इस में अल्लाह के अस्तित्व का स्पष्ट उदाहरण मौजूद हों ।

जब अल्लाह तआला ने लोगों के मार्गदर्शन के लिए किताब भेजा तो आवश्यक था कि इस में अल्लाह के अस्तित्व का स्पष्ट उदाहरण मौजूद हों ।

» कुर्आन करीम 1400 वर्ष पूर्व उतरा । इस के बावजूद इस में बहुत सी ऐसी वैज्ञानिक तथ्य विद्यमान हैं कि उस समय के लोगों को पता न था जिनका प्रकटन बाद में विज्ञान के द्वारा हुआ । और उसका कुछ उदाहरण ये हैं :

» समस्त संसार में प्रत्येक जीवित वस्तु का मूल पानी है (कुर्आन–करीम : सुरह अम्बिया आयत न0 21:30) दुनिया फैल रही है (कुर्आन–करीम : सुरह ज़ारियात आयत न0 51:47) सूरज और चाँद के लिए स्थायी रूप से अपनी–अपनी कक्षाएँ हैं जिस में वह परिक्रमा करते हैं । (कुर्आन–करीम : सुरह अम्बिया आयत न0 21:33)

» कुर्आन–करीम में बहुत सी ऐसी ऐतिहासिक तथ्य विद्यमान हैं जिसे उस युग के लोग नहीं जानते थे । और बाद के युग में लोगों ने उनकी सच्चाई को सिध्द कर दिया ।

» कुर्आन–करीम हर तरह की त्रुटियों और विरोधाभाषी शिक्षाओं से पवित्र है, उस में किसी प्रकार की विरोधाभाष नहीं, इसके अतिरिक्त कुर्आन–करीम धीरे–धीरे 23 वर्ष के लम्बे काल में अवतरित हुआ जबकि इस में बहुत सारे विभिन्न विषय पाए जाते हैं ।

CONTENTS

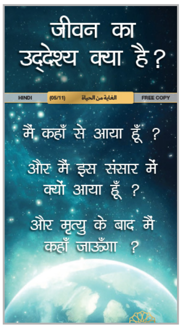

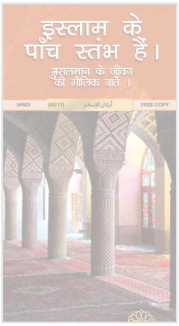

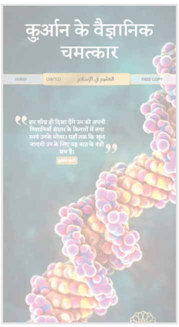

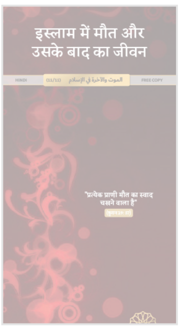

- » कुर्आन–करीम का एक–एक शब्द उसके अवतरित से ले कर अब तक अपनी असली भाषा में सुरक्षित है, जबकि दूसरी किताबें अपनी असल शक्ल (प्रारूप) में विद्यमान नहीं है ।
- » कुर्आन–करीम एक ऐसे साफ–सुथरा और स्पष्ट वैश्विक संदेश पर आधारित है जो कि अल्लाह तआला के बारे में मज़बूत चिंतन एवं आस्था को संबोधित करता है ।
- » कुर्आन–करीम का लोगों पर बहुत गहरा प्रभाव होता है जिस को वही अनुभव कर सकता जिसके हृदय ने उसकी मधुरता को चखा हो ।
- » कुर्आन–करीम मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर अवतरित हुआ, जो कि अनपढ़ थे, इस के बावजूद कुर्आन–करीम अरबी भाषा की (बेमिसाल) अभूतपूर्व फसाहत व बलागत (वाग्मिता) और श्रेष्ठ भाषा के लिए प्रसिध्द है ।

कुर्आन–मजीद की विशिष्टता और और उसकी फसाहत व बलागत और उसके चमत्कार की सब से बड़ा तर्क यह है कि यह अल्लाह की ओर से एक चमत्कार है ।

अल्लाह ही मार्गदर्शक है ।

और केवल इस स्वीकार से ही कि वह हमारा सृष्टिकर्ता है, जिस ने हमें पैदा किया और वह बड़ा विवेकशील है, हमें पता है कि वह हमें इस बात की मार्गदर्शन करेगा कि उस ने हमें क्यों पैदा किया ?

किस तरह हम यह पता कर सकते हैं कि अल्लाह तआला (ईश्वर) क्या चाहता है ? क्या हम एक व्यवहारिक एवं उद्देश्यहीन जीवन व्यतित कर रहे हैं या हम व्यक्तिगत उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए प्रयास कर रहे हैं ? या हम बहती हुई वायू की दिशा में चल कर लोगों का अनुसरण कर रहे हैं ?

बिल्कुल नहीं – अल्लाह तआला (ईश्वर) ने अपने रसूल (दूत) भेजे और किताबें अवतरित की, ताकि हमारे लिए यह स्पष्ट हो सके कि हमें क्यों पैदा किया गया ।

अल्लाह तआला (ईश्वर) ने हज़ारों दूत भेजे और प्रत्येक समुदाय में कम से कम एक दूत अवश्य भेजा । और सभी नबी (संदेष्टा) एक ही संदेश को ले कर आए वह यह कि केवल एक ईश्वर की ईबादत (पूजा) करो और उसके आज्ञा का पालन करो ।

और उन्हीं अवतारों में से आदम, नूह, इब्राहीम, मूसा, ईसा और मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं ।

और मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अवतारों के क्रम की अंतिम कड़ी हैं, और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सभी मनुष्य में सब से अधिक विश्वसनीय, न्याय करने वाले, दयालु और वीर थे ।

और सब से अंतिम गुप्तवाणी जो ज़मीन वालों के तरफ भेजी गई वह कुर्आन है ताकि आप लोगों से वर्णन कर दें जो उनकी तरफ अवतरित हुआ है ताकि वह लोग डरें ।

कुर्आन–करीम लोगों के लिए मार्गदर्शन की किताब है, और बहुत से ऐसे अर्थ को स्पष्ट करता जो सारी मनुष्यता को आश्चर्य चकित कर दिया है । उदाहरण के रूप में : हमारी जीवन का उद्देश्य ? अल्लाह (ईश्वर) कौन है ? और वह किन कर्मों को पसंद करता है ? और वह कौन से कार्य हैं जो उसे पसंद नहीं हैं ? और नबियों (अवतारों) की कहानियाँ और उस में विद्यमान शिक्षा एवं उपदेश , स्वर्ग–नर्क और प्रलय की खबरें ।

और कुर्आन–करीम उन असत्य कल्पनाओं एवं आस्थाओं को संशोधन भी करता है जो अल्लाह तआला के बारे में पाई जाती हैं । जैसे कि ईसा अलैहिस्सलाम की वास्तविकता क्या है ? उनका युग क्या था ? और उनका यह मान्यता कि क्या वह अल्लाह तआला के समान अधिकार एवं शक्ति रखते हैं ।

> दूसरे अवतारों के जैसा ईसा अलैहिस्सलाम के हाथों भी चमत्कार प्रकट हुए, और उन्होंने भी लोगों को एक अल्लाह की ईबादत की तरफ बुलाया ।
> (सूरतु मरियम 19:36)

CONTENTS

ईसा मसीह अलैहिस्सलाम की वास्तविक्ता ।

> *इस्लाम धर्म में अल्लाह के अर्थ को व्याख्या के लिए ईसा अलैहिस्सलाम की वास्तविक्ता को स्पष्ट करना अति आवश्यक है, यह इस कारण से क्योंकि उनके बारे में बहुत से संदेह और भ्रांतियाँ (परोपगंडे) बड़े पैमाने पर फैले हुए हैं ।*

कुछ ईसाईयों का यह दावा है कि "मसीह ही ईश्वर" हैं या वह तीन के तीसरे हैं, और यह कि धरती पर वह अल्लाह का रूप धारण किए हुए हैं, और यह भी मान्यता है के वह मनुष्य की रूप में अल्लाह (ईश्वर) हैं ।

लेकिन जब हम ईसाईयों की किताब पवित्र ग्रंथ बाइबिल पर दृष्टि डालते हैं तो यह पता चलता है कि ईसा (अलैहिस्सलाम) पैदा हुए । वह खाते–पीते, सोते और नमाज़ें भी पढ़ते थे, और उनके पास कोई ऐसा ज्ञान भी नहीं था जो कि सभी ज्ञान को घेरे हुए हों । और यह गुण अल्लाह (ईश्वर) के प्रतिष्ठा के अनुकूल नहीं हैं ।

अल्लाह तआला की सभी विशेषताएँ पूर्ण हैं जब कि मनुष्य की सभी विशेषताएँ अपूर्ण (आधे–अधूरे) हैं, तो मनुष्य एक ही समय में उस की दो योग्यताएँ कैसे हो सकती हैं ? एक पूजक दूसरा ईश्वर, यह बात बुद्धि के विपरित है ।

इस के अतिरिक्त कुछ लोग प्रश्न करते हैं कि "जब अल्लाह तआला प्रत्येक वस्तु के लिए सर्वशक्तिमान हैं तो वह मनुष्य क्यों नहीं हो सकता ?

उपर्युक्त कथनों के प्रकाश में यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि वास्तविक ईश्वर अईश्वरीय कार्य नहीं करता है ।

इसी कारण से वास्तविक ईश्वर मनुष्य नहीं हो सकता । और जो मनुष्यों के गुण एवं विशेषताएँ रखता हो वह ईश्वर (माबूद) नहीं हो सकता ।

इस के अतिरिक्त ईसाइयों की पवित्र ग्रंथ में असंख्य ऐसी आयात (श्लोक) हैं जिस में ईसा (अलैहिस्सलाम) अल्लाह के दासों जैसी बातें और उन्हीं जैसे काम करते हैं और यह कि अल्लाह तआला उन से अलग और भिन्न हैं ।

उदाहरण के तौर पर इंजील मता अल–इसहाह (मैथ्यू) पृष्ठ न0:26:39 में है " अर्थात वह अपने सिर को ज़मीन पर टेक दिए " ।

जब ईसा अलैहिस्सलाम माबूद (ईश्वर) हैं तो क्या माबूद अपने सिर को सजदा करने के लिए झुकाएँगे ? और वह कौन थे जिनके लिए वह सजदा करते ?

कुछ ईसाई यह दावा करते हैं कि ईसा (अलैहिस्सलाम) अल्लाह के बेटे हैं ।

हम अपने–आप से प्रश्न करें कि निश्चित रूप से इसका क्या अर्थ है ? सुनिश्चित रूप से अल्लाह (ईश्वर) का व्यक्तित्व तो उस से बहुत उच्च है कि इस का कोई भौतिक पुत्र हो ।

इस के अतिरिक्त हम देखते हैं कि तौरात के प्राचीनतम भाषा में "इब्नुल्लाह" सांकेतिक रूप से नेक भक्तों के लिए प्रयोग किया जाता है ।

प्राचीन काल के बहुत से श्लोकों में नेक भक्तों के लिए शब्द "इब्नुल्लाह" प्रयोग किया गया है । उदाहरण : दाऊद, सुलैमान और इसराईल अलैहिमुस्सलाम के बारे में, और यह शब्द केवल ईसा अलैहिस्सलाम के लिए ही प्रयोग नहीं किया गया है ।

और इस का एक उदाहरण अल्लाह (ईश्वर) का यह आदेश है : "इसराईल मेरा पहला बेटा है" (सफ़रूलखुरूज– 04:22)

> *कुर्आन में अल्लाह तआला (ईश्वर) ने फरमाया : " अल्लाह तआला (ईश्वर) के लिए शोभनीय नहीं है कि वह अपने लिए संतान बनाए, उसकी ज़ात तो पाक है" ।*
> *सूरतु मरियम 19:35*

इस्लामी आस्था ईसा (अलैहिस्सलाम) की वास्तविक्ता को बयान करता है कि वह कौन थे ?

हालाँकि (यद्यपि कि) अल्लाह के बारे में सही आस्था रखना कि अल्लाह तआला का व्यक्तित्व पवित्र है, वह गौरवशाली है, वह प्रत्येक दोष से पवित्र है और वह अकेला है ।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम एक प्रिय अवतार थे । अल्लाह तआला ने उन्हें इस लिए भेजा कि वह लोगों को एक अल्लाह की पूजा की ओर बुलाएँ ।

फिर मैं यहां क्यों हूँ ?

सभी लोग इस बात को स्वीकार करते हैं कि शरीर के विभिन्न अंग, जैसे आँख, कान, मस्तिष्क, दिल इन सब का एक विशेष उददेश्य है । क्या इस से यह बात स्पष्ट नहीं होती कि सामहिक

CONTENTS

इस्लाम का परिचय

मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का परिचय ।

ईश्वर (माबूद) का अर्थ इस्लाम में

क़ुर्आन

जीवन का उद्देश्य क्या है?

इस्लाम के बारे में गलतफहमियाँ

इस्लाम में महिलाओं के अधिकार

इस्लाम के पाँच स्तंभ हैं।

इस्लाम धर्म क्या है ?

क़ुर्आन के वैज्ञानिक चमत्कार

इस्लाम में मौत और उसके बाद का जीवन

निःसंदेह अल्लाह तआला (ईश्वर) बहुत विवेकशील है । उस ने हमें यूँ ही बिना उद्देश्य के पैदा नहीं किया कि हम इस संसार में खाएँ–पीएँ और शादी–ब्याह करें और हम अपनी इच्छाओं को पूरा करें ।

बल्कि हमारे लिए इस से कहीं अधिक उच्च उद्देश्य है, और वह उद्देश्य यह है कि है कि हम अल्लाह तआला के अस्तित्व को स्वीकार करें और केवल अल्लाह (ईश्वर) की पूजा करें ताकि हमारे लिए यह संभव हो सके कि हम अपने सृष्टिकर्ता के आदेश के अनुसार जीवन व्यतित कर सकें और उसका मार्गदर्शन पा सकें । और अल्लाह (ईश्वर) की यह मार्गदर्शन हमें जीवन के सभी भागों में सफल और अच्छी जीवन बिताने के योग्य बना देगी ।

और अल्लाह (ईश्वर) का यह निर्देश और मार्गदर्शन विभिन्न प्रकार के व्यक्तिगत एवं समाजिक पूजा (ईबादत) पर आधारित है जैसे नमाज़, जिसका लाभ भक्त को व्यक्तिगत रूप से मिलता है जैसे हार्दिक शांति एंव सुख–चैन और परलोक में इस पर अल्लाह तआला पुण्य का भागीदार बनाएगा और समाज को जो लाभ होता है वह है पड़ोसियों के साथ अच्छा व्यवहार, खानदान के लोगों की देख–भाल, विश्वसनीयता, यहाँ तक कि जानवरों के साथ भी अच्छा व्यवहार करने को कहा गया है ।

अल्लाह तआला (ईश्वर) ने हम को अपने अलावा किसी की भी पूजा से मना किया है । चाहे वह कोई भी हो, जैसे : मूर्ति, सूरज, चाँद, धार्मिक पेशवा या और कोई दूसरा यहाँ तक कि अवतार भी, और अल्लाह तआला (ईश्वर) को किसी साझेदार, पैरवी एवं माध्यम की आवश्यकता नहीं है बल्कि अल्लाह तआला (ईश्वर) की विशुध्द पूजा के माध्यम से प्रत्येक मनुष्य उस तक सरलतापूर्वक पहुँच सकता है ।

अल्लाह तआला (ईश्वर) ने इस जीवन को लोगों की परीक्षा का माध्यम बनाया है और उस परीक्षा के विभिन्न स्वरूप हैं ।

हमारे लिए जो भी स्थिति पैदा हो रहे हैं हम उसे नियंत्रित नहीं कर सकते, लेकिन हम अपने कर्मों के प्रभाव पर नियंत्रण रख सकते हैं । उन कारणों में से एक कारण दुःख मुसीबत आने पर धैर्य रखना और वरदान प्राप्त होने पर धन्यवाद कहना है, जो अल्लाह (ईश्वर) से निकटता का स्रोत और स्वर्ग में प्रवेश का कारण है, और अल्लाह (ईश्वर) ने हमें अधर्म के मार्ग पर चलने और उसकी अवज्ञाकारी करने की दशा में नर्क की आग की धमकी दी है ।

तो अब मुझे क्या करना चाहिए ?

मनुष्य के ईमान (धर्म) की पहचान यह है कि बुद्धि को चिंतन के लिए प्रयोग करे, अल्लाह (ईश्वर) के अस्तित्व के तर्कों को समझे, और जिस कार्य को करने और जिस से रूकने का आदेश दिए हैं उसके अनुसार जीवन व्यतित करे, और यह बात अल्लाह (ईश्वर) के आदेश के सामने सिर झुका कर स्वीकार करने के माध्यम से हो सकती है ।

और अरबी भाषा में इसका अर्थ यह है कि आप मुसलमान हो जाएँ ।

और अल्लाह तआला ने इस्लाम को प्रत्येक के लिए प्राप्त करना सरल बनाया है, इस बात की परवाह न करते हुए कि उस मनुष्य का इतिहास, उसकी आस्था और उसका वर्तमान दशाएँ क्या हैं ?

इस तरह से प्रत्येक मनुष्य के लिए बड़ी सरलता से मुसलमान होना संभव है, निम्नलिखित गवाही को मुख से पढ़ कर और उसकी बातों को हृदय से स्वीकार कर एवं उस पर आस्था व विश्वास रख कर के । " अशहदो अल्ला इलाह इल्लल्लाहू व अशहदो अन्ना मोहम्मदन अ़बदुहू व रसूलुहू" ।

जिस का अर्थ है कि " मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह (ईश्वर) के सिवा कोई पूज्य नहीं और मैं गवाही देता हूँ कि मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह (ईश्वर) के अवतार हैं " ।

क्या अब भी वह समय नहीं आया कि आप इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए प्रयास करें और सच्चाई को स्वीकार करें और सृष्टिकर्ता के अस्तित्व को स्वीकार करें, जिसके लिए आपको पैदा किया गया है ।

CONTENTS

इस्लाम का परिचय

मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का परिचय

ईश्वर (माबूद) का अर्थ इस्लाम में

कुर्आन

जीवन का उद्देश्य क्या है ?

इस्लाम के बारे में गलतफहमियाँ

इस्लाम में महिलाओं के अधिकार

इस्लाम के पाँच स्तंभ हैं।

इस्लाम धर्म क्या है ?

कुर्आन के वैज्ञानिक चमत्कार

इस्लाम में मौत और उसके बाद का जीवन

इस्लाम के बारे में गलतफहमियाँ

HINDI (06/11) مفاهيم خاطئة حول الاسلام FREE COPY

इस्लाम के बारे में वास्तविक रूप से आप क्या जानते हैं ?

جمعية دار البر
Dar Al Ber Society
www.daralber.ae

الإمارات
THE EMIRATES

Your Path To Peace..

مركز المعلومات الإسلامي
Islamic Information Center
للتعريف بالإسلام

تصريح رقم:
(2017/139)

دائرة الشؤون الإسلامية والعمل الخيري
Islamic Affairs & Charitable Activities Department

www.islamicic.com

CONTENTS

यद्यपि (हालाँकि) इस्लाम संसार के बड़े धर्मों में से एक है तथापि (फिर भी) यह सबसे अधिक गलत धारणा वाला धर्म है । संचार एवं प्रसार के राजनीतिक, आर्थिक एवं साम्प्रदायिक माध्यम अथवा अन्य लोगों का भय आदि के कारण इस्लाम के बारे में गलत बयानी और गलतफहमियाँ फैली हुई हैं ।

इस्लाम और मुस्लिम को समझने के लिए कुंजी, घिसे–पिटे दकियानूसी विचारों का विरोध करना और हर हालत (दशा) का इस्लामिक शिक्षाओं एवं विश्वसनीय स्रोतों के द्वारा जाँच पड़ताल करना है ।

1. गलत अवधारणा (गलतफहमी) मुसलमान लोग अच्छे और उच्च (उदार) मूल्यों की साझेदारी गैर मुसलमानों के साथ नहीं करते है ।

कुछ लोग दोषारोपण करते हैं कि इस्लाम के विचार (मूल्य) पश्चिमी शालीन मूल्यों के विपरित एवं असंगत है । उनका यह दावा सत्य एवं न्याय से परे है । क्योंकि मुसलमान लोग उच्च एवं व्यापक मूल्यों का पालन करते हैं । उदाहरण स्वरूप :

अल्लाह के दूत मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कथन है : "तुम में से सबसे अच्छा आदमी वह है जिनके आचरण एवं चरित्र सबसे अच्छे हैं " । (अहमद : 24204)

» ईमानदार एवं न्याय प्रिय होना ।

» वादा को पूरा करना ।

» विचारों की स्वतंत्रता देना ।

» माता–पिता संबंधियों, पड़ोसियों एवं वृद्धों को आदर देना ।

» दानी, उदार होना और निर्धन एवं ज़रूरतमंदों की देख–रेख करना ।

» अपने पड़ोसियों का देखभाल करना एवं उनके साथ अच्छा व्यवहार करना ।

» झूठ न बोलना, धोखा न देना, झूठी कसमें न खाना ना ही किसी की बुराई एवं निंदा करना ।

मुसलमानों को अपने समाज में सकरात्मक सोच के साथ अंशदान करने की आवश्यक्ता है और हमेशा स्वयं को उच्च आचरण, नैतिकता एवं श्रेष्ठ कर्मों से सुसज्जित रखें ।

2.गलत अवधारणा (गलतफहमी)

नि:संदेह मुसलमान उस माबूद (ईश्वर) की ईबादत (उपासना) करते हैं जिसकी ईबादत (उपासना) नूह, इब्राहिम, मूसा एवं ईसा अलैहिस्सलाम जैसे नबियों ने उनसे पहले की ।

"मुसलमान एक नए माबूद (ईश्वर) की ईबादत (उपासना) करते हैं जिसका नाम अल्लाह है" ।

"अल्लाह" शब्द सर्वशक्तिमान ईश्वर के लिए एक अरबी शब्द है जो अत्यंत अर्थपूर्ण है और केवल एक ईश्वर (अल्लाह) को संबोधित करता है ।

"अल्लाह" वही शब्द है जिसके द्वारा अरबी बोलने वाले इसाई एवं यहूदी लोग अपने रब (सृष्टिकर्ता) को संबोधित करते हैं ।

हालाँकि (यद्यपि) मुसलमान यहूदी एवं ईसाई उसी एक अल्लाह पर आस्था रखतें हैं लेकिन उसके संबंध में उनकी मान्यताएँ बिल्कुल भिन्न हैं । उदाहरण स्वरूप :

मुसलमान इस विचार को कि अल्लाह (ईश्वर) का कोई साझेदार है या यह कि वह तीन के तीसरे हैं, सिरे से अस्वीकार करते हैं । और प्रत्येक प्रकार के गुण एवं परिपूर्णता को केवल सर्वशक्तिमान अल्लाह ही के लिए समझते हैं ।

CONTENTS

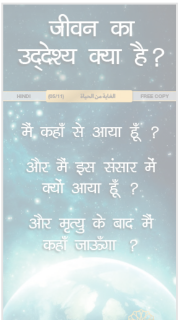

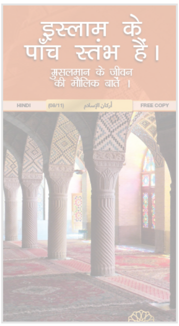

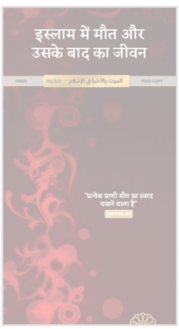

3.गलत अवधारणा (गलतफहमी) ''इस्लाम आतंकवाद की अनुमति देता है'' ।

सामान्य रूप से मीडिया प्रत्येक जिहाद करने वाले को आतंकवादी मानते हैं और इस बात की परवाह बिल्कुल नहीं करते है कि वह अधिकार (हक़) के लिए लड़ रहा है या अनुचित लड़ रहा है । वह दूसरों पर अत्याचार कर रहा है या उस पर अत्याचार हो रहा है । युद्ध में निर्दोष और युद्ध में भाग नहीं लेने वाले को निशाना बनाना एक घृणित कार्य है जिसे इस्लाम सख्ती से रोकता है । हक़ीक़त तो यह है कि इस्लाम अनावश्यक पेड़–पौधों और पशुओं को नष्ट करने की अनुमति भी नहीं देता, निर्दोष व्यक्तियों को मारने की बात तो दूर की है । अतः हमारे लिए यह आवश्यक है कि हम आतंकवाद और युद्ध के मध्य विभेद को समझे, क्योंकि ये दोनों एक दूसरे से बिल्कुल भिन्न है ।

कुर्आन–मजीद खुल्लम–खुल्ला किसी निर्दोष व्यक्ति की हत्या की गंभीरता पूर्वक विरोध करता है और मानव जीवन के मूल्य को महत्तव देता है ।

''यदि कोई व्यक्ति किसी एक निर्दोष व्यक्ति की हत्या कर देता है तो यह उसी प्रकार है जैसे कि उसने सारी मानवता की हत्या कर दिया और यदि कोई व्यक्ति किसी एक व्यक्ति की जान को बचाता है तो यह ठीक उसी प्रकार है जैसे उसने सारी मानवता का जीवन बचाया''
(कुर्आन 5:32)

4.गलत अवधारणा (गलतफहमी) इस्लाम स्त्रियों पर अत्याचार करता है ।

इस्लाम में पुरस्कार पाने अथवा अपने कर्मों का लेखा–जोखा देने की दृष्टिकोण से सभी पुरुष एवं स्त्रियाँ समान है । हाँ ! मगर अल्लाह (ईश्वर) के सामने किसी को विशिष्टता एवं वरीयता प्राप्त है तो केवल संयम के आधार पर ।

''निः संदेह अल्लाह (ईश्वर) की दृष्टिकोण से तुम में से सबसे सम्मानित एवं प्रिय वह व्यक्ति है जो सब से अधिक संयम वाला है'' ।
(कुर्आन 49:13)

अल्लाह (ईश्वर) जो पुरुष एवं स्त्री दोनों का सृष्टिकर्ता है, प्रत्येक को भिन्न–भिन्न रोल एवं ज़िम्मेदारियाँ सौंपी है जो उनके स्वभाव और बुद्धि के अनुकूल है, जिनमें उनका लेखा–जोखा उनके योग्यता के अनुसार होगा ।

इस्लाम ने स्त्रियों को सर्वाधिक आदर एवं सम्मान प्रदान किया है । उदाहरण स्वरूप : समान वेतन का अधिकार, अपने पति को पसंद अथवा नापसंद करने का अधिकार, शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार और तलाक एवं विरासत का अधिकार ।

इस श्लोक (आयत) से सिद्ध होता है कि किसी भी पुरुष एवं स्त्री को वास्तविक आदर एवं स्थान धनी अथवा निर्धन, काला अथवा गोरा, पुरुष एवं स्त्री के आधार पर नहीं बल्कि केवल ईश्वर भक्ति एवं भक्ति में सच्चा होने के आधार पर है ।

दुर्भाग्यवश आज कुछ मुस्लिम स्त्रियाँ प्रताड़ित हो रही हैं और उनको उचित अधिकार नहीं मिल रहा है । इसमें इस्लाम का कोई दोष नहीं है बल्कि कुछ देशों में ऐसे लोग है जो समाज के ऐसे संस्कृति का पालन करते है जिसका इस्लाम से कोई संबंध नहीं है और यह उसी का परिणाम है ।

CONTENTS

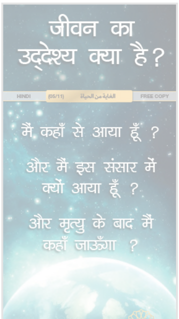

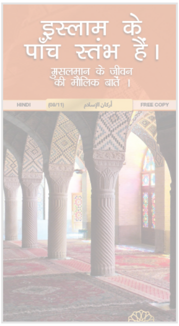

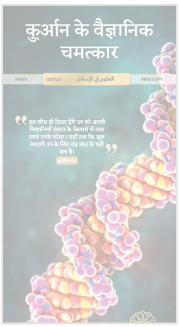

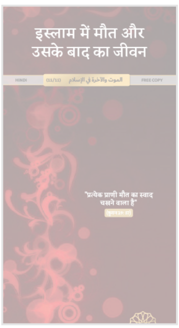

5.गलत अवधारणा (गलतफहमी) कुर्आन केवल इतिहास अथवा कविता (शेर व शायरी) की किताब है ।

कुर्आन–करीम वास्तव में दैवीय (अल्लाह के) शब्द हैं जिसे उसने अपने दूत जिब्रईल के माध्यम से मोहम्मद सल्लल्लाहुअलैहि व सल्लम पर अवतरित किया है और वह सत्य एवं असत्य के मध्य विभेद करने वाला है और मार्गदर्शन के ऐसे सिद्धांतों पर आधारित है जिसके द्वारा पूरी मानवता मुक्ति पा सकती है और कुर्आन पूर्व के संदेष्टाओं एवं समुदायों के जीवन से संबंधित शिक्षाओं एवं सीख का मिश्रण है ताकि हम लोग उन समुदायों और उन की कहानियों से सीख प्राप्त करें और लाभ उठा सके । कुर्आन–करीम हमें वास्तविक सृष्टिकर्ता अल्लाह और हमारे अस्तित्व की वास्तविकता से परिचित कराता है, और हमें हमारे अस्तित्व के उद्देश्य को बताता है और उस सिद्धांत का नेतृत्व करता है जो केवल अल्लाह के एकेश्वर वाद को सिद्ध करे ।

निःसंदेह कुर्आन जिसकी तरफ निमंत्रण देता है और बुलाता है उसकी खोज के लिए सर्वश्रेष्ठ सिद्धांत यह है कि मनुष्य स्वयं उसका अध्ययन करें ।

अल्लाह (ईश्वर) ने मनुष्यों को बेकार पैदा नहीं किया है और न ही बिना उद्देश्य के छोड़ा है । भक्तों के ईमान एवं आस्था का परीक्षण वास्तविक ईश्वर (सृष्टिकर्ता) का माध्यम और उसकी तरफ मार्ग प्राप्त करने के लिए प्रत्येक सत्य एवं सही विवेक का प्रयोग करने और उस की सृजित निशानियों के चिंतन में है ताकि हमारे लिए सच्चाई (हक) स्पष्ट हो जाए और सबसे बड़ी निशानी उसका अवतरित कुर्आन है ।

कुर्आन अपने अन्दर प्रामाणिकता एवं बहुत से चमतकार समोए हुआ है ताकि हम इसकी प्रामाणिकता एवं पवित्रता में संदेह न करें ।

6.गलत अवधारणा (गलतफहमी) :– परदा का प्रयोग अन्यायपूर्ण एवं अत्याचारपूर्ण है ।

परदे के प्रयोग का आदेश मुस्लिम स्त्रियों को दिया गया है ताकि वह पवित्रता के साथ अपने शरीर को वस्त्रों से पूर्णतः ढ़ंके रखे जिस से कि उनका रंग व रूप दूसरे अपरिचित पुरूषों के सामने स्पष्ट न हो ।

यद्यपि परदा का संबंध केवल बाहरी रंग व रूप से नहीं है बल्कि इसका संबंध अच्छी बोली, विनम्रता एवं सुशील व्यवहार से भी है ।

यद्यपि परदे का बहुत से फायदे हैं लेकिन परदे का पालन स्त्रियाँ केवल इसलिए करती हैं कि यह अल्लाह (ईश्वर) का आदेश है और वह भली–भाँति जानता है, उसके भक्तों के लिए क्या श्रेष्ठ है ।

निःसंदेह परदा स्त्री को उसकी स्पष्ट और उपरी रंग–रूप की अपेक्षा उसकी आंतरिक एवं आत्मिक सुंदरता पर बल देकर शक्ति प्रदान करता है और यह स्त्री को स्वतंत्रता देता है कि वह अपनी लज्जा एवं विनम्रता की रक्षा के साथ समाज का सक्रिय सदस्य बनें ।

निश्चित रूप से परदा दमन, उत्पीड़न एवं अत्याचार का प्रतीक नहीं है बल्कि यह हवस की तीव्र दृष्टि और बुरी गंदी दृष्टि से बचने का स्त्रियों का रक्षक है । इसके अतिरिक्त यह उन्हें स्वार्थी, अनचाहे एवं अनुचित इच्छाओं से सुरक्षित रखता है । अतः अगली बार जब तुम एक मुस्लिम स्त्री को देखोगे तो तुम्हारे सामने यह बात स्पष्ट हो जाएगा कि वह अपनी शारीरिक रंग–रूप को ढ़ाँकती है न कि अपने दृष्टि (जेहन) एवं बुद्धि को ।

CONTENTS

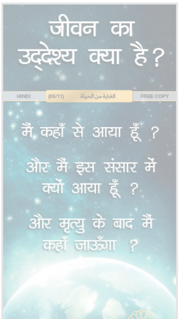

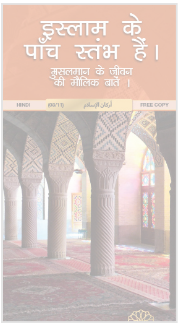

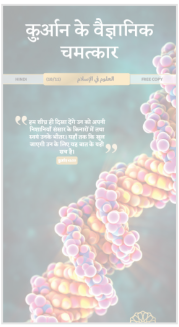

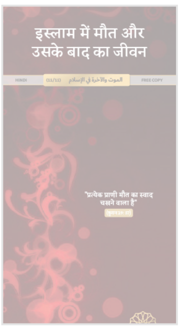

7.गलत अवधारणा (गलतफहमी) :– सभी मुसलमान अरबी हैं ।

इस्लाम की शिक्षा है कि हमलोग सभी नबियों एवं रसूलों (दूतों एवं संदेष्टाओं) का आदर एवं सम्मान करें लेकिन उनकी आदर एवं सम्मान का अर्थ यह नहीं है कि हमलोग उनकी उपासना (ईबादत) करें ।

वास्तविक रूप से यह बात सत्य नहीं है बल्कि विश्व के केवल लगभग 20: मुसलमान ही अरबी है, शेष लगभग 80: मुसलमान गैर अरबी हैं । उदाहरण स्वरूप : हिन्दी और इंडोनेशियन मुसलमानों की संख्या अरब मुसलमानों से भी अधिक है । इस्लाम की शिक्षा है कि कोई व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से रंग, नस्ल एवं निवास के आधार पर श्रेष्ठ नहीं है बल्कि इस्लाम नस्लवाद के इस भेदभाव का कठोरतापूर्वक विरोध एवं निंदा करता है । इस्लाम पूरी मानवता के लिए एक विश्वव्यापक संदेश है । अर्थात यह कि प्रत्येक व्यक्ति शांति एवं सफलता केवल एक वास्तविक एवं सच्चे ईश्वर (अल्लाह) को मानकर एवं उसकी उपासना (इबादत) करके प्राप्त कर सकता है ।

8.गलत अवधारणा (गलतफहमी) :– जेहाद ही आतंकवाद है ।

जेहाद का असल अर्थ अपने धर्म की रक्षा के लिए संघर्ष करना एवं अपने आप को बलिदान कर देना जिससे कि ईश्वर (अल्लाह) प्रसन्न हो जाए । भाषा के रूप में इसका अर्थ संयम एवं धैर्य के साथ अच्छे कार्यों के लिए, अच्छे ढंग से संघर्ष करना है । इसका व्यापक अर्थ अपनी ज़बान, दिल, शरीर के प्रत्येक अंग, आत्मा, इच्छाओं, शैतान और काफिरों से संघर्ष करना है ।

और जेहाद का सबसे सामान्य एवं प्रसिद्ध अर्थ फौजी जिहाद है जो समाज की सुरक्षा, अमन व शांति स्थापित करता है जो सत्य (हक) को साबित करने और अदालत व न्याय को शक्तिशाली बनाने के लिए होता है ।

9.गलत अवधारणा (गलतफहमी) :– मुसलमान मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम या चाँद की उपासना (इबादत) करते हैं ।

जहाँ तक पहली गलत अवधारणा की बात है कि मुसलमान लोग मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उपासना (इबादत) करते हैं तो यह सरासर गलत है और इसका खंडन मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इस वास्तविक कथन से स्पष्ट हो जाता है ।

"तुम लोग मेरी प्रशंसा, आदर व सम्मान हद से ज्यादा न करो जैसा कि ईसाइयों ने ईसा अलैहिस्सलाम का किया जो कि मरियम के पुत्र थे । मैं केवल ईश्वर (अल्लाह) का दास हूँ । अतः तुम लोग भी मुझे अल्लाह का दास और उसका संदेष्टा कहो" (सही बुख़ारी 3445)

यहाँ इससे संबंधित एक और दावा करते हैं कि मुसलमान "चन्द्रमा देवता" (चाँद) की पूजा करते हैं जो कि पूर्णतः असत्य है । हालाँकि इस्लाम में चाँद या सूरज की पूजा (ईबादत) करना अथवा अल्लाह (ईश्वर) के अतिरिक्त किसी भी दूसरी चीज़ की पूजा (ईबादत) करना कठोरतापूर्वक निषेध है ।

अल्लाह (ईश्वर) का वर्णन है : तुमलोग सूरज अथवा चाँद की सजदा (पूजा) ना करो बल्कि उस ईश्वर (अल्लाह) की सजदा (पूजा) करो जिसने उन्हें पैदा किया है यदि तुम लोग वास्तविक रूप से उसकी ईबादत (पूजा) करते हो । (कुर्आन 41:37)

इस्लाम अल्लाह के पूर्ण परिपूर्णता, महानता सर्वशक्तिमान, अद्वितीय को स्वीकार करता है जिसकी तुलना किसी भी वस्तु से नहीं की जा सकती है । वह सबसे न्यायी और सबसे दयावान है । इस्लाम के आस्था के अनुसार केवल उसी एक ईश्वर (अल्लाह) की उपासना (ईबादत) करना सबसे महत्पूर्ण है जैसा कि कुर्आन में कई जगह वर्णित है ।

CONTENTS

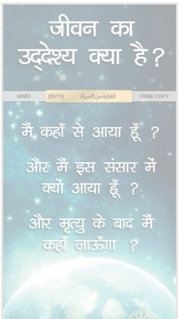

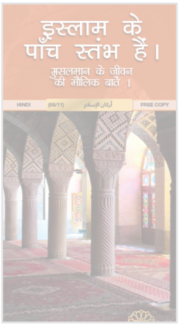

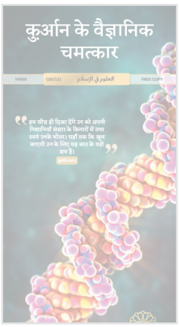

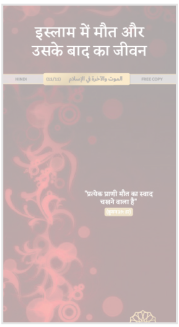

10.गलत अवधारणा (गलतफहमी) :– इस्लाम बलपूर्वक शादी की अनुमति देता है ।

आयोजित शादी (अरेंज्ड मैरेज) एक सांस्कृतिक रीति–रिवाज है जो पूरे विश्व के विभिन्न देशों में प्रभावी (चलन में) है । यद्यपि यह मुसलमानों तक सीमित नहीं है । फिर भी बलपूर्वक शादियों को गलत ढंग से इस्लाम के साथ जोड़ दिया गया है ।

इस्लाम में पुरूषों एवं स्त्रियों दोनों को संभावित पति या पत्नी को पसंद करने या नापसंद करने का अधिकार है । जैसा कि मोहम्मद सल्लल्लाहुअलैहि वसल्लम का वर्णन है : "विवाहित स्त्री अपने अभिभावक से अधिक अपने नफस (मर्जी) का मालिक है और कुँआरी (अविवाहित) स्त्री से अनुमति ली जाए और उसकी खामोशी, उसकी सहमति है " । (मुस्लिम : 1421)

11.गलत अवधारणा (गलतफहमी) :– इस्लाम लोगों को मुसलमान होने पर विवश (मजबूर) करता है ।

यद्यपि मुसलमानों का यह कर्तव्य है कि वह दूसरों को इस्लाम की तरफ बुलाएँ एवं इसलाम के अच्छे संदेशों को पूरे विश्व में फैलाएँ लेकिन किसी को भी इस्लाम स्वीकार करने पर मजबूर न करें ।

अल्लाह (ईश्वर) का वर्णन है "धर्म में कोई ज़ोर–जबरदस्ती (विवशता) नहीं है । सच्चाई बुराई से स्पष्ट हो चुकी है" । (कुर्आन 2:56)

इस्लाम को स्वीकार करने और इसका पालन करने के लिए किसी व्यक्ति को सच्चे दिल से दृढ़ विश्वास, स्वेच्छा और पूर्ण स्वतंत्रता के साथ तैयार होना आवश्यक है ।

अतः किसी के लिए संभव नहीं है कि वह इस्लाम को स्वीकार करने के लिए किसी को मजबूर करे या उस पर अत्याचार करें ।

निम्नलिखित बातों पर विचार करें :–

» इण्डोनेशिया में मुसलमानों की जनसंख्या सबसे अधिक है जबकि इस्लाम लाने के लिए वहाँ कोई युद्ध नहीं हुआ ।

» लगभग 14 मिलियन अरब मूल के ईसाई हैं जो सदियों से मध्य अरब के टापू पर रह रहे हैं ।

» आज पूरे संसार में इस्लाम सब से तीव्र गति से फैलने वाला धर्म है ।

» यद्यपि दमन, अत्याचार, उत्पीड़न की जंग लड़ाईयों की मुहिम चलाने और जेहाद कायम करने के लिए उचित माध्यम स्वीकार किए जाते हैं, परंतु इस्लाम इन में से किसी को भी जायज़ एवं उचित नहीं समझता है।

» मुसलमानों ने स्पेन पर लगभग 800 वर्षों तक शासन किया फिर भी लोगों को अपना धर्म बदलकर इस्लाम स्वीकार करने के लिए वहाँ के लोगों को मजबूर नहीं किया ।

निष्कर्ष :–

निःसंदेह बिना जाँचपड़ताल एवं बिना परीक्षण के अविश्वसनीय एवं अयोग्य स्रोतों से इस्लाम का सीखना अत्यंत खतरनाक है जो मनुष्य को भ्रम, संदेह एवं गलत अवधारणाओं की ओर ले जाता है । इसलिए हमें चाहिए कि इस्लाम के संबंध में इस तरह के अफवाहों एवं गलतअवधारणाओं के माध्यम से भ्रम में न पड़ें जब तक कि उसकी सत्यता का परीक्षण असली एवं सही माध्यमों से सिद्ध न हो जाए । अतः यह धर्म जिसे धरती के एक चौथाई भागों पर रहने वाले लोगों ने स्वीकार किया है, संभव नहीं है कि वह इस प्रकार के कार्य करें जिसे मीडिया के लोगों ने इस्लाम के संबंध में स्थापित किया है ।

इस्लाम अमन शांति एवं दया का धर्म है तो क्या इस्लाम का संदेश पूरी मानवता के लिए मार्गदर्शन का कारण नहीं है ? अतः इस बात की आवश्यक्ता है कि इस पर सावधानीपूर्वक चिंतन एवं गंभीरतापूर्वक विचार किया जाए ।

CONTENTS

इस्लाम का परिचय

मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का परिचय ।

ईश्वर (माबूद) का अर्थ इस्लाम में

क़ुर्आन

जीवन का उद्देश्य क्या है?

इस्लाम के बारे में गलतफहमियाँ

इस्लाम में महिलाओं के अधिकार

इस्लाम के पाँच स्तंभ हैं।

इस्लाम धर्म क्या है ?

क़ुर्आन के वैज्ञानिक चमत्कार

इस्लाम में मौत और उसके बाद का जीवन

इस्लाम में महिलाओं के अधिकार

HINDI | (07/11) حقوق المرأة في الإسلام | FREE COPY

एक आदरणीय, प्रिय सम्मान

मूल बातें जानें

جمعية دار البر
Dar Al Ber Society
www.daralber.ae

الإمارات
THE EMIRATES

Your Path To Peace..

مركز المعلومات الإسلامي
Islamic Information Center
للتعريف بالإسلام

تصريح رقم:
(2017/139)

دائرة الشؤون الإسلامية والعمل الخيري
Islamic Affairs & Charitable Activities Department

www.islamicic.com

CONTENTS

परिचय

ऐसा माना जाता है कि इस्लाम में महिलाओं को गुलाम बनाया जाता है, अपमानित किया जाता है और उन पर अत्याचार किया जाता है, लेकिन क्या सच में ऐसा होता है? क्या लाखों मुसलमान बस गुलाम बने हुए लोग हैं, या ये ग़लतफ़हमियाँ पक्षपाती मीडिया द्वारा गढ़ी गई हैं?

> **औरतों के भी वैसे ही हक़ हैं जैसे उन पर मर्दों के हैं अच्छाई के साथ**
> (क़ुर्आन 2:288)

चौदह शताब्दियों से भी ज़्यादा समय से, इस्लाम ने महिलाओं को वे अधिकार दिए हैं जिनका पश्चिमी देशों की महिलाओं को हाल ही में आनंद मिला है। 1930 के दशक में, एनी बेसेंट ने इस तथ्य पर ध्यान दिया कि: "इंग्लिश चर्च ने महिलाओं को संपत्ति रखने के अधिकार को मान्यता दी, जबकि इस्लाम ने हर युग में उनके लिए इस अधिकार को मान्यता दी है।

यह कहना निंदनीय है कि इस्लाम यह उपदेश देता है कि महिलाओं में कोई आत्मा नहीं होती" (मुहम्मद का जीवन और शिक्षाएँ, 1932) ।

सभी पुरुष और महिलाएं एक ही व्यक्ति, पैगम्बर आदम, की वंशज हैं और उन पर शांति हो, इस्लाम न्याय और अच्छे व्यवहार के अलावा पुरुषों और महिलाओं में से किसी से भी स्वीकार नहीं करता है।

सवाब और जिम्मेदारी में समानता

पुरुष और महिलाएं एक ही तरह से ईश्वर की पूजा करते हैं—अर्थात, वे एक ही ईश्वर (अल्लाह) की पूजा करते हैं, एक जैसे अनुष्ठान करते हैं, एक ही धर्मग्रंथों का पालन करते हैं और एक ही विश्वास रखते हैं।

ईश्वर (अरबी शब्द जिसका अर्थ है समस्त सृष्टि का एकमात्र सच्चा ईश्वर) सभी लोगों के बीच न्याय और इंसाफ निष्पक्षता से करता है, और कुरान कई आयतों में पुरुषों और महिलाओं के बीच निष्पक्ष व्यवहार और प्रतिफल पर ज़ोर देता है।

अल्लाह ने ईमान वाले पुरुषों तथा ईमान वाली स्त्रियों को ऐसे स्वर्ग का वचन दिया है जिनमें नहरी प्रवाहित होंगी। वह उसमें सदावासी होंगे, और अस्थाई स्वर्ग में पवित्र आवासों का।

(क़ुर्आन । 9:72)

कि तुम में से किसी अमल करने वाले के अमल को चाहे वह मर्द हो या औरत में कभी बेकार नहीं करता।

(क़ुर्आन 3:195)

क़ुरआन की आयतें हमें बताती हैं कि सवाब व्यक्ति के कार्यों पर निर्भर करता है

CONTENTS

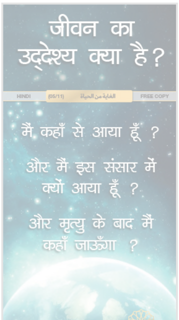

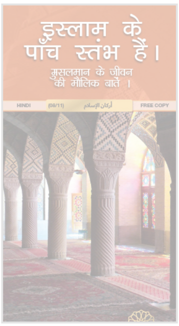

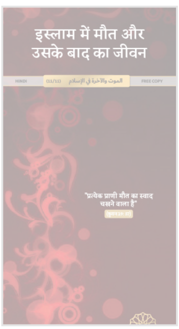

न कि उसके लिंग पर, क्योंकि लिंग किसी व्यक्ति को पुरस्कृत करने या उसके खिलाफ निर्णय जारी करने में कोई भूमिका नहीं निभाता है।

यदि जब हम इस्लाम की तुलना अन्य धर्मों से करते हैं, तो हम देखते हैं कि इस्लाम पुरुषों और महिलाओं के बीच न्याय प्रदान करता है।

उदाहरण के लिए, इस्लाम इस विचार को खारिज करता है कि हव्वा आदम से अधिक दोषी हैं क्योंकि उसने हराम वृक्ष का फल खाया था। बल्कि, इस्लाम के अनुसार: आदम और हव्वा ने पाप किया, इसलिए अल्लाह ने पश्चाताप किया और उन्हें माफ कर दिया।

ज्ञान और सछ में बराबरी का अधिकार

पुरुषों और महिलाओं को ज्ञान प्राप्त करने के लिए समान रूप से प्रोत्साहित किया जाता है। पैगंबर, मुहम्मद (उन पर शांतिहो,) ने कहा: "ज्ञान प्राप्त करना हर मुसलमान के लिए अनिवार्य है।"

पैगंबर पर शांति हो उन के समय में मुस्लिम महिला विद्वान भी थीं। उनमें से कुछ पैगंबर के परिवार से थीं, कुछ उनके साथियों या बेटियों में से थीं, और उनमें से सबसे प्रमुख पैगंबर की पत्नी आयशा थीं, जिन के माध्यम से शरिया का एक चौथाई प्रसारित किया गया है।

ऐसी अन्य महिलाएँ भी थीं जो न्यायविद और विद्वान थीं, और उनके छात्र प्रसिद्ध पुरुष विद्वान थे।

जीवनसाथी चुनने के अधिकार में समानता

इस्लाम महिलाओं को सम्मान देता है कि वे विवाह के बाद भी अपने कुलनाम को बरकरार रखते हुए अपना जीवनसाथी चुनने का अधिकार रखती हैं। इसके बावजूद, कई लोगों का मानना है कि पिता अपनी बेटियों को जबरन विवाह के लिए मजबूर करते हैं। हालाँकि, यह एक सांस्कृतिक प्रथा है जिसका इस्लाम में कोई आधार नहीं है और इस्लामी कानून द्वारा निषिद्ध है।

पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के ज़माने में एक महिला उनके पास आई और बोली, "मेरे पिता ने अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए मेरी शादी मेरे चचेरे भाई से कर दी थी, और मुझे मजबूर किया गया था।" पैगंबर ने लड़की के पिता को बुलवाया और अपनी मौजूदगी में लड़की को विकल्प दिया कि वह शादीशुदा रहे या शादी तोड़ दे। उसने जवाब दिया, "ऐ अल्लाह के रसूल, मैंने अपने पिता का फ़ैसला मान लिया है, लेकिन मैं दूसरी औरतों को यह दिखाना चाहती थी कि उन्हें शादी के लिए मजबूर नहीं किया जा सकता।"

CONTENTS

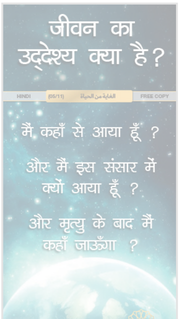

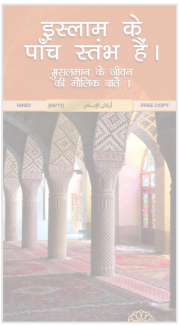

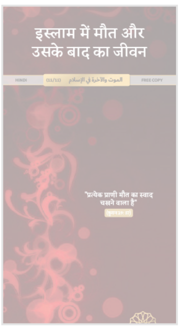

समान फिर भी भिन्न

जबकि पुरुषों और महिलाओं को एक सामान्य सिद्धांत के रूप में समान अधिकार प्राप्त हैं, उन्हें दिए गए विशिष्ट अधिकार और जिम्मेदारियां समान नहीं हैं।

पुरुषों और महिलाओं को पूरक रूप से अधिकार और जिम्मेदारियाँ हैं।

बाहरी और आंतरिक शारीरिक अंतरों के बावजूद, वैज्ञानिक जानते हैं कि पुरुषों और महिलाओं के मस्तिष्क के बीच भाषा, सूचना और भावनाओं को संसाधित करने के तरीके में कई अंतर हैं। यह उदाहरण के लिए है, लेकिन यहीं तक यह सीमित नहीं है।

हार्वर्ड विश्वविद्यालय के समाजशास्त्री एडवर्ड विल्सन कहते हैं:

बेशक महिलाएं मौखिक कौशल, सहानुभूति और सामाजिक कौशल में पुरुषों की तुलना में बेहतर होती हैं, जबकि पुरुष - अन्य बातों के अलावा - स्वतंत्रता, प्रभुत्व, स्थानिक और एथलेटिक क्षमताओं, स्थिति-संबंधी आक्रामकता और अन्य विशेषताओं में उच्चतर होते हैं।

जबके पुरुष और महिला के साथ एक जैसा व्यवहार करना और उनके मतभेदों को नज़रअंदाज करना नासमझी है। इस्लाम सिखाता है कि पुरुषों और महिलाओं की पूर रुप से भूमिकाएँ हैं लेकिन अलग-अलग हैं, यह उनकी प्रकृति के लिए अधिक उपयुक्त है।

अल्लाह कहता है:

> **और नर, नारी के समान नहीं होता।**
> कुर्आन 3:36

> **क्या वही ना जाने जिसने उत्पन्न किया? और वह सूक्ष्मदर्शक सर्व सूचित है?**
> कुर्आन 67:14

परिवार इकाई

ईश्वर ने स्त्री और पुरुष को अलग-अलग बनाया है, जिनकी भूमिकाएँ, कौशल और ज़िम्मेदारियाँ अलग-अलग हैं। इन भिन्नताओं को श्रेष्ठता या हीनता का प्रमाण नहीं, बल्कि विशेषज्ञता का प्रमाण माना जाता है। इस्लाम में, परिवार का केंद्रीय महत्व है। पुरुष परिवार की आर्थिक भलाई के लिए ज़िम्मेदार है, जबकि महिला परिवार की शारीरिक, शैक्षिक और भावनात्मक भलाई में योगदान देती है। इससे प्रतिस्पर्धा के बजाय सहयोग को बढ़ावा मिलता है। अपनी पारस्परिक ज़िम्मेदारियों को पूरा करके, एक मज़बूत परिवार और फिर एक मज़बूत समाज का निर्माण होता है।

इसके अलावा, भावनात्मक रूप से भी, न तो पुरुष और न ही महिलाएँ एक-दूसरे के बिना सुखी जीवन जी पाते हैं। अल्लाह ने इसे खूबसूरती से इस तरह बयान किया है:

> **वह तुम्हारा लिबास हैं और तुम उनके लिबास हो।**
> (कुर्आन 2:187

कपड़े आराम, गर्मी और सुरक्षा प्रदान करते हैं, साथ ही खुद को सुंदर बनाते हैं और अपनी खामियों को छिपाते हैं। इसी तरह पति-पत्नी के बीच का रिश्ता उजागर होता है, जहाँ एक-दूसरे के लिए आश्रय और शरणस्थली का काम करते हैं।

CONTENTS

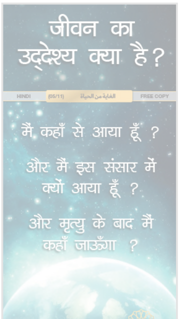

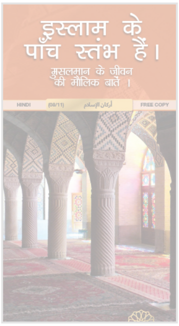

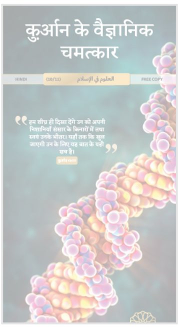

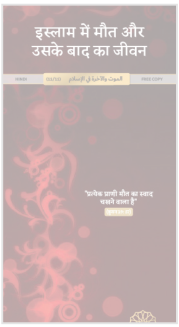

वैवाहिक संबंधों में प्रेम और दया

पैगंबर (उन पर शांति हो) ने पुरुषों को अपनी पत्नियों के साथ सर्वोत्तम व्यवहार करने के लिए प्रोत्साहित किया, "तुममें से सबसे अच्छे वे लोग हैं जो अपनी पत्नियों के साथ सर्वोत्तम व्यवहार करते हैं।"

> और उसकी निशानियों में से है कि तुम्हारी ही जाति से पत्नियाँ पैदा कीं ताकि तुम उनसे सुख पाओ, उस ने तुम्हारे बीच प्रेम और दया भाव पैदा कर दिये बेशक गौर व फ़िक्र करने वालों के लिए इसमें बहुत सी निशानियाँ (लक्षण) हैं
>
> (क़ुर्आन 30:21)

एक बार आयशा (पैगंबर की पत्नी) से पूछा गया कि घर में पैगंबर का व्यवहार कैसा था। उन्होंने कहा, "घर पर वह आप जैसे ही थे, फिर भी वह बहुत उधर थे... वह घर के साधारण कामों में अपनी पत्नियों की मदद करने को तैयार रहते थे, [वह] अपने कपड़े खुद सिलते और अपने जूते खुद सीते थे।" सामान्य तौर पर, वह अपनी पत्नियों के हर काम में उनकी मदद करते थे।

माताओं और बेटियों का उच्च दर्जा

एक माँ का बच्चे पर सबसे ज़्यादा प्रभाव होता है, खासकर शुरुआती सालों में, अपने स्नेह, देखभाल और प्यार के ज़रिए। निस्संदेह, किसी भी समाज की सफलता माँ के कारण ही होती है। इसलिए, इस्लाम के लिए यही उचित है कि वह उनकी प्रतिष्ठा को सम्मान दे और उन्हें ऊँचा उठाए।

अल्लाह क़ुरआन में कहता है:

> और हम ने इंसान को अपने माता-पिता के साथ अच्छा सुलूक करने का हुक्म दिया है, उसकी माता ने उसे दुख झेल कर पेट में रखा और दुख सहन करके उसे जन्म दिया।
>
> (क़ुर्आन 15:46)

पैगंबर, से एक बार पूछा गया उन पर शांति हो: "हे अल्लाह के दूत, मेरी अच्छी संगति के लिए सबसे ज्यादा योग्य कौन है?" तो उन्होंने कहा: "तुम्हारी माँ।" आदमी ने दो बार पूछा: "फिर कौन?" वही उत्तर दिया। केवल चौथी बार पैगंबर, ने उत्तर दिया उन पर शांति हो,और कहा: "फिर कौन?" "तुम्हारे पिता।"

बेशक सवाब केवल माँ के अच्छे बेवहार के लिए ही नहीं दिया जाता है बल्कि इस्लाम ने बेटियों की परवरिश के लिए एक विशेष इनाम आवंटित किया है, जो

CONTENTS

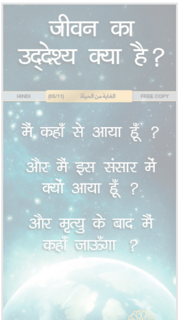

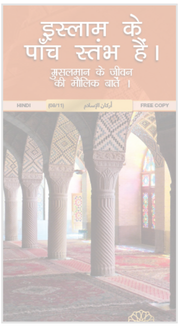

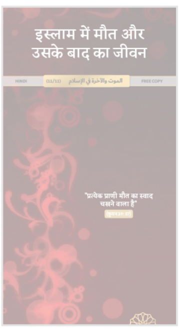

पैगंबर, ने कहा: उन पर शान्ती हो, के "जिसको अल्लाह दो बेटियों का आशीर्वाद दिया, और वह उनके साथ अच्छा व्यवहार करता रहा, तो वे उसके स्वर्ग में प्रवेश का कारण बनेंगी।"

निष्कर्ष

इस्लाम से पहले, महिलाओं को शर्मनाक माना जाता था, बच्चियों को ज़िंदा दफ़ना दिया जाता था, वेश्यावृत्ति आम थी, तलाक़ केवल पति के अधिकार में था, उत्तराधिकार केवल शक्तिशाली लोगों के पास था, और अत्याचार सर्वव्यापी था। इस्लाम आया और इन प्रथाओं को समाप्त कर दिया। आज भी, "विकसित देशों" में, महिलाओं को सम्मान, गरिमा और प्रतिष्ठा नहीं दी जाती, समान काम के लिए समान वेतन तो दूर की बात है। हालाँकि, इस्लाम महिलाओं को अनमोल और मूल्यवान मानता है, उनका अनादर या अपमान नहीं किया जाना चाहिए। कुछ मध्य-पूर्वी देशों या मुस्लिम परिवारों में महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार इस्लाम के कारण नहीं, बल्कि कुछ मुसलमानों द्वारा गलत तरीके से अपनाए गए सांस्कृतिक कारकों के कारण है। अगर इस्लाम एक दमनकारी धर्म है, तो दुनिया भर में इतनी सारी महिलाएं स्वेच्छा से इस्लाम में क्यों प्रवेश करेंगी?

हम अपने और आपके रब, पुरुषों और महिलाओं के निर्माता और पालनकर्ता के शब्दों के साथ समाप्त करते हैं

नि:संदेह मुसलमान पुरुष और मुसलमान स्त्रियाँ तथा ईमान वाली स्त्रियाँ, तथा आज्ञाकारी पुरुष और आज्ञाकारिणी स्त्रियाँ, तथा सच्चे पुरुष तथा सच्ची स्त्रियाँ तथा सहनशील पुरुष और सहनशील स्त्रियाँ तथा विनीत पुरुष और विनीत स्त्रियाँ तथा दानशील पुरुष और दानशील स्त्रियाँ तथा रोज़ा रखने वाले पुरुष और रोज़ा रखने वाली स्त्रियां तथा अपने गुप्तांगों की रक्षा करने वाले पुरुष तथा रक्षा करने वाली स्त्रियाँ, तथा अल्लाह को अत्यधिक याद करने वाले पुरुष और याद करने वाली स्त्रियाँ, तय्यार कर रखा है अल्लाह ने उन्हीं के लिए क्षमा तथा महान् प्रतिफल।

(कुर्आन 35:33)

HOTLINE
+971 56 204 2045
islamicicdxb
islamicic.com
info@islamicic.com
+971 4 355 5223
DOWNLOAD HINDI FLYERS
www.iicdxb.com/hindi

CONTENTS

इस्लाम का परिचय

मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का परिचय ।

ईश्वर (माबूद) का अर्थ इस्लाम में

कुर्आन

जीवन का उद्देश्य क्या है?

इस्लाम के बारे में गलतफहमियाँ

इस्लाम में महिलाओं के अधिकार

इस्लाम के पाँच स्तंभ हैं।

इस्लाम धर्म क्या है ?

कुर्आन के वैज्ञानिक चमत्कार

इस्लाम में मौत और उसके बाद का जीवन

इस्लाम के पाँच स्तंभ हैं।

मुसलमान के जीवन की मौलिक बातें ।

HINDI (08/11) أركان الإسلام FREE COPY

جمعية دار البر
Dar Al Ber Society
www.daralber.ae

الإمارات
THE EMIRATES

Your Path To Peace..

مركز المعلومات الإسلامي
Islamic Information Center
للتعريف بالإسلام

www.islamicic.com

تصريح رقم:
(2017/139)

دائرة الشؤون الإسلامية والعمل الخيري
Islamic Affairs & Charitable Activities Department

CONTENTS

परिचय

किसी भी चीज़ की मज़बूती के लिए ज़रूरी है कि उस की बुनियाद मज़बूत हों । और इस्लाम की बुनियाद जिन चीजों पर आधारित है वह पाँच हैं, और यह पाँचों स्तंभ इस्लाम की शिक्षा की जड़ और बुनियाद हैं, जैसा कि हमारे नबी मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहेवसल्लम का हुक्म है :

इस्लाम की बुनियाद पाँच चीजों पर है :

1 इस बात की गवाही देना कि अल्लाह के सिवा (अलावा) कोई वास्तविक ईश्वर नहीं है और मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम अल्लाह के रसूल हैं ।

2 फर्ज़ नमाज़ें कायम करना ।

3 ज़कात अदा करना ।

4 रमज़ान के रोज़े रखना ।

5 हज अदा करना ।

इस्लाम की पाँचों बुनियादें ही मुसलमानों के जीवन के मौलिक सिद्धांत हैं ।

1. इस बात की गवाही देना कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद (ईश्वर) नहीं, और मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम अल्लाह के रसूल हैं ।

यही वह गवाही है जिस के द्वारा बंदा (भक्त) कुफ्र के सीमा से निकल कर इस्लामी सीमा में दाखिल हो जाता है, और वह गवाही यह है कि अल्लाह के सिवा कोई भी वास्तविक ईश्वर इबादत (पूजा) का हक नहीं रखता है और मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के बंदे (भक्त) और उसके रसूल (दूत) हैं ।और ज़रूरी है कि यह गवाही दिल की गहराईयों से भी हो फिर उस दिली ईमान के मुख से भी उसका अनुवाद हो (उस आदमी के लिए जो उसकी शक्ति रखता हो) तो इस तरह से इस गवाही के स्तंभ पूरे हो जाते हैं ।

शहादत (गवाही) का पहला भाग कई बातों पर आधारित है :

- कोई आदमी या जानवर या पेड़ और पत्थर ईबादत (पूजा) का हक नहीं रखता है सिवा अकेले अल्लाह के । और "अल्लाह" अरबी शब्द है जो इस बात का उल्लेख करता है कि अल्लाह अकेला और तनहा है, उसका कोई साझेदार नहीं ।
- अल्लाह तआला अकेला है वही सब का पैदा करने वाला, और शून्य से अस्तित्व में लाने वाला है, ज़मीन और आसमान को वही उठाए हुए है, और हर चीज़ का नियंत्रण और चाभी अल्लाह ही के हाथ में है, और वह प्रत्येक वस्तु पर शक्ति रखने वाला है ।
- सिर्फ अल्लाह की ज़ात है जो सभी विशेषताओं का मालिक है और हर प्रकार की दोष व बुराईयों से पवित्र है ।
- अल्लाह तआला की ज़ात एक है, उसका का कोई साझेदार नहीं, उसका कोई साझी नहीं, उसका कोई बाप नहीं, उसकी कोई माँ नहीं और ना ही कोई उसका बेटा है ।

इस गवाही का दूसरा भाग इस बात पर आधारित है कि मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के भक्त एवं दूत हैं ।

मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नबियों के क्रम के अंतिम कड़ी हैं, अल्लाह ने आप को सारी दुनिया वालों की तरफ इस लिए भेजा कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लोगों को सिर्फ अल्लाह की तरफ बुलाएँ ।

और यह नबूवत व रिसालत का सिलसिला आदम अलैहिस्सलाम से होते

CONTENTS

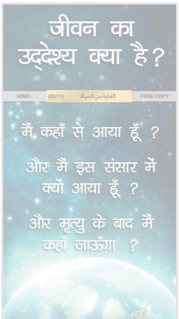

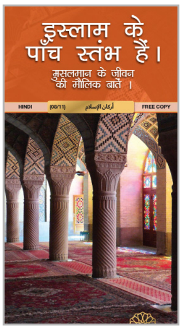

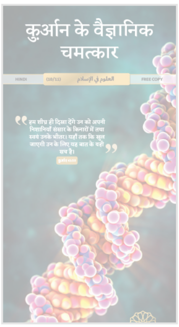

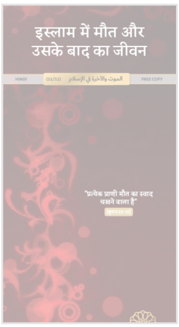

हुए, नूह, इब्राहीम, इस्माईल, इसहाक, याकूब, मूसा, दाऊद, सुलैमान और ईसा अलैहिमुस्सलाम से हो कर मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर इस महान कड़ी का अन्त होता है ।

मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अल्लाह तआला (ईश्वर) ने कुर्आन मजीद दे कर भेजा जो अल्लाह की तरफ से अवतरित की जाने वाली अंतिम गुप्त वाणी थी, जो पृथ्वी पर भेजी गई ताकि आप लोगों को यह बताएँ कि अल्लाह तआला ने उन्हें इस दुनिया में क्यों और किस लिए पैदा किया है ? और किस तरह वह इस मकसद में सफल हो सकते हैं ।

शहादत का कलमा के एलान के कुछ फायदे :

- शहादत का कलमा मनुष्य को अल्लाह (ईश्वर) का मानने वाला बना देता है, और मनुष्य अल्लाह का सच्चा भक्त बन जाता है, और अल्लाह (ईश्वर) उसका वास्तविक ईश्वर हो जाता है ।
- शहादत का कलमा मनुष्य को आदर व सम्मान के सर्वोच्च स्थान पर पहुँचा देता है, और मनुष्य शरीफ और नर्म दिल हो जाता है ।
- शहादत का कलमा मनुष्य को हिम्मत वाला, धैर्य रखने वाला और प्रत्येक काम पर पुण्य प्राप्त करने की भावना पैदा कर देता है, मनुष्य अल्लाह का आज्ञाकारी और धर्म पर चलने वाला हो जाता है ।
- मनुष्य अल्लाह (ईश्वर) के आदेश का पालन करता है, और उसके आदेश की रक्षा करता है ।

2. इस्लाम का दूसरा स्तंभ नमाज़ है :

वास्तव में नमाज़ कलमा–ए–शहादत के बाद सब से महत्तवपूर्ण स्तंभ है जिस से कि भक्त के ईमान को ज़िन्दगी मिलती है और उन नमाज़ो के नाम यह हैं : फजर, जुहर, असर, मगरिब, ईशा

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया : " सबसे महत्तवपूर्ण चीज़ इस्लाम है और नमाज़ इस्लाम का स्तंभ है और इसकी चोटी जेहाद है " ।

वास्तव में नमाज़ मनुष्य को शारीरिक और मानसिक तरीके से उस के पैदा करने वाले से जोड़ती है, और जोड़ने का सब से अहम ज़रिया है वह है अल्लाह (ईश्वर) एक पर ईमान व यकीन रखना, और उस से मोहब्बत और उसकी आदर करना ।

> " बेशक मैं ही अल्लाह (ईश्वर) हूं मेरे सिवा इबादत (पूजा) के लायक कोई और नहीं इस लिए तू मेरी इबादत कर, और मेरी याद के लिए नमाज़ कायम रख " ।
> (सुरह ताहा 20:14)

जब बंदा नमाज़ को अच्छे ढंग से पढता है तो उसे मानसिक शांति मिलती है, उस के दिल को खुशी हासिल होता है । और नमाज़ इंसान को अल्लाह (ईश्वर) से करीब कर देती है । जैसा कि अल्लाह ने यह हुक्म बयान किया :

जिस तरह नमाज़ इस्लाम की बुनियाद हैं उसी तरह नमाज़ मनुष्य की ज़िन्दगी की बुनियाद है, और नमाज़ अल्लाह ताआला (ईश्वर) से विनम्रता एंव विनीतता का सर्वश्रेष्ठ साधन है, और नमाज़ उन सभी स्थानों पर अदा कर सकते हैं जो पाक और साफ–सुथरे हों, जैसे खेत, ज़मीन, आफिस, फैक्ट्री और स्कूल आदि । नमाज़ अदा करने के लिए बहुत कम समय की ज़रूरत होती है, कुछ मिनट के अन्दर आप नमाज़ पढ़ सकते हैं ।

और नमाज़ के अन्दर कुर्आन पढ़ा जाता है, अल्लाह से दुआ की जाती है और उस की महानता एंव पवित्रता बयान की जाती है विभिन्न दिशाओं में करके । जैसे खड़ा होना, घुटनों के बल झुकना, सर झुकाना और बैठना इत्यादि । नमाज़ के माध्यम से मनुष्य अल्लाह (ईश्वर) की महानता को स्वीकार करता है, और अपनी ज़रूरत पूरी करने की दुआ करता है और अपने इच्छाओं के पूरा होने की उम्मीद करता है ।

विनम्रता एंव विनीतता का प्रदर्शन अल्लाह (ईश्वर) के सामने बार–बार करना यह मनुष्य को गुनाह करने से बचाता है, और यह आत्मा की शुद्धि की एक रूप है, जैसा कि कुर्आन ने इसका वर्णन किया है : " बेशक नमाज़ मनुष्य को बुराई और बेशर्मी से रोकती है " । (सुरह अनकबूत 29:45)

CONTENTS

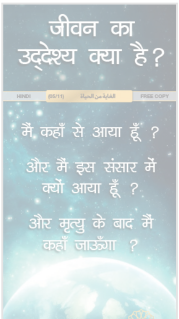

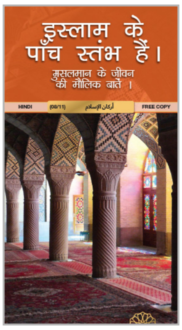

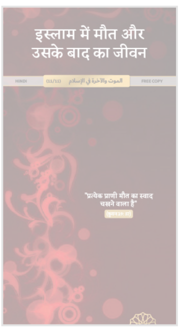

चूँकी नमाज़ के माध्यम से तौबा को नवीनीकरण का एक मौका मिलता है, और अल्लाह (ईश्वर) से माफी माँगने का एक मुख्य साधन है, और नमाज़ खुद गुनाहों को खत्म कर देती है ।

एक दिन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाब–ए–केराम से पूछाः तुम सब की क्या राय है अगर तुम में से किसी के दरवाज़े के सामने नहर बह रही हो और उस के अन्दर वह हर दिन पाँच बार स्नान करे, तो क्या उस आदमी के बदन पर कोई मैल बाकी रह सकती है ? सहाब–ए–केराम ने कहा नहीं, ऐ अल्लाह के रसूल ! तो आप ने कहा यही मिसाल पाँच वक्त के नमाज़ों की है, अल्लाह तआला इस नमाज़ के ज़रिया गुनाहों को खत्म कर देता है ।

3. इस्लाम का तीसरा स्तंभ ज़कात है :

हम सब अल्लाह के अधीनता में रहते हैं और हम सब उस के बंदे हैं, और दुनिया में जितनी चीजें हैं वह सब अल्लाह के हाथ में हैं, और दुनिया में जितनी चीजें हैं वह सब अल्लाह के अधिकार में हैं और अल्लाह ने उन सब को बनाया है, और वही सब का मालिक है और उन्हीं में से वह धन–संपत्ति है जिसे अल्लाह ने हमें धरोहर के तौर पर दिया है, ताकि हम जब और जिस तरह चाहें खर्च करें ।

इस लिए ज़कात हर उस मुसलमान पर आवश्यक है जो इस्लामी शर्तों उदाहरण के तौर पर : बुद्धि, युवास्था एवं एक निश्चित मात्रा से ऊपर तक पहुँचता हो तो उस माल से ढ़ाई प्रतिशत ज़कात निकालना अनिवार्य और ज़रूरी हो जाता है । और उस ढाई प्रतिशत को फकीरों, गरीबों, ज़कात वसूल करने वालों, गर्दन छुड़ाने में, कर्ज़दारों के लिए, अल्लाह की राह में और रास्ता चलने वाले मुसाफिरों को दिया जाता है ।

अल्लाह तआला ने अपने रसूल को हुक्म दिया कि आप उनके मालों में से सदका (दान) ले लीजिए जिस के ज़रिया से आप उनको पवित्र कर दें ।

और ज़कात का अर्थ ही है पवित्रता और बढोतरी, और ज़कात उन पौधों के जैसा है कि अगर उन पर ध्यान दी जाए और ख्याल किया जाए तो वह बढ़ते और हरा भरा रहते हैं ।

इसी तरह ज़कात है । ज़कात का भुगतान यह एक धार्मिक दायित्व है, जिस से कि मुसलमान की धनसंपति साफ–सुथरी बनी रहती है और साथ ही साथ उस के अन्दर बरकत होती है और बढ़ता है ।

ज़कात (दान) के फायदे :

- ज़कात आदमी को दिल की बीमारी से सुरक्षित रखता है जैसे कि लालच, अहंकार और घमंड ।
- ज़कात बंदे को उस चीज़ का अभ्यस्त बनाता है कि फकीरों और मोहताजों के साथ सहानुभूति एवं हमदर्दी से पेश आया जाए ।
- ज़कात बंदे को याद दिलाता है कि वह अल्लाह (ईश्वर) की इस वरदान का शुक्रिया अदा करे ।
- समाज के अन्दर जो विभिन्न लोगों के अन्दर दूरी है ज़कात उस को कम करता है, ताकि समाज के अन्दर अमन एवं शांति हो और सारे लोग अच्छी ज़िन्दगी बिता सकें ।
- ज़कात गरीबी को कम करता है, मालदारों के माल से ज़कात लेकर फकीरों के बीच बाँटा जाता है, जिस से कि लोगों के बीच बराबरी हो सके, ताकि यह दौलत सिर्फ मालदारों के हाथों में ही गर्दिश (परिक्रमा) करता ना रह जाए ।

और अगर कोई मनुष्य अतिरिक्त दान करना चाहे तो जिस हद तक वह चाहे अपने माल को दान कर सकता है ।

> "जो लोग नमाज़ पढ़ते हैं और दान देते हैं, और आखरत (मरने के बाद की दुनिया) पर संपूर्ण ईमान रखते हैं यही लोग हैं जो अपने रब की तरफ से हिदायत (सही रास्ते पर) पर हैं और यही लोग मुक्ति पाने वाले हैं" । (सुरह लुकमान 31:4–5)

CONTENTS

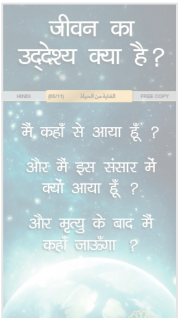

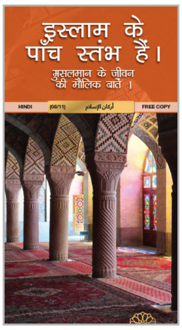

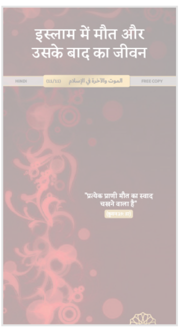

4. इस्लाम का चौथा स्तंभ रोज़ा (उपवास) है :

" ऐ ईमान वालो ! तुम पर रोज़े रखना फर्ज़ (अनिवार्य) किया गया जिस तरह तुम से पहले लोगों पर फर्ज़ किये गये थे ताकि तुम संयम वाले बनो " ।
(सुरह बकरा 2:183)

रोज़ा भी सामान्य ईबादत (उपासना) की तरह एक ईबादत (उपासना) है, बल्कि रोज़े के अन्दर विशेष रूप से अधिक विनम्रता होनी चाहिए, और अल्लाह के आदेश का पालन करते हुए नि : स्वार्थता पर अधिक बल देना चाहिए ।

हिजरी तारीख के हिसाब से हर साल रमज़ान के पूरे महीना का रोज़ा मुसलमान रखते हैं, जो सुबह की नमाज के वक्त से लेकर सूरज के डूबने तक रहता है । और रोज़े की हालत में तीन महत्तवपूर्ण मनुष्य की आवश्यक्ताओं से दूर रहा जाता है, जैसे खाना, पीना और औरत से संभोग करना । और इसी तरह गुनाह के कामों से दूर रहना तो हमेशा ज़रूरी है । लेकिन रोज़े की हालत में विशेष रूप से दूरी बहुत ज़रूरी है ।

रमज़ान के महीना का रोज़ा हर उस मुसलमान पर जो व्यस्क हो और रोज़ा रखने की ताकत रखता हो अनिवार्य है । बल्कि बच्चे, बीमार, मानसिक रूप से अस्वस्थ, वह बूढ़े जिन की उम्र बहुत हो गई हो, माहवारी और निफास (बच्चे के जनम के बाद आने वाले खून) वाली औरतें, और मुसाफिर उसे रोज़े को नहीं रख सकता है ।

रोज़ा के कुछ फायदे :

- रोज़ा मनुष्य को मज़बूत और साफ – सुथरा करता है ।
- डाक्टरों ने यह प्रमाणित किया है कि रोज़ा मनुष्य के स्वास्थय के लिए बहुत लाभदायक है ।
- रोज़ा फकीरों और मुहताजों के साथ अच्छा बर्ताव करने का प्रेरणा देता है और आदमी को नेकी और भलाई के रास्ते में माल को खर्च करने पर उभारता है ।
- रोज़ा आत्मा को नियंत्रण में रखना और सब्र करना सिखाता है ।
- रोज़ा एक मानसिक पवित्रता है जो मनुष्य को अल्लाह (ईश्वर) की पूजा (ईबादत) में सब्र से काम लेना सिखाता है ।
- रोज़ा मनुष्य को आत्मा की पैरवी से बचाता है इसी तरह रोज़ा शक्तिशाली मुस्लिम बनने में मदद करता है ।
- रोज़ा एकता एवं सामूहिकता का एक ऐसा भावना उत्पन्न करता है जिस से रोज़ादार भिन्न–भिन्न वर्गों होने के बावजूद सब एक साथ जमा हो जाते हैं ।
- रोज़ा लोगों को सुस्ती से बचाता है, और उन परेशानियों से उन्हें सूचित करता है जो दुनिया के अनेक जगहों पर मुसलमान जिससे प्रभावित हैं ।
- रोज़ा गुनाहों को खत्म करता है, हमारे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बयान फरमाया : " जो आस्था एवं पुण्य की नीयत से रोज़ा रखता है अल्लाह तआला (ईश्वर) उस के सभी पिछले पापों (गुनाहों) को माफ कर देता है" ।

5. इस्लाम का पाँचवां स्तंभ हज है :

हज हर उस मुसलमान पर ज़िन्दगी में एक बार फर्ज़ है जो शारीरिक एवं आर्थिक रूप में उसकी क्षमता रखता हो ।

अल्लाह तआला (ईश्वर) ने कुर्आन में वर्णन किया है : "अल्लाह तआला ने उन लोगों पर जो उसकी तरफ रास्ता पा सकते हों उस घर का हज (तीर्थ यात्रा) फर्ज़ (अनिवार्य) कर दिया है " ।
(सूरतु आले इमरान : 3:97)

बैतुल्लाह (अल्लाह के घर का अर्थात काबा) का हज करना उन अनिवार्य कामों में से है जो मनुष्य की सभी कामों को कुछ देर के लिए रोक देता है , और हज के समय में अल्लाह की तरफ से बहुत सी कृपा होती हैं, इस लिए उस समय भक्तों को

CONTENTS

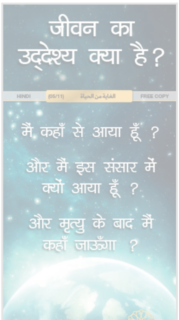

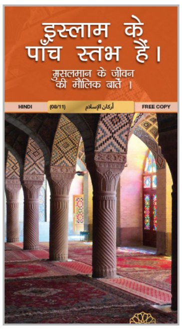

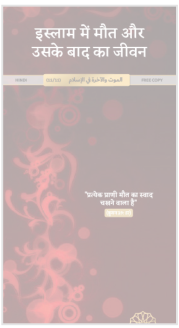

अपनी भक्ति का पूरा इज़हार करना चाहिए, और अल्लाह की कृपा की तरफ और ज़्यादा कोशिश करनी चाहिए जो उस समय अल्लाह की तरफ से उतरती है ।

हिजरी कैलेंडर के हिसाब से हज हर साल जिलहिज्जा (अरबी साल का बारहवाँ महीना) के महीना में होता है, और इस्लाम का यह इतना महान स्तंभ है कि उस में दुनिया के कोने कोने से मुसलमान जमा होते हैं, जो अनेक रंग व नस्ल और विभिन्न संस्कृति और विभिन्न उमर के बावजूद सभी लोग अल्लाह की ईबादत (पूजा) के लिए जमा होते हैं ।

सभी हाजियों का पोशाक एक तरह का होता है , जिस को एहराम कहा जाता है, उस लिबास में अमीर व गरीब, ताकतवर और कमज़ोर, मज़दूर और मालिक सारे ही लोग अल्लाह के सामने मौजूद होने में बराबर होते हैं ।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वर्णन करते हैं : " जिस ने हज किया और बुरी बातों और औरतों के साथ संभोग से बचा और गुनाह नहीं किया तो वह हज से ऐसे वापस आता है जैसे कि वह आज अपनी माँ के पेट से पैदा हुआ है । (यानी गुनाहों से इस तरह पाक हो जाता है)

हज हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की सुन्नत का पालन है जिस को हमारे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बताया है ।

इस्लाम का यह महान स्तंभ हज जो बहुत सारी इबादतों (पूजा) पर निर्भर करता है, जैसे कुर्बानी का जानवर, दुआ, मक्का और मदीना की ज़ियारत (तीर्थ) और भी बहुत से स्थान हैं, जहाँ नमाज़ पढ़ी जाती है, और काबा शरीफ का चक्कर (तवाफ) लगाया जाता है, और इस के सिवा भी बहुत से दूसरे कर्म हैं जिन्हें थोड़े समय में पूरा किया जाता है ।

बेशक यह हज का अनुभव मनुष्य को अपनी ज़िन्दगी को बदलने की दावत (निमंत्रण) देता है, ताकि सब्र और अल्लाह के शुक्र की महत्तव को जान सकें । जो मुसलमानों की भाई–चारगी को और मज़बूत करता है, इस से अलग–थलग कि वह किस रंग व नस्ल के हैं, वह सारे एक धर्म के मानने वाले और सब एक राष्ट्र के लोग हैं ।

समाप्ति

अल्लाह तआला ने इस्लाम के यह पाँच स्तंभ अनिवार्य किए हैं जिस की अनिवार्यता पर आस्था रखना हर मुसलमान के लिए ज़रूरी है, और उस के अनूसार पूर्ण रूप से अच्छी तरह पालन करना हर मुसलमान की ज़िम्मेदारी है, और यह वह व्यवहारिक स्तंभ हैं जो पालन में आसान हैं जिस पर अल्लाह तआला महान पुण्य देगा । अल्लाह तआला माफ करने वाला और तौबा कबूल करने वाला है ।

मनुष्य की उन्नित में इस्लाम के पाँच स्तंभ बहुत महत्तपूर्ण हैं जिस से मनुष्य का समाज आपस में एकता के साथ अल्लाह की खुशी को हासिल कर सकते हैं ।

अल्लाह तआला ने इस्लाम के उन स्तंभों को बंदों की सफलता के लिए उन पर अनिवार्य किया । वैसे तो अल्लाह को किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं, उन पर चलने से उसका कोई लाभ अल्लाह (ईश्वर) को नहीं पहुँचता बल्कि यह इस्लाम के स्तंभ मनुष्य की ज़िन्दगी और उस के ईमान को मज़बूत करते हैं और यही नहीं, बल्कि यह इंसानियत की सफलता का पूर्ण व्यस्था और जीने का तरीका है ।

CONTENTS

इस्लाम का परिचय

मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का परिचय ।

ईश्वर (माबूद) का अर्थ इस्लाम में

कुर्आन

जीवन का उद्देश्य क्या है?

इस्लाम के बारे में गलतफहमियाँ

इस्लाम में महिलाओं के अधिकार

इस्लाम के पाँच स्तंभ हैं।

इस्लाम धर्म क्या है ? प्रश्न एवं उत्तर के रूप में । अधिकार का विवरण

कुर्आन के वैज्ञानिक चमत्कार

इस्लाम में मौत और उसके बाद का जीवन

इस्लाम धर्म क्या है ?

प्रश्न एवं उत्तर के रूप में ।

HINDI | (09/11) الإسلام (سؤال وجواب) | FREE COPY

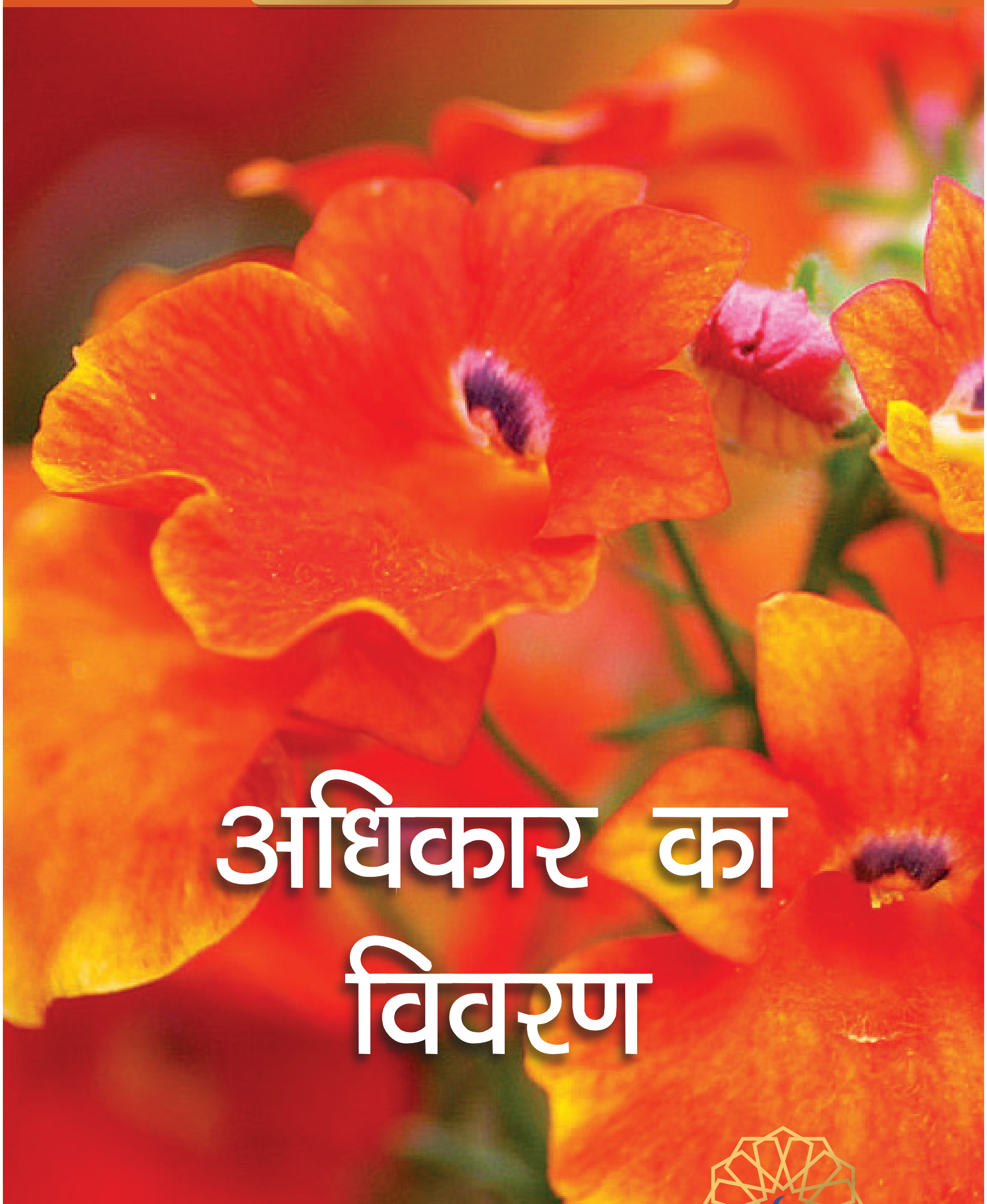

अधिकार का विवरण

جمعية دار البر
Dar Al Ber Society
www.daralber.ae

الإمارات
THE EMIRATES

Your Path To Peace..

مركز المعلومات الإسلامي
Islamic Information Center
www.islamicic.com

تصريح رقم:
(2017/139)
دائرة الشؤون الإسلامية والعمل الخيري
Islamic Affairs & Charitable Activities Department

CONTENTS

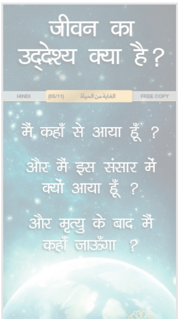

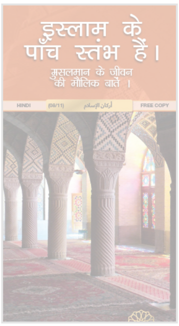

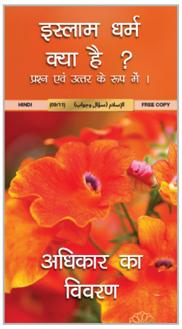

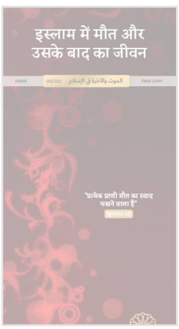

इस्लाम क्या है? और मुसलमान कौन हैं?

इस्लाम एक स्वाभाविक एवं संपूर्ण जीवन शैली का नाम है, जो मनुष्य को अल्लाह (ईश्वर) के साथ श्रेष्ठ और अच्छा संबंध बनाने और उस पर डटे रहने की प्रेरणा देता है । इस्लाम की शिक्षाएँ इस बात को बड़े ही स्पष्ट ढंग से वर्णन करता है कि मनुष्य वास्तविक समृद्धि एवं शांति अल्लाह तआला (ईश्वर) को पहचान कर और अच्छे कामों को करके ही प्राप्त कर सकता है जो अल्लाह तआला (ईश्वर) ने वर्णन किया है । जिसका लाभ मनुष्य एवं समाज दोनों को पहुँचता है ।

इस्लाम का संदेश बिल्कुल स्पष्ट है कि हम अल्लाह पर आस्था रखें और केवल उसी की इबादत (पूजा) करें, उसके व्यक्तित्व एवं विशेषताओं और इबादत में किसी को साझेदार न बनाई जाए ।

और मोहम्मद सल्लल्लाहुअलैहि व सल्लम के नबी होने की आस्था रखी जाए । और इस बात पर विश्वास रखें कि वह अंतिम संदेष्टा हैं ।

और इस्लाम शब्द का अर्थ यह है कि मनुष्य संपूर्ण रूप से अपने–आप को अल्लाह को समर्पण कर दें जो अकेला है और जिसका कोई साझेदार नहीं ।

और इस्लाम के मानने वाले को मुसलमान कहा जाता है । चाहे वह किसी भी देश या वर्ग और वंश से संबंध रखता हो ।

जीवन का उद्देश्य क्या है?

निः संदेह अल्लाह तआला (ईश्वर) बहुत बुद्धिमान (हिकमत वाला) है उसने हमें यूँ ही बिना उद्देश्य के पैदा नहीं किया कि हम इस संसार में खायें–पीयें और शादी–ब्याह करें और हम अपनी इच्छाओं को पूरा करें ।

बल्कि हमारे लिए इस से कहीं अधिक उच्च उद्देश्य है, और वह उद्देश्य यह है कि हम अल्लाह तआला (ईश्वर) के अस्तित्व को मानें और केवल अल्लाह की ईबादत (पूजा) करें ताकि हमारे लिए यह संभव हो सके कि हम अपने ईश्वर के आज्ञा के अनुसार जीवन बिता सकें और उसकी मार्गदर्शन (रहनुमाई) पा सकें अल्लाह का यह मार्गदर्शन (रहनुमाई) हमें जीवन के सभी भागों में सफल और अच्छा जीवन बिताने के योग्य बना देगा । मनुष्य के ईमान की पहचान यह है कि वह अपनी बुद्धि को चिंतन में प्रयोग करें जिस से कि अल्लाह के अस्तित्व को जान सके ताकि अल्लाह (ईश्वर) के आदेश के अनुसार जीवन व्यतित करें ।

इसी कारण ईश्वर ने सभी मनुष्य को खुली स्वतंत्रता दे रखी है ताकि यह पता हो जाए कि कौन है जो संदेष्टा को बिना किसी दबाव के मानता है और कौन है जो संदेष्टा को नहीं मानता ।

अल्लाह कौन है?

अल्लाह व्यक्तिवाचक नाम है उस अकेला सृष्टिकर्ता का जिसका न तो कोई साझीदार है और न उसके समान, जिसकी न कोई पत्नी है और न ही बेटी बेटा, जिसकी सभी विशेषताएं संपूर्ण हैं, वही सृष्टिकर्ता है उसके अतिरिक्त सभी सृष्टि हैं, जो बहुत ही दयावान और अत्यंत कृपालु है ।

संपूर्ण शक्ति और संपूर्ण अधिकार वाला है, न्याय एवं बोध वाला है, उसकी सृष्टियों में से कोई भी उसकी गुण और खुदाई में साझीदार नहीं । सिर्फ वही अकेला ईबादत (पूजा) का अधिकार रखता है जिसको अल्लाह कहा जाता है ।

मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कौन हैं?

मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नबियों के इस सिलसिला की आखरी कड़ी हैं जिन को अल्लाह ने सभी सृष्टियों की तरफ भेजा ताकि उन्हें अल्लाह वहदहु ला शरीक लह की ईबादत (पूजा) की तरफ बुलाएँ, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अच्छे आदर्श हैं माता–पिता, पत्नी, शिक्षकों, नेताओं और सम्राटों के लिए ।

CONTENTS

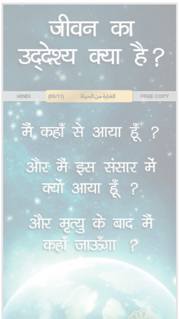

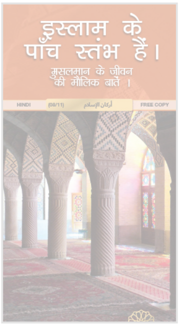

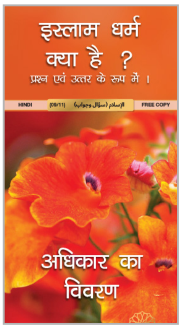

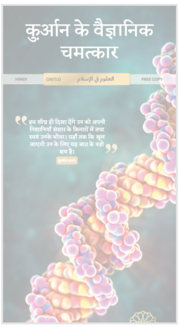

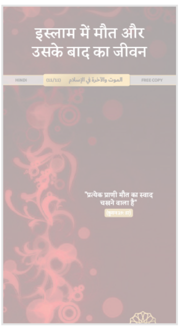

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम चरित्र और आदत, न्याय, धरोहर, दया एवं कृपा, वीरता के सर्वश्रेष्ठ रूप थे । इसी कारण सहाब–ए–केराम (मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मित्र) आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से दिल व जान से मोहब्बत करते थे मगर इस के बाजूद उन्होंने दूसरे अवतारों की तरह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इबादत नहीं की ।

इस्लाम धर्म का वास्तविक साधन क्या है ?

कुर्आन–करीम इस्लामी शिक्षाओं का वास्तविक साधन है, इसी पवित्र किताब ने इस्लामी शिक्षा की बुनियाद रखी, फिर उस के बाद दूसरा साधन मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कथन, कर्म एवं उपदेश हैं जिनको सहाब–ए–केराम रिज़वानुल्लाह अलैहिअजमईन (मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मित्र) ने और उनके बाद के लोगों ने सही एवं विश्वसनीय साधन के साथ हम तक नकल किया ।

नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सिद्धांत (सुन्नत) ने जीवन के सिद्धांत का वह दिशा अपना लिया जिसका पालन मुसलमानों के लिए आवश्यक है और सभी इस्लामी शिक्षाएँ इन्हीं दोनों आर्थात कुर्आन व सुन्नत के पवित्र सधनों से लिया गया है ।

कुर्आन क्या है ?

कुर्आन करीम अल्लाह (ईश्वर) की तरफ से वह अंतिम गुप्त वाणी है जो आसमान से मनुष्यता की तरफ उतारी गई जो सत्य एवं असत्य के बीच अंतर करने वाली है ।

कुर्आन करीम अल्लाह (ईश्वर) की तरफ से वह अंतिम गुप्त वाणी है जो आसमान से मनुष्यता की तरफ उतारी गई जो सत्य एवं असत्य के बीच अंतर करने वाली है ।

यह अल्लाह तआला (ईश्वर) के चमत्कार से भरपूर वाणी है, जिस को अल्लाह तआला ने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर जिबरीले–अमीन (दूत) अलैहिस्सलाम के द्वारा अवतरित किया ।

और यह ग्रंथ उन सभी आसामानी किताबों की संरक्षक है जो इस से पहले उतरी, उदाहरण : तौरात व इंजील और उन्हें निरस्त करने वाली है ।

और पवित्र कुर्आन मनुष्य से संबंधित सभी आधारभूत समस्याओं का वर्णन करता है । उदाहरण : पैदा करने का उद्देश्य, ईश्वर का अर्थ, वह कार्य जो अल्लाह को पसन्द है और जो पसन्द नहीं है, नबियों के किस्से और उन में मौजूद शिक्षाएँ, और कयामत, स्वर्ग एवं नर्क का वर्णन ।

कुर्आन–करीम का सब से बड़ा चमत्कार यह है कि उस के अवतरण को चौदह सौ साल की लम्बी अवधि गुज़र जाने के बावजूद वह हर प्रकार से सुरक्षित एवं अपरिवर्तित है ।

इस के अतिरिक्त इस में बहुत से वैज्ञानिक सत्यता और ऐतिहासिक घटनाएँ हैं जिनसे उस समय के लोग अंजान थे और जिनका प्रकटन बाद में हुआ और यह कुर्आन–करीम अल्लाह (ईश्वर) के कथन होने का उदारहण है ।

इस्लाम के स्तंभ क्या हैं ?

इस्लाम का स्तंभ पाँच खंभों पर स्थापित है ।

पहला स्तंभ : ईमान की गवाही देना, कि आप स्वीकार करें कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई माबूद ईबादत (पूजा) का अधिकारी नहीं और मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के अंतिम अवतार हैं ।

दूसरा स्तंभ : दिन और रात में पाँच वक्त की नमाज़ अदा करना : फजर, ज़ोहर, असर, मगरिब और ईशा ।

तीसरा स्तंभ : फर्ज़ ज़कात (दानपुण्य) है जो मालदारों के माल में से विशेष शर्तों के साथ वर्ष में एक बार निकाला जाता है और गरीबों के बीच बाँट दिया जाता है ।

चौथा स्तंभ : रमज़ान के महीने का रोज़ा (उपवास) है । इस महीने में विशेष (यानी वह लोग जिन पर रोज़ा अनिवार्य है) मुसलमानों पर फजर से मग़रिब (उषाकाल से संध्याकाल) तक खाने–पीने और पत्नी के साथ संभोग से बचना आवश्यक है, इसी तरह सभी पापों से बचना भी आवश्यक है ।

पाचवाँ स्तंभ : हज है, अर्थात यदि मुसलमान शारीरिक एंव आर्थिक दृष्टि से हज करने की क्षमता

CONTENTS

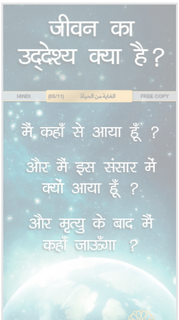

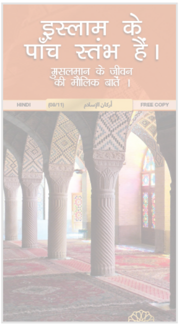

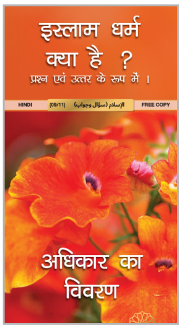

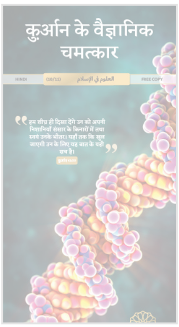

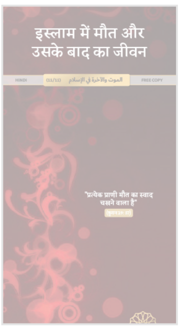

रखता है तो जीवन में एक बार उसे अल्लाह के घर का तीर्थ करना अनिवार्य है । और अल्लाह के घर का तीर्थ करना मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अनुयायियों के एकता का एक बड़ा ही महान प्रदर्शन है जो रंग व नस्ल और भाषा में विभिन्नता के बावजूद एक जगह पर इकट्ठा होते हैं, और एक श्रेष्ठ अवसर होता है जिस में विभिन्न प्रकार की इबादत (पूजा) की जाती हैं । उदाहरण : कुर्बानी, हरम में नमाज़ और दुआएँ इत्यादि ।

मुसलमान ईसा अलैहिस्सलाम और दूसरे अवतारों के बारे में क्या आस्था रखते हैं?

अल्लाह तआला (ईश्वर) ने हज़ारों अवतारों को भेजा । प्रत्येक समुदाय में एक या कई अवतार भेजे केवल एक ही संदेश के साथ : वह है कि अल्लाह (ईश्वर) की पूजा (इबादत) करो और उसके साथ किसी को साझीदार न बनाओ । उन्हीं अवतारों में से आदम, नूह, यूसुफ, इब्राहीम, याकूब, इसहाक़, मूसा, ईसा और मोहम्मद सलावातुल्लाह व सलामहु अलैहिअजमईन हैं ।

ईसा अलैहिस्सलाम उन अवतारों में से हैं जिनका जन्म चमत्कारिक रूप बिना पिता के हुआ और उनके हाथों से असंख्य चमत्कार अल्लाह (ईश्वर) के आदेश से प्रकट हुए ।

ईसा अलैहिस्सलाम उन अवतारों में से हैं जिनका जन्म चमत्कारिक रूप से बिना पिता के हुआ और उनके हाथों से असंख्य चमत्कार अल्लाह (ईश्वर) के आदेश से प्रकट हुए ।

बुराईयाँ क्यों प्रकट होती हैं ?

अल्लाह तआला (ईश्वर) अपने भक्तों को कई तरीके से जाँचता है । कभी समृद्धि (खुशहाली) उदाहरण : स्वास्थ्य व तंदुरूस्ती, धन–संपत्ति व कुर्सी के ज़रिया, और कभी कठिनाईयाँ, उदाहरण : प्राकृतिक आपदा एवं कठिनाई के द्वारा ।

और यह दोनों बातें अल्लाह (ईश्वर) से निकटता पाने का अच्छा माध्यम और जन्नत में प्रवेश का कारण हैं । कठिनाईयों में मायूसी और निराशा के बिना धैर्य के द्वारा और समृध्दि में अल्लाह के वरदानों को उसकी इच्छा के अनुसार प्रयोग करे ।

और इस बात में कण के समान भी संदेह की संभावना नहीं कि संसार की परेशानियाँ और कठिनाईयाँ साधारण और क्षणिक हैं जो समाप्त होने वाली हैं जबकि धैर्य का बदला सदैव के लिए स्वर्ग और एक महान साम्राज्य है ।

" जिस ने जीवन एवं मृत्यु को पैदा किया ताकि तुम्हें जाँच सके कि तुम में सब से अच्छा कर्म करने वाला कौन है और वह बहुत शक्तिशाली और बहुत क्षमावान है" ।

मृत्यु के पश्चात मनुष्य के साथ क्या होता है ?

मौत वह मार्ग है जिससे हो कर मनुष्य समाप्त होने वाली संसार से कभी समाप्त न होने वाले संसार की ओर हिसाब के लिए जाता है । और मनुष्य न्याय के लिए पुनःजीवित किया जाएगा और उस दिन प्रत्येक के साथ न्याय होगा और उसे पूरा–पूरा बदला मिलेगा, इस संसार में जिस ने भी जुल्म किया या उस पर अत्याचार हुआ अल्लाह तआला न्याय कर के प्रत्येक को उसे पूरा बदला देगा । निःसंदेह अल्लाह तआला न्याय करने वाला और विवेकशील है ।

वह मनुष्य जो सिर्फ अल्लाह की पूजा करता है और इस संसार में अच्छा कार्य करता है अल्लाह तआला उसे अपनी कृपा से स्वर्ग में प्रवेश कराएँगे ।

और अगर मनुष्य ने अधर्म (कुकर्म) किया होगा (अल्लाह हम सब को इस से बचाए) तो उस का परिणाम नर्क होगा ।

और अगर एक ऐसी ज़िन्दगी न होती जिस में आज्ञाकारी और सज्जन लोगों को उनके सुकर्मों का बदला मिले और अत्याचारी एवं अपराधी को उनके अपराध एवं जुर्म की सज़ा मिले तो यह बात अल्लाह सुबहानहु व तआला के न्याय के समान होती है । और केवल इस संसार का जीवन एक बहुत बड़ा अपराध होता ।

CONTENTS

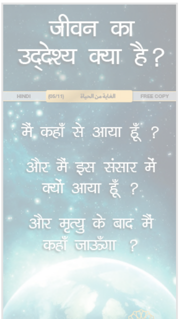

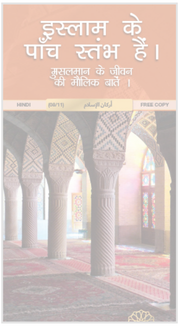

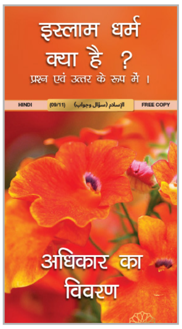

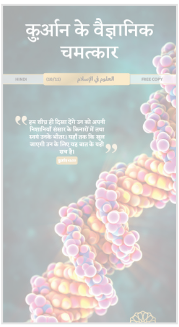

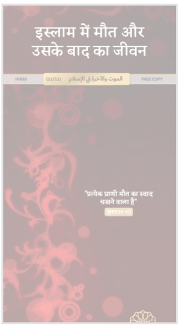

इस्लाम में सब से बड़ा पाप क्या है ?

इस्लाम में सब से बड़ा पाप अल्लाह तआला (ईश्वर) के अतिरिक्त किसी और को उपासना में साझेदार बनाना या किसी को उसके बराबर जानना है ।

या उसकी गुणों में से किसी गुण को उसके अतिरिक्त किसी और के अन्दर जानना (जैसः मूर्ती) या सृष्टि के गुण को उसके समान बताना जैसे यह आस्था रखना कि नऊज़िबिल्लाह (अल्लाह हमें क्षमा करे) अल्लाह की कोई पत्नी है या उसका कोई संतान है या उस का कोई साथी है और अल्लाह तआला को अस्वीकार करना ।

इस्लाम में औरत का क्या स्थान है ?

इस्लाम धर्म में पुरूष एवं स्त्री कर्मों के पुण्य में समान हैं । जैसा कि अल्लाह तआला का आदेश है : "जो मनुष्य अच्छा कार्य करे पुरुष हो या स्त्री, लेकिन ईमान वाला हो तो हम उसे निश्चित रूप से अच्छा जीवन प्रदान करेंगे । और उनके सुकर्मों का अच्छा परिणाम भी उन्हें अवश्य देंगे" । (सुरतुन्नहल : 97)

लेकिन अल्लाह ने दोनों को अलग–अलग चरित्र और कर्तव्य दिया है जो उनकी शारीरिक बनावट, मानसिकता, बुध्दि एवं विवेक की दशा के अनुसार है ।

इस्लाम ने औरत की शान को ऊँचा किया और उसको वह अधिकार दिए जो अज्ञानता के अंधकार में बन्द हो गए थे बिना किसी कठनाई के ।

क्या मुसलमान असली गलती का आस्था रखते हैं ?

इस्लाम में कोई ऐसा वस्तु नहीं है जिस का नाम "अल–खतीअतुल–असलीयह" अर्थात असल गुनाह (मूलपाप) हो । क्योंकि अल्लाह तआला किसी के अपराध पर किसी दूसरे की पकड़ नहीं करता । और न ही किसी ऐसे मनुष्य को सज़ा देता है जो उस कार्य का दोषी न हो ।

जिहाद क्या है ?

जिहाद शब्द का अर्थ यह है कि धर्म के मार्ग में जो बाधाएँ हो उस को समाप्त करना और धर्म के मार्ग में इस तरह प्रयास करना जो अल्लाह (ईश्वर) को पसन्द और प्रिय हों ।

शब्दकोश में इस का अर्थ मानसिकता से जिहाद भी कहा जाता है अर्थात अच्छे कामों में अधिक प्रयास करना, दानपुण्य करना और इस्लाम की विजय में भाग लेना ।

और जिहाद की सबसे प्रसिद्ध परिभाषा सैनिक का संघर्ष है जिस की अनुमति प्रारंभ में केवल मुस्लिम समाज की सुरक्षा, अत्याचार को रोकने और न्याय को स्थापित करना था । जिससे कि इस्लामी हुकूमत सुरक्षित रह सके ।

क्या इस्लाम आतंकवाद का समर्थन करता है ?

युद्ध की हालत में निर्दोष व्यक्तियों और युद्ध से अलग रहने वालों को निशाना बनाना एक घटिया कार्य है, जिस को इस्लाम धर्म ने हराम (अवैध) बतलाया है बल्कि इस्लाम ने तो मुसलमानों पर यह भी हराम (अवैध) बतलाया है कि वह पेड़ और जानवरों को बिना किसी कारण उखाड़ें और हत्या कर दें, निर्दोष व्यक्तियों की बात तो बड़ी बात है ।

यह इस्लाम की उन आधारभूत सिध्दांतों का एक उदाहरण है जो उसने युध्द की हालत के लिए बनाए हैं ।

इस के अतिरिक्त यह भी आवश्यक है कि हम आतंकवाद और अवैध कबज़ों के विपरित जो संघर्ष हो रहें हैं उस में अंतर करें क्योंकि यह दोनों एक दूसरे से बिलकुल भिन्न हैं ।

CONTENTS

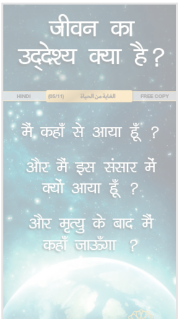

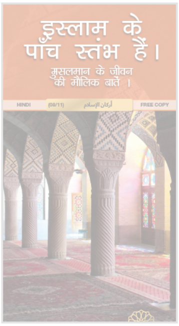

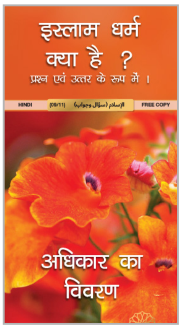

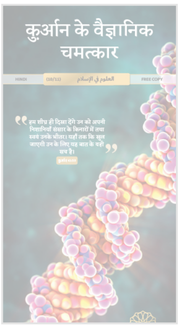

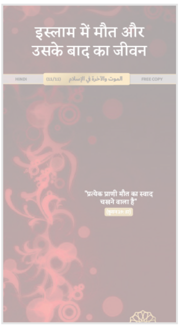

क्या सभी धर्म आपस में एक दूसरे से मिलते–जुलते हैं ?

जबकि बहुत से धर्मों में जो आम शिक्षा पाई जाती हैं जैसे : अच्छे चरित्र और लोगों के साथ अच्छा व्यवहार करना जबकि इस्लाम उन से भी आगे जिन वस्तुओं पर विशेष बल दिया है वह है अल्लाह तआला का आदर व सम्मान और उसकी संपूर्ण एकेश्वरवाद को कण के समान भी कमी किए बिना मानना है जो कि दूसरे धर्मों में यह बात नहीं मानी जाती है ।

इस्लाम के आधारभूत एवं बहुमूल्य सिध्दांतों में से यह है कि अल्लाह तआला अपनी सृष्टि के गुण से बिल्कुल भिन्न है और अल्लाह (ईश्वर) की विशेषताएँ उसके सृष्टि के किसी गुण के साथ तुलना असंभव है ।

और अल्लाह (ईश्वर) की सभी ईबादतें (उपासना) बिना किसी माध्यम के केवल अल्लाह के लिए की जाती हैं ।

इस्लाम एक सम्पूर्ण जीवनशैली है, जिस में गहराई के साथ–साथ सादगी है, कुर्आन इस्लाम का नियम एवं सिद्धांत है जो हृदय और ग्रंथों में सुरक्षित् है, जो किसी नबी और रसूल का अस्वीकार नहीं करता बल्कि वह इस बात को स्पष्ट करता है कि सभी अवतार (नबी) एक ही संदेश के साथ भेजे गए और वह संदेश यह था कि सिर्फ अल्लाह वहदहु ला शरीक लह (जिसका कोई साझेदार नहीं) की ईबादत (पूजा) की जाए ।

कौन–कौन से भोजन हलाल (भक्ष्य) हैं ?

वह भोजन हलाल (भक्ष्य) है जिनका खाना अल्लाह (ईश्वर) ने मुसलमानों के लिए जायज़ (उचित) बताया है और अधिकतर वस्तुएँ खाने–पीने की हलाल (भक्ष्य) हैं, किन्तु दो बुनियादी वस्तुओं के अतिरिक्त, और वह दोनों वस्तुएँ सूअर और शराब हैं ।

इसी तरह से पशुओं, मुर्गियों को मनुष्यता के साथ और उचित ढ़ंग से ज़बह करना भी आवश्यक है जिस में उन जानवरों को ज़बह करने से पहले "बिस्मिल्लाह" कहना और ऐसे तरीके से ज़बह करना जिस में कम से कम कष्ट हो ।

कौन मनुष्य मुसलमान हो सकता है ?

और अल्लाह ने सभी मनुष्यों के लिए इस्लाम का दरवाज़ा खोल दिया है । इस बात से अंजान बन कर कि वह पहले क्या थे? और अभी उनकी क्या हालत है? तो इस तरह प्रत्येक मनुष्य के लिए कलमा "अशहदो अल्लाइलाहा इल्लल्लाहु व अश्हदो अन्ना मोहम्मदन अबदुहु व रसूलुह" मुख से पढ़ कर किसी भी समय इस्लाम में प्रवेश हो सकते हैं, जिसका अर्थ यह है कि :

" मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई वास्तविक ईश्वर नहीं और मैं इस बात की भी गवाही देता हूं कि मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के रसूल (संदेष्टा) हैं "।

आप के मुसलमान होने का अर्थ यह है कि आप अपने पैदा करने वाले ईश्वर की एकेश्वरवाद और महानता को स्वीकार करें । और उनकी प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए अच्छे काम करें और उसके आदेश का पालन करें और उस की मना की हुई बातों से बचें । इसी तरह से आप लोक एवं परलोक में सफल हो सकते हैं ।

और मनुष्य के केवल मुसलमान हो जाने से ही वह एक उद्देश्य के साथ जीवन व्यतित करने लगता है और इसी तरह से उस के लिए हमेशा की जन्नत में स्थान निश्चित कर दी जाती है ।

HOTLINE
+971 56 204 2045
islamicicdxb
islamicic.com @ info@islamicic.com +971 4 355 5223
DOWNLOAD HINDI FLYERS
www.iicdxb.com/hindi

CONTENTS

इस्लाम का परिचय
मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का परिचय ।
ईश्वर (माबूद) का अर्थ इस्लाम में
क़ुर्आन
जीवन का उद्देश्य क्या है?
इस्लाम के बारे में गलतफहमियाँ
इस्लाम में महिलाओं के अधिकार
इस्लाम के पाँच स्तंभ हैं।
इस्लाम धर्म क्या है ?
क़ुर्आन के वैज्ञानिक चमत्कार
इस्लाम में मौत और उसके बाद का जीवन

क़ुर्आन के वैज्ञानिक चमत्कार

HINDI | (10/11) العلوم في الإسلام | FREE COPY

“हम शीघ्र ही दिखा देंगे उन को अपनी निशानियाँ संसार के किनारों में तथा स्वयं उनके भीतर। यहाँ तक कि खुल जाएगी उन के लिए यह बात के यही सच है।”

क़ुर्आन 41:53

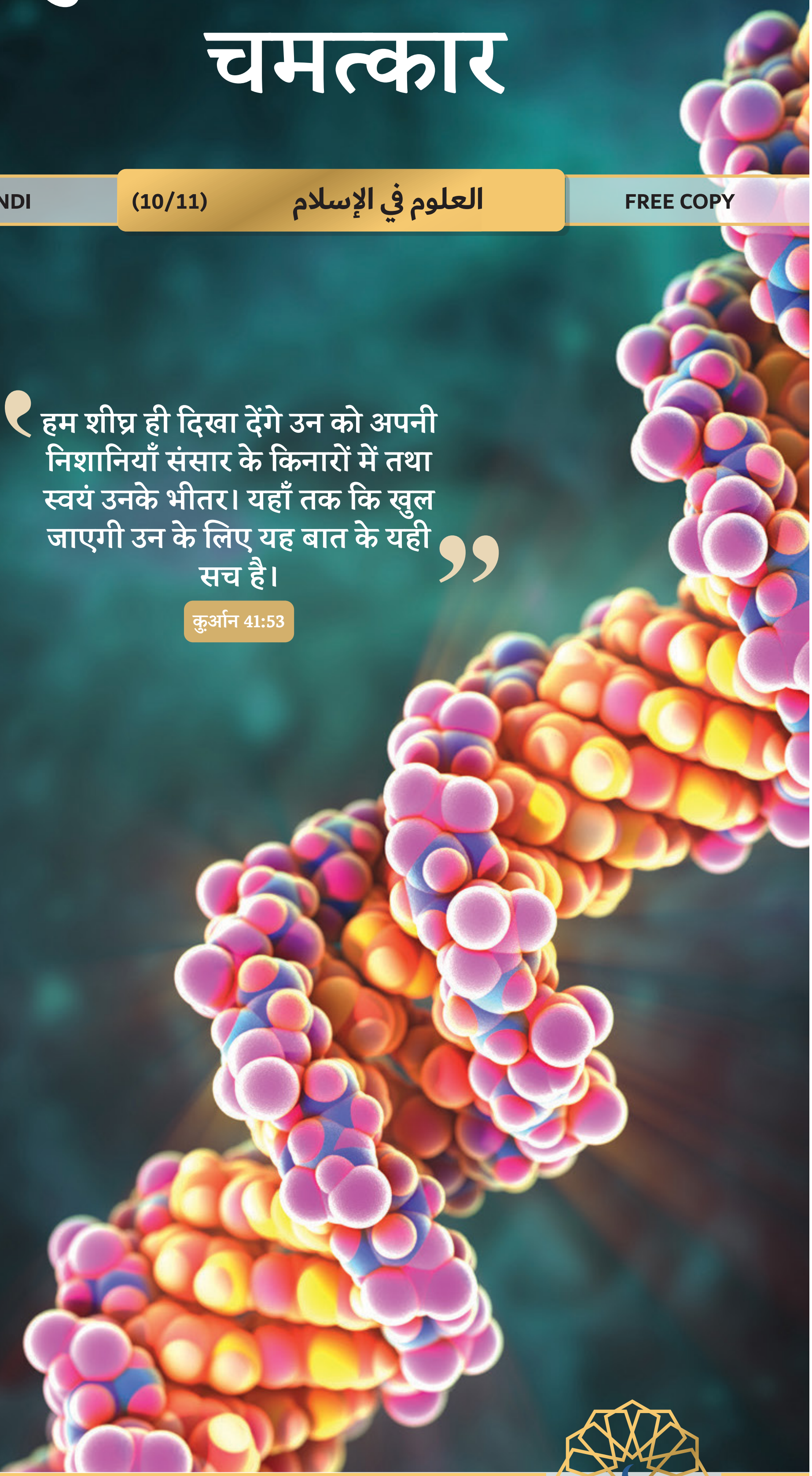

جمعية دار البر
Dar Al Ber Society
www.daralber.ae

الإمارات
THE EMIRATES

Your Path To Peace..

مركز المعلومات الإسلامي
Islamic Information Center
للتعريف بالإسلام

تصريح رقم:
(2017/139)
دائرة الشؤون الإسلامية والعمل الخيري
Islamic Affairs & Charitable Activities Department

www.islamicic.com

CONTENTS

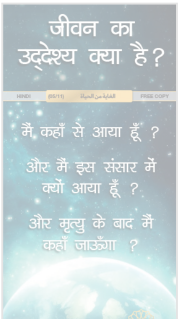

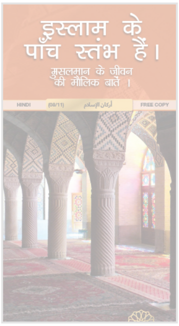

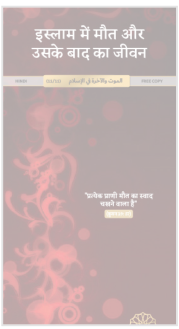

कुर्आन - इस्लाम की पुस्तक - ईश्वर द्वारा मानव जाति के लिए अवतरित अंतिम पुस्तक है, और यह पैगम्बरों के लिए अवतरण की श्रृंखला में भी अंतिम पुस्तक है।

हालाँकि कुर्आन (जो 1400 साल पहले अवतरित हुआ) मुख्य रूप से विज्ञान की किताब नहीं है, लेकिन इसमें वैज्ञानिक तथ्यों के बारे में संकेत हैं जो हाल ही में प्रौद्योगिकी और वैज्ञानिक ज्ञान की उन्नति के माध्यम से खोजे गए हैं। इस्लाम चिंतन और वैज्ञानिक अनुसंधान को प्रोत्साहित करता है क्योंकि सृष्टि की प्रकृति को समझने से लोगों को अपने निर्माता और उसकी शक्ति और ज्ञान की सीमा की और अधिक सराहना करने में सक्षम बनाता है।

कुर्आन का अवतरण उस समय हुआ जब विज्ञान आदिम अवस्था में था। उस समय कोई दूरबीन, सूक्ष्मदर्शी या आज की तकनीक के समान कुछ भी नहीं था।

लोगों का मानना था कि सूर्य पृथ्वी के चारों ओर घूमता है और आकाश सपाट पृथ्वी के कोनों पर खंभों द्वारा लटका हुआ है। इसी पृष्ठभूमि में कुरान का अवतरण हुआ, जिसमें खगोल विज्ञान से लेकर जीव विज्ञान, भूविज्ञान और यहां तक कि प्राणि विज्ञान तक के विषयों पर कई वैज्ञानिक तथ्यों का स्पष्ट संदर्भ शामिल है।

और हमने बनाया पानी से प्रत्येक जीवित चीज़ को? फिर क्या वह (इस बात पर) विश्वास नहीं करते?

कुर्आन 21:30

कुर्आन में पाए जाने वाले कई वैज्ञानिक तथ्य निम्नलिखित हैं:

1- जीवन की उत्पत्ति

पानी को सभी जीवन का मूल माना जाता है। सभी जीवित चीजें कोशिकाओं से बनी होती हैं और अब हम जानते हैं कि कोशिकाएँ ज़्यादातर पानी से बनी होती हैं।

यह बात माइक्रोस्कोप के आविष्कार के बाद ही पता चली। अरब के रेगिस्तानों में यह सोचना भी अकल्पनीय होगा कि कोई यह अनुमान लगा सकता था कि धरती पर सारा जीवन पानी से आया है।

2- मानव भ्रूण विकास

परमेश्वर मानव भ्रूण विकास के चरणों के बारे में बात करता है:

और हमने उत्पन्न किया है मनुष्य को मिट्टी के सार से। फिर हमने उसे वीर्य बनाकर रख दिया एक सुरक्षित स्थान में। फिर बदल दिया वीर्य को जमे हुए रक़्त में, फिर हम ने उसे मांस का लोथड़ा बना दिया।

कुर्आन 23:12-14)

अरबी शब्द "अलक़ा" के तीन अर्थ हैं: जोंक, लटकी हुई वस्तु और रक्त का थक्का। "मुदग़ा" का अर्थ है चबाया हुआ पदार्थ। भ्रूणविज्ञान के वैज्ञानिकों ने पाया है कि भ्रूण के निर्माण का वर्णन करने में इन शब्दों का प्रयोग सटीक है और विकास प्रक्रिया की हमारी वर्तमान वैज्ञानिक समझ के अनुरूप है।

बीसवीं शताब्दी तक मानव भ्रूण के चरण निर्धारण और वर्गीकरण के बारे में बहुत कम जानकारी थी, जिसका अर्थ है कि कुर्आन में मानव भ्रूण का वर्णन सातवीं शताब्दी के वैज्ञानिक ज्ञान पर आधारित नहीं हो सकता।

CONTENTS

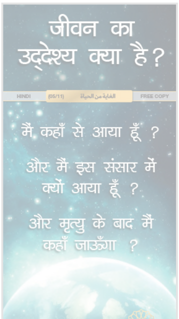

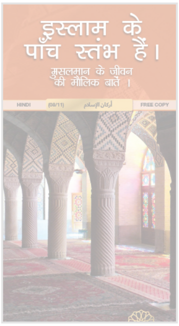

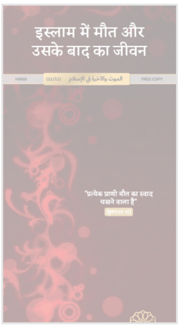

3- ब्रह्मांड का विस्तार

ऐसे समय में जब खगोल विज्ञान अभी भी प्रारंभिक अवस्था में था, क़ुर्आन की निम्नलिखित आयत अवतरित हुई:

तथा आकाश को हमने बनाया है हाथों से और हम निश्चय विस्तार करने वाले हैं।

क़ुर्आन 51:47

पिछले श्लोक में एक अभिप्रेत अर्थ यह है कि ईश्वर ब्रह्माण्ड (अर्थात आकाश) का विस्तार करता है। अन्य अर्थ यह है कि ईश्वर ब्रह्माण्ड का संरक्षण करता है, तथा उस पर उसका अधिकार है, और यह भी सत्य है।

यह तथ्य कि ब्रह्मांड फैल रहा है (जैसे ग्रह एक दूसरे से दूर जा रहे हैं) पिछली सदी में खोजा गया था। भौतिक विज्ञानी स्टीफन हॉकिंग ने अपनी पुस्तक 'ए ब्रीफ हिस्ट्री ऑफ टाइम' में लिखा है, यह खोज कि ब्रह्मांड फैल रहा है, बीसवीं सदी की महान बौद्धिक क्रांतियों में से एक थी।"

क़ुर्आन में दूरबीन के आविष्कार से भी पहले ब्रह्मांड के विस्तार का संकेत दिया गया है!

4- लोहा नीचे भेजा गया अलकापिंडों

लोहा पृथ्वी पर प्राकृतिक रूप से नहीं पाया जाता है, क्योंकि यह बाहरी अंतरिक्ष से इस ग्रह पर आया है। वैज्ञानिकों ने पाया है कि अरबों साल पहले, पृथ्वी पर उल्कापिंडों का हमला हुआ था, जो दूर के तारों से लोहा लेकर आए थे, जो विस्फोट हो गए थे।

परमेश्वर ने "भेजा" शब्द का प्रयोग किया है।

इस बात पर वैज्ञानिक मत प्रबल है कि लोहा अंतरिक्ष से उल्कापिंडों के माध्यम से पृथ्वी पर भेजा गया था, जिसके बारे में 7वीं शताब्दी का आदिम विज्ञान नहीं जान सका था।

> **तथा हमने लोहा उतरा जिसमें बड़ा बल है तथा लोगों के लिए बहुत से लाभ।**
>
> क़ुर्आन 57:25

5- आकाश की रक्षा करो

आकाश पृथ्वी और उसके निवासियों को सूर्य की घातक किरणों के साथ-साथ अंतरिक्ष की अत्यधिक ठंड से बचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

निम्नलिखित श्लोक में परमेश्वर हमें आकाश पर विचार करने का आदेश देता है:

और हमने आकाश को सुरक्षित छत बना दिया फिर भी वह उस के प्रतिकों (निशानियों) से मुंह फेरे हुए हैं।

क़ुर्आन 21:32

क़ुर्आन में आकाश की सुरक्षा को ईश्वर की शक्ति का संकेत बताया गया है, लेकिन इसके सुरक्षात्मक गुणों की खोज बीसवीं शताब्दी में किए गए वैज्ञानिक अनुसंधान के माध्यम से ही हुई।

CONTENTS

6 - पहाड़

परमेश्वर हमारा ध्यान पहाड़ों की एक महत्वपूर्ण विशेषता की ओर आकर्षित करता है:

> **क्या हमने धरती को पालना नहीं बनाया? और पर्वतों को मेख?**
> कुर्आन 78:6-7

कुर्आन में पहाड़ों की गहरी जड़ों का सटीक वर्णन "खूंटे" शब्द का प्रयोग करके किया गया है। उदाहरण के लिए, माउंट एवरेस्ट पृथ्वी की सतह से लगभग 9 किलोमीटर ऊपर है, जबकि इसकी जड़ 125 किलोमीटर से अधिक गहरी है।

यह तथ्य कि पर्वतों की जड़ें गहरी, "पच्चरनुमा" होती हैं, 20वीं सदी के आरम्भ में प्लेट टेक्टोनिक्स सिद्धांत के विकास तक ज्ञात नहीं था। सर्वशक्तिमान ईश्वर ने कुर्आन (15:16) में यह भी संकेत दिया है कि पहाड़ पृथ्वी को स्थिर रखने में भूमिका निभाते हैं: "और उसने पृथ्वी पर दृढ़ पहाड़ बनाए हैं, ताकि वह तुम्हारे साथ न हिले," जो कि कुछ ऐसा है जिसे केवल विद्वानों द्वारा ही समझा गया है।

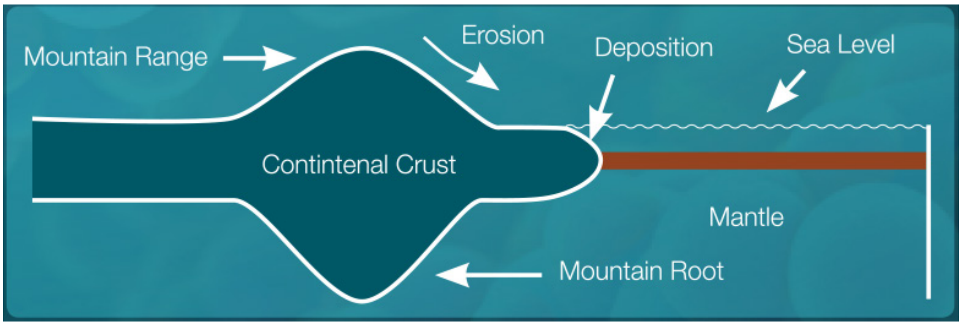

7- सूर्य की कक्षा

कुर्आन बताता है

> **तथा वही है जिसने उत्पत्ति की है रात्रि तथा दिवस की और सूर्य तथा चाँद की, प्रत्येक एक मण्डल में तैर रहे हैं।**
> (कुर्आन 21:33)

1512 में, खगोलशास्त्री निकोलस कोपरनिकस ने यह सिद्धांत प्रस्तुत किया था कि सूर्य सौरमंडल के केंद्र में स्थिर है और ग्रह उसके चारों ओर घूमते हैं। यह धारणा खगोलविदों के बीच 20वीं शताब्दी तक प्रचलित रही। अब यह पूरी तरह से स्थापित हो चुका है कि सूर्य स्थिर नहीं है, बल्कि हमारी आकाशगंगा के केंद्र के चारों ओर एक कक्षा में घूमता है।

8- समुद्र में आंतरिक तरंगें

एक समय ऐसा माना जाता था कि लहरें केवल समुद्र की सतह पर ही उत्पन्न होती हैं। हालाँकि, समुद्र विज्ञानियों ने पता लगाया है कि सतह के नीचे आंतरिक तरंगें भी उत्पन्न होती हैं जो मानव आँखों से दिखाई नहीं देतीं और जिन्हें केवल विशेष उपकरणों से ही देखा जा सकता है।

कुरान बताता है:

CONTENTS

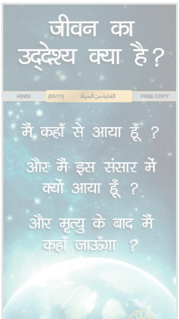

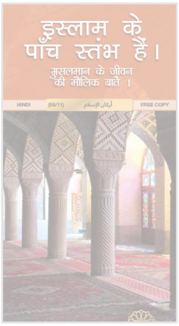

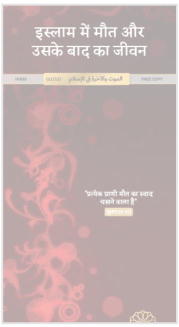

जो किसी गहरे सागर में हो और जिस पर तरंग छाई हो जिस के ऊपर तरंग उस के ऊपर बादल हो अंधकार पर अंधकार हो।

कुर्आन 24:40

यह वर्णन आश्चर्यजनक है, क्योंकि 1400 वर्ष पहले महासागरों की गहराई में आंतरिक तरंगों की खोज करने के लिए कोई विशेष उपकरण उपलब्ध नहीं था।

9 - झूठ बोलना और हरकत करना

पैगम्बर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के समय में एक क्रूर अत्याचारी कबीला नेता रहता था। ईश्वर ने उसे चेतावनी देने के लिए एक आयत उतारी:

> **निश्चय यदि वह नहीं रुकता तो हम उसे माथे के बाल घसीटेंगे झूठे और पापी माथे के बल।**
>
> कुर्आन 96:15-16

परमेश्वर इस व्यक्ति को झूठा नहीं कहता। बल्कि, वह उसके माथे (मस्तिष्क का अगला भाग) को "झूठ बोलने वाला" और "पापी" बताता है, और उसे ऐसा करने से मना करता है। कई अध्ययनों से पता चला है कि हमारे मस्तिष्क का अगला भाग (ललाट लोब) झूठ बोलने और स्वैच्छिक गति, और इस प्रकार पाप, दोनों के लिए ज़िम्मेदार है। इन कार्यों की खोज 20वीं शताब्दी में विकसित चिकित्सा इमेजिंग उपकरणों से हुई थी।

10- दो समुद्र जो कभी नहीं मिलते

समुद्रों के विषय में हमारा सृष्टिकर्ता कहता है:

> **उस ने दो सागर बहा दिए जिन का संगम होता है। उन दोनों के बीच एक आड़ है। वह एक- दूसरे से मिल नहीं सकते।**
>
> कुर्आन 55:19-20

सतही तनाव नामक एक भौतिक बल पड़ोसी समुद्रों के पानी को आपस में मिलने से रोकता है, क्योंकि इन पानी के घनत्व में अंतर होता है। ऐसा लगता है जैसे उनके बीच एक पतली दीवार है। समुद्र विज्ञानियों ने हाल ही में इसकी खोज की है।

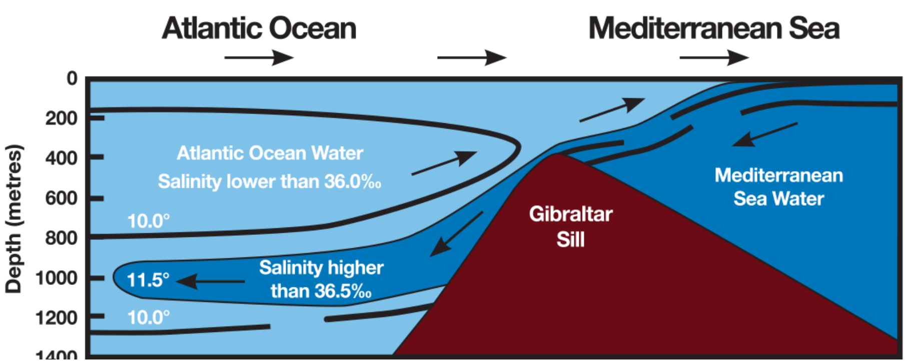

CONTENTS

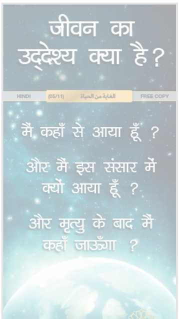

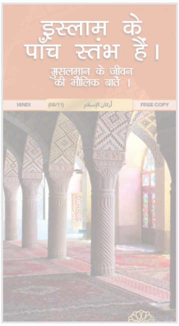

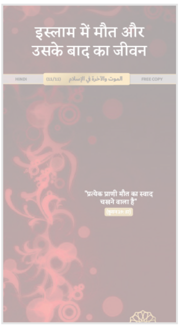

क्या मुहम्मद क़ुर्आन के रचयिता नहीं हो सकते?

पैगम्बर मुहम्मद (उन पर शांति हो) को पूरे इतिहास में अनपढ़ के रूप में जाना जाता है। वह न तो पढ़ सकते थे, न ही लिख सकते थे, और न ही किसी ऐसे क्षेत्र में शिक्षित थे जो क़ुर्आन की वैज्ञानिक सटीकता को समझा सके।

कुछ लोग दावा कर सकते हैं कि इसे उस समय के विद्वानों या वैज्ञानिकों की नकल करके बनाया गया है। अगर इसे नकल करके बनाया गया होता, तो हम उस समय की सभी गलत वैज्ञानिक मान्यताओं की भी नकल होते देख सकते थे। दरअसल, हम पाते हैं कि क़ुर्आन में कोई भी त्रुटि नहीं है, चाहे वह वैज्ञानिक हो या अन्य।

कुछ लोग यह भी दावा कर सकते हैं कि नए वैज्ञानिक तथ्यों की खोज के साथ कुरान में बदलाव आया है। ऐसा नहीं हो सकता, क्योंकि यह तथ्य कि कुरान अपनी मूल भाषा में सुरक्षित है, एक ऐतिहासिक रूप से प्रलेखित तथ्य है, और अपने आप में एक चमत्कार है।

क्या यह महज संयोग है?

जबकि इस पुस्तिका में केवल संभावित वैज्ञानिक चमत्कारों पर ध्यान केंद्रित किया गया है, क़ुर्आन में कई और तरह के स्थापित चमत्कारों का उल्लेख किया गया है: ऐतिहासिक चमत्कार; ऐसी भविष्यवाणियाँ जो सच हो चुकी हैं; ऐसी भाषाई और साहित्यिक शैलियाँ जिनकी बराबरी नहीं की जा सकती; लोगों पर इसके प्रभाव का तो जिक्र ही नहीं किया जा सकता। ये सभी चमत्कार संयोग के कारण नहीं हो सकते। वे स्पष्ट रूप से संकेत देते हैं कि कुरान ईश्वर की ओर से है, जो विज्ञान के इन सभी नियमों का निर्माता है। वह एक ही ईश्वर है जिसने सभी पैगम्बरों को एक ही संदेश के साथ भेजा - केवल एक ईश्वर की पूजा करना और उसके रसूल की शिक्षाओं का पालन करना।

कुरान मार्गदर्शन की एक पुस्तक है, जो दिखाती है कि ईश्वर ने मानव को बिना किसी उद्देश्य के नहीं बनाया है और हमारे जीवन का एक महान और सार्थक उद्देश्य है - ईश्वर की पूर्णता, महानता और विशिष्टता को पहचानना और उसकी आज्ञा का पालन करना।

यह प्रत्येक व्यक्ति पर निर्भर है कि वह अपने मन और तार्किक क्षमताओं का उपयोग करके ईश्वर की आयतों पर चिंतन और पहचान करे।

कुरान सबसे महत्वपूर्ण आयत है। सफल होने के लिए कुरान की सुंदरता और सच्चाई को पढ़ें और खोजें।

> **हम शीघ्र ही दिखा देंगे उन को अपनी निशानियां संसार के किनारों में तथा स्वयं उनके भीतर। यहाँ तक कि खुल जाएगी उनके लिए यह बात कि यही सच्च है।**
>
> क़ुर्आन 41:53

CONTENTS

इस्लाम का परिचय
मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का परिचय ।
ईश्वर (माबूद) का अर्थ इस्लाम में
कुर्आन
जीवन का उद्देश्य क्या है?
इस्लाम के बारे में गलतफहमियाँ
इस्लाम में महिलाओं के अधिकार
इस्लाम के पाँच स्तंभ हैं।
इस्लाम धर्म क्या है ?
कुर्आन के वैज्ञानिक चमत्कार
इस्लाम में मौत और उसके बाद का जीवन

इस्लाम में मौत और उसके बाद का जीवन

HINDI (11/11) الموت والآخرة في الإسلام FREE COPY

"प्रत्येक प्राणी मौत का स्वाद चखने वाला है"

(कुरान 29: 57)

جمعية دار البر
Dar Al Ber Society
www.daralber.ae

الإمارات
THE EMIRATES

Your Path To Peace..

مركز المعلومات الإسلامي
Islamic Information Center
للتعريف بالإسلام

تصريح رقم:
(2017/139)
دائرة الشؤون الإسلامية والعمل الخيري
Islamic Affairs & Charitable Activities Department

www.islamicic.com

CONTENTS

मौत करीब है

> तुम जहां भी रहो तुम्हें मौत आ पकड़ेगी,भले ही तुम मजबूत और ऊँचे बने किलों में हो!
>
> (कुरआन 4:78)

मृत्यु एक ऐसी सच्चाई है जिससे कोई बच नहीं सकता। यह हर दिन, हर घंटे, हर मिनट और करीब आती जा रही है। सीआईए की द वर्ल्ड फैक्टबुक 2007 के अनुसार, हर सेकंड लगभग दो लोग मरते हैं। यानी हर साल 57.9 मिलियन लोग! हर प्राणी इस अपरिहार्य नियति तक पहुँचेगा, चाहे उसकी उम्र, स्वास्थ्य, पृष्ठभूमि, सामाजिक स्थिति या धर्मनिष्ठा कुछ भी हो।

तो अतीत के राजा, अरबपति और शक्तिशाली लोग कहाँ हैं? सौंदर्य, प्रसिद्धि और बौद्धिक अभिजात वर्ग के लोग कहाँ हैं?

मौत की हकीकत

मृत्यु कोई दुखद आपदा नहीं है, बल्कि इस सांसारिक जीवन से परलोक में संक्रमण का एक मात्र पड़ाव है। यह हमें जीवन के उद्देश्य और मृत्यु के बाद हमारे साथ क्या होगा, इस पर चिंतन और मनन करने के लिए प्रेरित करती है।

ईश्वर हमें कुरान में बताता है कि उसने हमें केवल अपनी उपासना करने के लिए बनाया है, और इस जीवन को यह निर्धारित करने के लिए एक परीक्षा बनाया है कि कौन वास्तव में इस महान उद्देश्य को पूरा करेगा:

नहीं उत्पन्न किया है मैं ने जिन्न तथा मनुष्य को परन्तु ताकि मेरी ही इबादत करें" ।

(कुरआन 51: 56)

जैसा कि परमेश्वर ने हमें मृत्यु और जीवन की सृष्टि के पीछे का उद्देश्य भी बताया है:

जिस ने उत्पन्न किया है मृत्यु तथा जीवन को, ताकि तुम्हारी परीक्षा ले के तुम में किस का कर्म अधिक अच्छा है।

(कुरआन 67: 2)

मनुष्य अंतिम संस्कार के लिए पहले से भुगतान करके या पहले से ताबूत चुनकर मृत्यु की तैयारी नहीं करता है, बल्कि जीवन के वास्तविक उद्देश्य को प्राप्त करके, जो कि केवल ईश्वर की इबादत करना, उसकी आज्ञाओं के अनुसार जीना और अच्छे कर्म करना है। इस्लाम में इबादत की अवधारणा में जीवन के हर पहलू को शामिल किया गया है, और यह केवल इबादत तक ही सीमित नहीं है, बल्कि, ईश्वर को प्रसन्न करने वाले हर कार्य को एक प्रकार की इबादत माना जाता है, और इस दुनिया में या उसके बाद उसका इनाम होता है।

CONTENTS

मृत्यु का क्षण

> **और देखना चाहिए प्रत्येक को कि उसने क्या भेजा है कल के लिए ।**
> (कुरआन 59: 18)

हम हर दिन मौत के कई उदाहरण देखते हैं, और हम शांतिपूर्ण मौत को वह मानते हैं जिसमें कोई दर्द या हिंसा नहीं होती है, लेकिन जरूरी नहीं कि हमेशा ऐसा ही हो।

जब कोई व्यक्ति मरता है, तो उसकी आत्मा उसके शरीर को छोड़ देती है, और शरीर का बाहरी स्वरूप आत्मा की स्थिति को प्रतिबिंबित नहीं कर सकता है।

आत्मा की शांति या चिंता किसी व्यक्ति ने अपने जीवन में जो हासिल किया है उसका प्रत्यक्ष परिणाम होगा, न कि मृत्यु का प्रत्यक्ष कारण।

आइए दो लोगों का उदाहरण लें जिनके पास किसी ऐसे गंतव्य के लिए एकतरफ़ा टिकट है जहाँ वे पहले कभी नहीं गए। पहला व्यक्ति उस गंतव्य की भाषा, संस्कृति और रीति-रिवाजों को सीखने में समय लगाता है। उसे सही मुद्रा और टीके मिलते हैं, और जब यात्रा का समय आता है, तो वह बिना किसी आश्चर्य के पहुँच जाता है। वह सुरक्षित और संतुष्ट है क्योंकि उसने अच्छी तैयारी की है।

इसके विपरीत, दूसरा व्यक्ति तैयारियों से बेपरवाह है और यात्रा का समय आने तक केवल वर्तमान क्षण में जीता है। वह अनजान मंज़िल पर भयभीत और भ्रमित होकर पहुँचता है। उसकी तैयारी की कमी उसे एक भयानक भाग्य की ओर ले जाती है, क्योंकि वह जो कुछ भी साथ लाया था, वह बेकार हो गया।

ईश्वर ने कुरान में ऐसे निःशंकित व्यक्ति का वर्णन किया है:

यहां तक के जब उन में किसी की मौत आने लगे तो कहता है: मेरे पालनहार! मुझे (संसार में) वापस कर दे।

संभावित: मैं अच्छा कर्म करूँगा, उस (संसार में)जिसे छोड़ आया हूं कदापि ऐसा नहीं होगा। वह केवल एक कथन है जिसे वह कह रहा है।

(कुरआन 23: 99-100)

जैसा कि हम कुरआन में देखते हैं, जब नर्क के लोगों से पूछा जाएगा कि उन्हों ने इसमें प्रवेश क्यों किया, तो वे कहैंगे:

वह कहेंगे: हम नहीं थे नमाज़ियों में से और नहीं भोजन कराते थे निर्धन को तथा कुरेद करते थे कुरेद करने वालों के साथ और हम झूठलाया करते थे प्रतिफल के दिन प्रलय को यहाँ तक की हमारी मौत आ गई ।

(कुरआन 74: 43-47)

हम सभी के पास मृत्यु के साथ एक नियुक्ति है, और हम सभी इस अप्रचित गंतव्य की यात्रा करेंगे। तो अपने आप से पूछें: क्या आप इसके लिए तैयार हैं?

CONTENTS

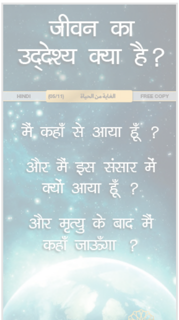

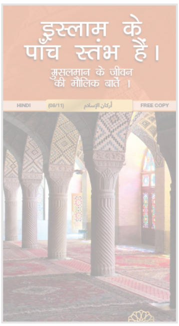

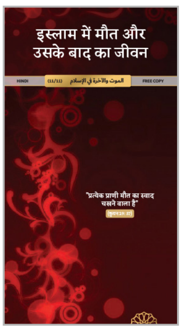

जीवन का उद्देश्य

> **क्या तुमने समझ रखा है कि हम ने तुम्हें व्यर्थ पैदा किया है और तुम हमारी और फिर नहीं लाये जाओगे?**
>
> (क़ुरआन 23: 115)

जीवन एक परीक्षा है जिसका अंत मृत्यु में होता है, लेकिन यह किसी के अस्तित्व का अंत नहीं है। मृत्यु के आते ही, अच्छे कर्म करने का अवसर समाप्त हो जाता है। पश्चाताप करने में बहुत देर हो चुकी होगी और हमारा भाग्य पूरी तरह से हमारे वर्तमान जीवन में हमारे विश्वासों और कर्मों से तय होगा। मनुष्य का जीवन दो भागों में बँटा है: इस संसार में एक संक्षिप्त प्रवास, और अगले संसार में एक अनंत जीवन। कोई भी समझदार व्यक्ति यह निष्कर्ष निकालेगा कि शाश्वत आनंद, पृथ्वी पर क्षणिक सुखों से कहीं अधिक लाभदायक है।

अल्लाह ने मानव जाति का निर्माण किया और हमें चुनाव की स्वतंत्रता और सही और गलत को समझने की बुद्धि देकर हमारे कार्यों के लिए जिम्मेदार बनाया। यदि कोई पुनर्जन्म नहीं होता जिसमें अच्छे को पुरस्कृत किया जाता और बुरे को दंडित किया जाता, तो यह अल्लाह के पूर्ण न्याय का खंडन होता। इसलिए यह न्याय की पूर्ण मांग है कि न्याय का एक दिन हो जिस दिन हर आत्मा का हिसाब किया जाए।

क्या हम आज्ञाकारियों को पापियों के समान कर देंगे? तुम्हें क्या हो गया है? तुम कैसा निर्णय कर रहे हो?

(क़ुरआन 68: 35-36)

क़यामत का दिन

इस जीवन में हर किसी के कर्मों को सावधानीपूर्वक दर्ज और संरक्षित किया जाता है, जैसा कि अल्लाह कहता है:

"और कर्म लेख (सामने) रख दिए जाएंगे, तो आप अपराधियों को देखेंगे की उस से डर रहे हैं जो कुछ उस में (अंकित) है, तथा कहेंगे कि है हमारा विनाश! यह कैसी पुस्तक है जिस ने किसी छोटे और बड़े कर्म को नहीं छोड़ा है, परंतु उसे अंकित कर रखा है? और जो कर्म उन्हों ने किए हैं उन्हें वह सामने पाएंगे, और आपका पालनहार किसी पर अत्याचार नहीं करेगा।

(क़ुरआन 18: 49)

> **आप कह दें कि जिस मौत से तुम भाग रहे हो वह अवश्य तुमसे मिल कर रहेगी फिर तुम अवश्य फेर दिए जाओगे प्रोक्ष (छुपे) तथा प्रत्येक (खुले) के ज्ञानी की ओर फिर वह तुमको सूचित कर देगा उसे जो तुम करते रहे?**
>
> (क़ुरआन 62: 8)

CONTENTS

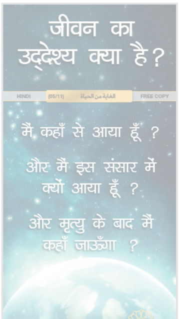

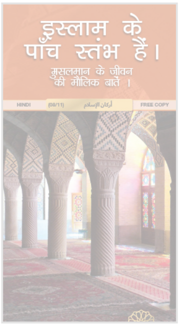

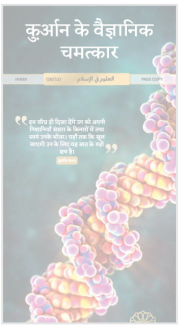

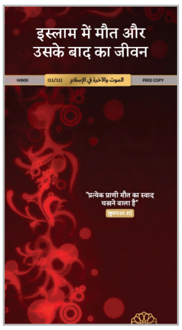

हम इस अभिलेख की सटीकता पर आश्चर्यचकित होंगे, जिसमें हमारे सभी कर्म दर्ज हैं, और यह हमें उन कर्मों की याद दिलाएगा जिन्हें हम बहुत पहले भूल चुके थे। जैसा कि सर्वशक्तिमान ईश्वर कहते हैं:

"अल्लाह ने उसे गिन रखा है और वह भूल गए हैं उसे"

कुरआन 56: 8)

इस सत्य के गहन चिंतन से हमें कोई भी पाप करने में शर्म आनी चाहिए, अगर हम जानते हैं कि इसे पुनरुत्थान के दिन अल्लाह के सामने दर्ज और प्रस्तुत किया जाएगा।

जो लोग मृतकों को पुनर्जीवित करने और उन्हें जवाबदेह ठहराने की परमेश्वर की क्षमता पर संदेह करते हैं, उनके लिए सर्वशक्तिमान परमेश्वर अविश्वासियों का प्रश्न पूछते हैं:

"कौन जीवित करेगा इन अस्थियों को जब कि वह जीर्ण हो चुकी होंगी" ? (हे मुहम्मद कहो, 'वह उन्हें जीवन देगा) आप कह दें: वही जिस ने पैदा किया है प्रथम बार। और वह प्रत्येक उत्पत्ति को भली भाँति जानने वाला है।

(कुरआन 36: 78-79)

स्वर्ग और नरक

जो लोग अल्लाह को एकमात्र इबादत का योग्य भगवान मानते हैं और अच्छे कर्म करते हैं, उन्हें जन्नत का इनाम मिलेगा।

पैगंबर मुहम्मद (उन पर शांति हो) ने बताया कि अल्लाह ने कहा:

"मैंने अपने नेक बंदों के लिए वह सब तैयार किया है जो किसी आंख ने देखा नहीं, किसी कान ने सुना नहीं, और किसी इंसान के दिल ने कभी इसके बारे में सोचा नहीं ।" इसे अल-बुखारी (4779) और मुस्लिम (2824) ने रिवायत किया है।

अल्लाह तआला ने अपनी पवित्र किताब में लिखा है: "उस दिन जन्नत वाले मौज-मस्ती कर रहे होंगे और उनकी पत्नियाँ छाया में सजे हुए पलंगों पर लेटी होंगी। उन्हें वहाँ फल मिलेंगे और जो कुछ वे चाहेंगी, मिलेगा।

(कुरआन 36: 55-57)

यह उन लोगों के बिल्कुल विपरीत है जो अल्लाह की एकता से इनकार करते हैं, जिनसे कहा जाएगा:

"यही नर्क है जिसका वचन तुम्हें दिया जा रहा था। आज उसमें प्रवेश कर जाओ उस कुफ्र के बदले जो तुम कर रहे थे"

(कुरआन 36: 63-64)

CONTENTS

और काफ़िरों को अत्यंत कठोर यातना होगी।

अल्लाह ताला कहता है: "वास्तव में नर्क घात में है जो दुराचारियों का स्थान है जिस में वह असंख्य वर्षों तक रहेंगे उस में ठंडी तथा पिए (पीने की चीज़) नहीं चखेंगे केवल गर्म पानी और पीप रक्त के यह पूरा पूरा प्रतिफल है निसंदेह वे हिसाब की आशा नहीं रखते थे तथा वे हमारी आयतों को झुठलाते थे और हमने सब विषय लिखकर सुरक्षित कर लिए हैं तो चखो, हम तुम्हारी यातना अधिक ही करते रहेंगे"

कुरान 78:21-30

निष्कर्ष

अल्लाह ताला कहता है: "इंसान! तुझे किस वस्तु ने तेरे उदार पालनहार से बहका दिया। जिस ने तेरी रचना की फिर तुझे संतुलित बनाया । जिस रूप में चाहा बना दिया । वास्तव में तुम प्रतिफल (प्रलय) के दिन को नहीं मानते। अच्छे कर्मों का प्रतिफल और बुरे कर्मों का दंड)"

(कुरान 82: 6-9)

आइए याद रखें कि हम सभी देर-सबेर मृत्यु की पुकार का उत्तर देंगे, इसलिए आइए हम इस जीवन में अल्लाह को प्रसन्न करने और उसके बाद के जीवन के लिए तैयारी करने को अपना लक्ष्य बनाएं। दुनिया सिर्फ एक अस्थायी मंच है, और हमें इसे समझदारी से पकड़ना चाहिए और खुद को बेहतर बनाने और दूसरों की मदद करने का प्रयास करना चाहिए, ताकि हम दुनिया और आख़िरत में कामयाब लोगों में से बन सकें।

मृत्यु एक अपरिहार्य वास्तविकता है, और जीवन में हमारा लक्ष्य केवल अल्लाह की इबादत करना, अच्छे कर्म करना और निषिद्ध चीजों से बचना है। हमारा भाग्य हमारे कार्यों के आधार पर निर्धारित होता है। या तो हम खुद को स्वर्ग के आनंद की गारंटी देने के लिए इस अवसर का लाभ उठाते हैं, या हम इसकी उपेक्षा करते हैं और खुद को नर्क में पीड़ा देने के लिए दोषी ठहराते हैं।

> **अल्लाह ताला कहता है: "नि:संदेह सदाचारी सुखों में होंगे और दुराचारी नर्क में"**
>
> (कुरान 82:13-14)

مركز المعلومات الإسلامي
Islamic Information Center
للتعريف بالإسلام

Part of the

ISLAMIC e-LIBRARY

Learn more about Islam with our informative and educational materials, translated to over 50+ languages

Quran
Flyers
Books

iicdxb.com/flyers

@islamicicdxb